संस्कृत-प्रभा

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

उत्तर–प्रदेश–संस्कृत–संस्थानम्
लखनऊ

संस्कृत-प्रभा

लेखक

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

उत्तरप्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्
लखनऊ

प्रकाशक :

सुनीता चतुर्वेदी

आई.ए.एस.

निदेशक, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

प्राप्तिस्थानम्

विक्रय-विभाग :

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्

संस्कृत भवनम्, नया हैदराबाद, लखनऊ - 226 007

फोन : 2780251 फैक्स : 91522 - 2781352

वेबसाइट : upsanskritsansthanam.org

प्रथम संस्करण-१९९३ ई.

द्वितीय संस्करण-२०११ ई.

मूल्य : ११०.०० रूपये

मुद्रक : **शिवम् आर्ट्स,** निशातगंज, लखनऊ।

दूरभाष : 2782348, 2782172

आत्मकथ्यम्

"संस्कृतं नाम देवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः" संस्कृत भाषा केवलं भाषा एव नास्ति अपितु देव वाणी रूपेणव्याख्याप्यते। सा वाक् संस्कृतवांगमये शब्दाक्षररूपेणोल्लिखितावर्तते। सा शब्दाक्षर-स्वरूपा वागनादि-निधनब्रह्मस्वरूपाप्यस्ति।

वाक्यपदीयंकारेणवाक्यपदीयग्रन्थेलिखितं यत-

अनादिनिधिनं ब्रह्म शब्दतत्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रियाजगतो यतः।।

तच्छब्दतत्वमक्षरंअनादिनिधनं ब्रह्मस्वरूपमस्ति। तेनैवार्थभावेन जगतः प्रक्रिया विवर्तते। अर्थात् शब्दतत्वाक्षरप्रयोगद्वारैव संसारस्य सर्वाः व्यावहारिकाः क्रियाः प्रचलन्ति। यथाकश्चन प्राणी कमपि शब्दं कथयति तदर्थबोधद्वारैव कार्यं भवति। यदि गुरूः छात्रं सम्बोध्य कथयति यत् त्वं पठ तच्छ्रवणेन छात्र एवं बुध्वा पठति।

वर्तमानकाले संस्कृतस्यबोधः सार्वजनीनः कथंस्यादिति विषये उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थानं सरलतम् माध्यमेन सर्वजनबोधाय संस्कृतभाषायाः शिविरं चालयति। तच्छिविरसंचालनाय सरलतमसंस्कृत ग्रन्थनिमार्णाय च संस्थानं प्रयतते। विद्वद्भिः सरलसंस्कृतग्रन्थाः लिख्यन्ते। येषां प्रकाशनमार्थिक साहाय्येन क्रियते एवं अनेके ग्रन्था अनेकैः विद्वद्भिः लिखिताः सन्ति ते ग्रन्थाः सरलतमविधिना पठितुं पाठयितुम् च सहयोगिनः वर्तन्ते।

सरलतम् व्यावहारिकसम्भाषणे संस्कृतस्यशिविरेषु जिज्ञासवः सम्मिल्य मासत्रयावधौ अध्ययनं कृत्वासंस्कृतसम्भाषणे दक्षाः भवन्ति। संस्कृतभाषायाः सम्पोषणाय प्रचाराय प्रसाराय च भारतसर्वकारः प्रदेश सर्वकारश्च सततमार्थिक-मनुदानं प्रददाति। संस्कृतं प्रति कस्यापि कोऽपि दुरावः नास्ति। समस्त भारतीयानामियंधारणा अस्ति यत् भारतीयसंस्कृतेः संरक्षणं संस्कृत विना नैवभवितुं शक्नोति।

संस्कृतभाषा भारतीयसंस्कृतेः आत्मा एवं प्राणस्वरूपा अस्ति। अतः भारतीय संस्कृतेः दर्शनस्य, आध्यात्मविज्ञानस्य, सभयतायाः, प्राचीनविज्ञानस्य, गणित ज्योतिषोः, गीतायाः रामायणस्य, महाभारतस्य पुराणादिकानाम ज्ञानाय संस्कृतभाषायाः ज्ञानमावश्यकमस्ति।

भारतवर्षस्य प्रायशः सर्वभाषासु पंचाशतअशीति प्रतिशत शब्दाः संस्कृतभाषायाः एव गृहीताः सन्ति। अतः संस्कृतभाषायाः ज्ञानेन भारतस्य सर्वभाषाणां शिक्षणमत्यन्तम् सरलं भवति। अतः संस्कृत भाषायाः सामान्यज्ञानं प्रत्येक भारतीय नागरिकार्य आवश्यकमस्ति। अनेन भावेन लेखकः डॉ० कपिलदेवद्विवेदी महोदयाः "संस्कृतप्रभा" इत्याख्य ग्रन्थं विलिख्य संस्कृतभाषां प्रति स्वयोगदानं कृतवान। अतः द्विवेदिमहोदयाः अत्यन्तं वन्दनीयाः सन्ति। ते साधुवादार्हा सन्ति। तान्प्रति अहं भूयो भूयः धन्यवाद प्रददामि।

रेखा वाजपेई

अध्यक्षः

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

प्रकाशकीय

संस्कृत भाषा ने विश्व को विशाल मानवीय मूल्यों पर आधारित संस्कृति दी है। संस्कृत भाषा आधारित साहित्य हमारे देश की विशाल सम्पदा है। इसी भाषा के द्वारा हम अपने इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, प्राचीन परम्पराओं और संस्कारों से परिचित होते हैं। इसी सम्पदा से नई पीढ़ी को परिचित कराने तथा संरक्षण के उद्देश्य से उ.प्र. संस्कृत संस्थान द्वारा अनेक योजनाओं को सम्पादित किया जाता है। संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए छात्रों में संस्कृत के प्रति पठन-पाठन में रुचि जाग्रत करने के लिए इस ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

संस्कृत भाषा के विकास में छात्रों तथा युवा वर्ग का विशेष योगदान आवश्यक है क्योंकि विश्व की किसी भी भाषा के विकास में युवा वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। युवा तथा छात्र वर्ग को संस्कृत भाषा सीखने में यह ग्रन्थ अत्यन्त सहायक होगा। संस्कृत भाषा के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को नई दिशा प्रदान की जा सकती है। संस्कृत भाषा की गरिमा इस भाषा को अधिक से अधिक पढ़ने वालों से होगी इसलिए यह प्रयास है कि संस्कृत अधिक से अधिक लोगों के पास पहुंचे।

इस ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के लिए संस्थान की अध्यक्ष मा. डॉ. रेखा वाजपेई की प्रेरणा के लिए संस्थान आभारी है। ग्रन्थ के लेखक डॉ. कपिल देव द्विवेदी को अत्यन्त धन्यवाद देती हूँ। ग्रन्थ के प्रकाशन में सहयोग के लिए डॉ. चन्द्रकला शाक्य, सर्वेक्षक, संस्कृत संस्थान के सभी कर्मचारियों तथा सुन्दर प्रकाशन के लिए शिवम् आर्ट्स को धन्यवाद देती हूँ।

अक्षय तृतीया वि.स. २०६८ — सुनीता चतुर्वेदी

६ मई २०११ — आई.ए.एस.

निदेशक

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्, लखनऊ

प्राक्कथन

उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी के विशेष अनुरोध पर यह पुस्तक लिखी गई है। यह पुस्तक प्रारम्भिक संस्कृत-छात्रों की आवश्यकता की पूर्ति को ध्यान में रखकर प्रस्तुत की गई है। पुस्तक-लेखन का उद्देश्य है-(१) कोमल-बुद्धि संस्कृतप्रेमी छात्रों को संस्कृत भाषा का ज्ञान कराना। (२) व्याकरण के झंझट में न डालकर सरल रीति से संस्कृत सिखाना। (३) संस्कृतप्रेमी व्यक्ति २ या ४ मास परिश्रम करके शुद्ध संस्कृत बोलना सीख जाय। (४) दैनिक जीवन के उपयोगी वाक्यों को सरलता से बोल सके। (५) गीता, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में उसका प्रवेश हो सके। (६) संस्कृत को सरल और उपयोगी भाषा मानकर उसके अध्ययन में प्रवृत्त हो।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पुस्तक में कुछ विशेष प्रक्रिया अपनाई गई है। सारी पुस्तक को ६० अभ्यासों में बाँटा गया है। प्रत्येक पाठ में एक या दो नियम दिए गए हैं और उनका पूरा अभ्यास कराया गया है। प्रत्येक अभ्यास के प्रारम्भ में शब्दावली दी गई है। प्रयत्न किया गया है कि उन शब्दों का ही अनेक बार प्रयोग किया जाय। किसी अन्य ग्रन्थ या कोशग्रन्थ की सहायता न लेनी पड़े। शब्दकोश में भी विभिन्न वर्ग दिए गए हैं। विद्यालय, लेखन-सामग्री फल, फूल वृक्ष, यातायात, मिठाई, नमकीन, सङ्गीत, व्यापार, वाणिज्य शिल्प, शिल्पी आदि से सम्बद्ध प्रचलित शब्दों का सङ्क्षिप्त सङ्ग्रह दिया गया है, जिससे प्रत्येक क्षेत्र से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण शब्दों की जानकारी रहे।

प्रत्येक अभ्यास के नियमों को सावधानी से स्मरण करते जायें। उनका बार-बार अभ्यास कराया गया है। प्रत्येक अभ्यास में एक नए शब्द और एक नई धातु का विस्तृत अभ्यास दिया गया है।

उदाहरण-वाक्यों का सावधानी से अध्ययन अनिवार्य है। उससे मिलते-जुलते वाक्य 'संस्कृत बनाओ' के अन्तर्गत दिए गए हैं। जहाँ कठिनाई हो, वहाँ उदाहरण-वाक्यों को फिर से देखें। प्रत्येक अभ्यास में 'संस्कृत में उत्तर दो' दिया गया है। पूरी पुस्तक में लगभग ६०० प्रश्न-वाक्य हैं। इनका उत्तर देना सीख लेने से संस्कृत बोलने में हिचक दूर हो जायेगी।

प्रत्येक अभ्यास में 'रिक्त स्थानों को भरो' या 'इन वाक्यों को शुद्ध करो' दिया गया है। इससे भाषा का ज्ञान बढ़ेगा और अशुद्धियाँ दूर होंगी। साथ ही जिस विशेष शब्द या धातु का प्रयोग सिखाया गया है, उसके रूप लिखने का कार्य दिया गया है। कुछ स्थानों पर 'वाक्य बनाओ' का कार्य भी दिया गया है। नियमों से सम्बद्ध भी कुछ प्रश्न दिए गए हैं। इनके अभ्यास से व्याकरण का ज्ञान पुष्ट होगा।

उपयोगिता की दृष्टि से पुस्तक के अन्त में ६ परिशिष्ट दिए गए हैं। इनमें ४३ शब्दों के रूप, ६३ धातुओं के ५ लकारों में रूप, १ से १०० तक गिनती, १८ सन्धियों का विवरण एवं समासों का सङ्क्षिप्त विवरण है। पुस्तक के अन्त में १०० सुभाषितों का सङ्कलन दिया गया है और उनका हिन्दी अर्थ भी दिया गया है। ये सुभाषित सभी के लिए स्मरणीय हैं।

आशा है यह पुस्तक संस्कृतप्रेमी छात्रों की प्रारम्भिक आवश्यकता को पूर्ण करेगी।

रामनवमी वि० सं० २०५०
दिनाङ्क १ अप्रैल १९९३ ई०

—डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

विषय-सूची

अभ्यास	शब्द	धातु	कारक/प्रत्यय	विविध	पृष्ठ
१.	राम	प्रथमपुरुष	—	सत्य, धर्म	14
२.	फल	मध्यमपुरुष	—	विद्या	16
३.	बालिका	उत्तमपुरुष	—	सत्य	18
४.	संख्या १-५	अस्; लट्	—	,,	20
५.	संख्या ६-१०	कृ, लट्	—	परोपकार	22
६.	बालक	लट्, पर०	प्रथमा	गुण	24
७.	फल	लोट्, पर०	द्वितीया	सुभाषित	26
८.	बालिका	लङ्, पर०	द्वितीया	,,	28
९.	हरि	विधिलिङ्	तृतीया	सत्संगति	30
१०.	गुरु	लृट्	,,	—	32
११.	सर्वनाम पुं०	जि	चतुर्थी	विद्यालयवर्ग	34
१२.	,, नपुं०	स्मृ	,,	लेखनसामग्री	36
१३.	,, स्त्री०	श्रु	पञ्चमी	क्रीडासनवर्ग	38
१४.	सर्व	दिव्, नृत्	,,	वस्त्रादिवर्ग	40
१५.	इदम् पुं०	नश्, भ्रम्	षष्ठी	भोजनवर्ग	42
१६.	,, नपुं०	तुद्, इष्	,,	गृहवर्ग	44
१७.	,, स्त्री०	स्पृश्, प्रच्छ्	,,	शरीराङ्गवर्ग	46

अभ्यास	शब्द	धातु	कारक/प्रत्यय	विविध	पृष्ठ
१८.	युष्मद्	चर्, चिन्त्	सप्तमी	सम्बन्धिवर्ग	48
१९.	अस्मद्	कथ्, भक्ष्	,,	जातिवर्ग	50
२०.	एक	अस्	,,	पशुवर्ग	52
२१.	द्वि	कृ	यण्, अयादि	पक्षिवर्ग	54
२२.	त्रि	लट् आ०	गुण, वृद्धि	जलवर्ग	56
२३.	चतुर्	लोट् आ०	दीर्घ	फलवर्ग	58
२४.	पञ्चन्-सप्तन्	लङ् आ०	पूर्वरूप	पुष्पवर्ग	60
२५.	अष्टन्-दशन्	विधिलिङ् आ०	श्चुत्व	अन्नवर्ग	62
२६.	विंशति-शत	लृट् आ०	ष्टुत्व	भक्ष्यवर्ग	64
२७.	सहस्र आदि	नी	जश्त्व	आपणवर्ग	66
२८.	सखि	हृ	चर्त्व	आभूषणवर्ग	68
२९.	कर्तृ	अद्	अनुस्वार	यात्रावर्ग	70
३०.	पितृ	हन्	विसर्ग	दिन, ऋतु	7
३१.	भगवत्	इ	रुत्व	मासवर्ग	74
३२.	गच्छत्	ब्रू	उत्व	कृषिवर्ग	76
३३.	आत्मन्	दुह्	यत्व	व्यापारवर्ग	78
३४.	करिन्	स्वप्	सुब्लोप	वाणिज्यवर्ग	80
३५.	मति	रुद्	कर्मवाच्य	न्यायालयवर्ग	82
३६.	नदी	आस्	भाववाच्य	कार्यालयवर्ग	84
३७.	धेनु	शी	णिच्	यानवर्ग	86
३८.	वधू	हु	सन्	आयुधवर्ग	88
३९.	मातृ	क्री	क्त	अस्त्रवर्ग	90

अभ्यास	शब्द	धातु	कारक/प्रत्यय	विविध	पृष्ठ
४०.	वाच्	दा	क्तवतु	शिल्पिवर्ग	92
४१.	वारि	धा	शतृ	शिल्पिवर्ग	94
४२.	मधु	युध्	शानच्	शाकादिवर्ग	96
४३.	जगत्	जन्	तुमुन्	,,	98
४४.	नामन्	मृ	क्त्वा	शैलवर्ग	100
४५.	पयस्	आप्	ल्यप्	वनवर्ग	102
४६.	मनस्	शक्	तव्य, अनीय	वृक्षवर्ग	104
४७.	—	मृ	तृच्, ल्युट्	पुरवर्ग	106
४८.	—	मुच्	क्तिन्, घञ्	,,	108
४९.	—	रुध्	अव्ययीभावस०	गृहवर्ग	110
५०.	—	भुज्	तत्पुरुष ,,	धातुवर्ग	112
५१.	—	तन्	कर्मधारय ,,	अव्ययवर्ग	114
५२.	—	क्री	बहुव्रीहि ,,	विशेषण	116
५३.	—	ग्रह्	द्वन्द्व ,,	वाद्यवर्ग	118
५४.	—	ज्ञा	नञ्, अलुक्	प्रसाधनवर्ग	120
५५.	—	—	अपत्यार्थक	रत्नवर्ग	122
५६.	—	—	मत्वर्थक	रोगवर्ग	124
५७.	—	—	भावार्थक	पानादिवर्ग	126
५८.	—	—	तुलनार्थक	पात्रवर्ग	128
५९.	—	—	,,	व्यञ्जनवर्ग	130
६०.	—	—	स्त्रीप्रत्यय	मिष्टान्नवर्ग	132

परिशिष्ट

व्याकरण

पृष्ठ

(१) शब्दरूप-सङ्ग्रह 134–159

१. बालक, २. हरि, ३. सखि, ४. गुरु, ५. कर्तृ, ६. पितृ, ७. भगवत्, ८. गच्छत्, ९. आत्मन्, १०. करिन्, ११. बालिका, १२. मति, १३. नदी, १४. धेनु, १५. वधू, १६. मातृ, १७. वाच्, १८. फल, १९. वारि, २०. मधु, २१. जगत्, २२. नामन्, २३. पयस्, २४. मनस्, २५. युष्मद्, २६. अस्मद्, २७. सर्व, २८. किम्, २९. यद्, ३०. तद्, ३१. एतद्, ३२. इदम्, ३३. कति, ३४. एक, ३५. द्वि, ३६. त्रि, ३७. चतुर् ३८. पञ्चन्, ३९. षष्, ४०. सप्तन्, ४१. अष्टन्, ४२. नवन्, ४३. दशन् ।

(२) संख्याएँ 160–162

संख्याएँ—१ से १०० तक ।

संख्याएँ—सहस्र से महाशंख तक

(३) धातुरूप-संग्रह— 163–230
(पाँच लकारों के पूरे रूप)

(१) भ्वादिगण—१. भू, २. पठ्, ३. हस्, ४. वद्, ५. पच्, ६. नम्, ७. गम्, ८. दृश्, ९. सद्, १०. स्था, ११. पा, १२. जि, १३. स्मृ, १४. श्रु, १५. सेव्, १६. लभ्, १७. वृध्, १८. मुद्, १९. सह्, २०. याच्, २१. नी, २२. हृ ।

(२) अदादिगण—२३. अद्, २४. अस्, २५. हन्, २६. इ, २७. ब्रू, २८. दुह्, २९. स्वप्, ३०. रुद् ३१. आस्, ३२. शी ।

(३) जुहोत्यादिगण—३३. हु, ३४. भी, ३५. हा, ३६ धा।

(४) दिवादिगण—३७. दिव्, ३८. नृत्, ३९. नश्, ४०. भ्रम्, ४१. युध्, ४२. जन्।

(५) स्वादिगण—४३. सु, ४४. आप्, ४५. शक्।

(६) तुदादिगण—४६. तुद्, ४७. इष्, ४८. स्पृश्, ४९. प्रच्छ्, ५०. लिख्, ५१. मृ, ५२. मुच्।

(७) रुधादिगण—५३. रुध्, ५४. भुज्।

(८) तनादिगण—५५. तन्, ५६. कृ।

(९) क्र्यादिगण—५७ क्री, ५८. ग्रह्, ५९. ज्ञा।

(१०) चुरादिगण—६०. चुर्, ६१. चिन्त्, ६२. कथ्, ६३. भक्ष्।

(४) सन्धि-विचार 231–236

१८ मुख्य सन्धियों का सोदाहरण विवेचन।

(५) समास-विचार 237–239

७ समासों का सोदाहरण विवेचन।

(६) सुभाषित-सङ्ग्रह 240–246

१०० सुभाषितों का, हिन्दी-अर्थ सहित, सङ्कलन।

आवश्यक निर्देश

१. संस्कृत में ३ लिङ्ग होते हैं। इनके नाम और सङ्क्षिप्त रूप ये हैं—

(क) पुंलिङ्ग (पुं०), (ख) स्त्रीलिङ्ग (स्त्री०), (ग) नपुंसकलिङ्ग (नपुं०)।

२. संस्कृत में ३ वचन होते हैं। इनके नाम और सङ्क्षिप्त रूप ये हैं– (क) एकवचन (एक०), (ख) द्विवचन (द्वि०), बहुवचन (बहु०)।

३. संस्कृत में ३ पुरुष होते हैं, इनके नाम और संक्षिप्त रूप ये हैं— (क) प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष (प्र० पु०), (ख) मध्यम पुरुष (म० पु०), (ग) उत्तम पुरुष (उ० पु०)

४. संस्कृत में ५ लकारों का अधिक प्रयोग होता है। इनके नाम और अर्थ ये हैं—(क) लट् (वर्तमान काल), (ख) लोट् (आज्ञा अर्थ), (ग) लङ् (भूत काल), (घ) विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ), (ङ) लृट् (भविष्यत् काल)

५. संस्कृत में धातुएँ तीन प्रकार की हैं, अतः धातुरूप तीन प्रकार से चलते हैं। परस्मैपदी (प०, ति, तः, अन्ति आदि), आत्मनेपदी (आ०, ते एते अन्ते आदि)। उभयपदी (उ०, इसमें उक्त दोनों प्रकार से रूप चलते हैं)।

६. संस्कृत में ८ विभक्तियाँ (कारक) हैं। इनके नाम आदि ये हैं

विभक्ति	सं० रूप	कारक	चिह्न
१. प्रथमा	(प्र०)	कर्ता	–, ने
२. द्वितीया	(द्वि०)	कर्म	को
३. तृतीया	(तृ०)	करण	ने, से, द्वारा
४. चतुर्थी	(च०)	सम्प्रदान	के लिए
५. पञ्चमी	(पं०)	अपादान	से
६. षष्ठी	(ष०)	सम्बन्ध	का, के, की
७. सप्तमी	(स०)	अधिकरण	में, पर
८. सम्बोधन	(सं०)	सम्बोधन	हे, अये, भोः

संस्कृतभाषा का महत्त्व

'संस्कृत' शब्द का अर्थ है—शुद्ध, परिमार्जित, परिष्कृत। अतः संस्कृत भाषा का अर्थ है—शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा। यह विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद इसी भाषा में हैं। यह विश्व की समस्त आर्य-भाषाओं की जननी है। भारतवर्ष का समस्त प्राचीन साहित्य संस्कृत में ही है। उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराण, काव्य और नाटक ग्रन्थ, आयुर्वेद, ज्योतिष, अर्थ-शास्त्र, नीतिशास्त्र, भगवद्गीता, स्मृतिग्रन्थ, दर्शन, गणित एवं प्राचीन विज्ञानग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही हैं।

संस्कृत में सूत्र-पद्धति, अर्थात् सङ्क्षेप में अपनी बातों को रखना, का बहुत महत्त्व है। अतएव कम्प्यूटर विज्ञान के लिए संस्कृत भाषा को बहुत उपयोगी माना जाता है। संस्कृत की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें जो कुछ लिखा जाता है, वही पढ़ा जाता है। आ को अ या अ को आ नहीं पढ़ा जा सकता है।

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की आत्मा है, प्राण है। अतः भारतीय संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, अध्यात्मविज्ञान, प्राचीन विज्ञान, गणित, ज्योतिष, गीता, रामायण, महाभारत, पुराणों आदि के ज्ञान के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान अनिवार्य है।

भारतवर्ष की प्रायः सभी भाषाओं में ५० से ८० प्रतिशत शब्द संस्कृत भाषा से लिए गए हैं, अतः संस्कृत भाषा के ज्ञान से भारत की सभी भाषाओं को सीखना अत्यन्त सरल हो जाता है। अतः संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए आवश्यक है।

संस्कृत-वर्णमाला

कोष्ठ में पारिभाषिक नाम दिए गए हैं। इन्हें स्मरण कर लें।

(क) स्वर— अ, इ, उ, ऋ, ऌ (ह्रस्व स्वर)

आ, ई, ऊ, ॠ (दीर्घ स्वर)

ए, ऐ, ओ, औ (मिश्रित स्वर)

(ख) व्यञ्जन—क, ख, ग, घ, ङ (कवर्ग) (कण्ठ्य)

च, छ, ज, झ, ञ (चवर्ग) (तालव्य)

ट, ठ, ड, ढ, ण (टवर्ग) (मूर्धन्य)

त, थ, द, ध, न (तवर्ग) (दन्त्य)

प, फ, ब, भ, म (पवर्ग) (ओष्ठ्य)

य, र, ल, व (अन्तःस्थ)

श, ष, स, ह (ऊष्म)

ं (अनुस्वार) ँ (अनुनासिक) : (विसर्ग)

सूचना—वर्ग के प्रथम अक्षर का अर्थ है—क, च, ट, त, प।
द्वितीय—ख, छ, ठ, थ, फ। तृतीय—ग, ज, ड, द, ब।
चतुर्थ-घ, झ, ढ, ध, भ। पञ्चम—ङ, ञ, ण, न, म।

उच्चारण—ह्रस्व (१ मात्रा), दीर्घ (२ मात्रा), प्लुत (३ मात्रा)।

(१) कण्ठ्य—ये वर्ण कण्ठ से बोले जाते हैं। अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, : (विसर्ग)।

(२) तालव्य—ये वर्ण तालु से बोले जाते हैं। इ, च, छ, ज, झ, ञ, य, श।

(३) मूर्धन्य—ये वर्ण मूर्धा से बोले जाते हैं। ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष।

(४) दन्त्य- ये वर्ण दाँत से बोले जाते हैं। ऌ, त, थ, द, ध, न, ल, स।

(५) ओष्ठ्य—ये वर्ण ओष्ठ से बोले जाते हैं। उ, प, फ, ब, भ, म।

(६) नासिक्य— इन वर्णों में नाक का भी सहयोग होता है। ङ, ञ, ण, न, म।

अध्यापक से इनका उच्चारण सीखें।

१४ माहेश्वर सूत्र और प्रत्याहार बनाना

अधोलिखित १४ सूत्रों को माहेश्वर सूत्र कहते हैं —

१. अ इ उ ण्। २. ऋ ऌ क्। ३. ए ओ ङ्। ४. ऐ औ च्। ५. ह य व र ट्। ६. ल ण्। ७. ञ म ङ ण न म्। ८. झ भ ञ्। ९. घ ढ ध ष्। १०. ज ब ग ड द श्। ११. ख फ छ ठ थ च ट त व्। १२. क प य्। १३. श ष स र्। १४. ह ल्।

इनमें पूरी वर्णमाला इस प्रकार दी हुई है—पहले स्वर, फिर अन्तःस्थ, फिर क्रमशः वर्ग में पञ्चम, चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय, प्रथम अक्षर और अन्त में ऊष्म हैं।

प्रत्याहार बनाना—प्रत्याहार बनाने के नियम ये हैं—(क) सूत्रों के अन्तिम अक्षर (ण्, क् आदि) प्रत्याहार में नहीं गिने जाते हैं। अन्तिम वर्ण केवल प्रत्याहार बनाने के साधन हैं। (ख) जो प्रत्याहार बनाना हो, उसके लिए प्रथम अक्षर सूत्रों में ढूँढना चाहिए। अन्तिम अक्षर सूत्रों के अन्तिम अक्षरों में ढूँढिए। बीच के सारे वर्ण उस प्रत्याहार में आएँगे। जैसे—अल् में अ से लेकर अन्तिम ह तक। अर्थात् अल्=पूरी वर्णमाला। अण्=अ इ उ। अक्=अ इ उ ऋ ऌ। अच्=सारे स्वर, अ से ऐ औ च् के च् तक। हल्=सारे व्यञ्जन, ह य व र ट् के ह से लेकर ल् तक। इसी प्रकार अट्, खर्, चर्, जश् आदि।

संस्कृत व्याकरण में इन प्रत्याहारों का बहुत उपयोग होता है, अतः प्रत्याहार बनाना सीख लेना चाहिए।

अभ्यास १

शब्दावली—सः = वह, तौ = वे दोनों, ते = वे सब। बालकः = बालक, रामः = राम, विद्यालयः = विद्यालय। भू = होना, पठ् = पढ़ना, लिख् = लिखना, गम् = जाना, हस् = हँसना, अत्र = यहाँ, तत्र = वहाँ, यत्र = जहाँ, कुत्र = कहाँ, किम् = क्या, क्यों।

नियम १—कर्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है। जैसे—सः पठति–वह पढ़ता है। सः लिखति–वह लिखता है। कर्ता प्रथम पुरुष एकवचन है, अतः क्रिया भी प्रथम पुरुष एक वचन है।

नियम २—वर्तमान काल (लट्) में प्रथम पुरुष में धातु के अन्त में ये सङ्क्षिप्त रूप लगते हैं—एकवचन में अति, द्विवचन में अतः, बहुवचन में अन्ति। जैसे—पठ् के पठति, पठतः, पठन्ति। गम् (गच्छ्) के गच्छति, गच्छतः, गच्छन्ति।

उदाहरण वाक्य—सः पुस्तकं पठति। तौ पठतः। ते पठन्ति। सः पत्रं लिखति–वह पत्र लिखता है। ते गृहं गच्छन्ति–वे घर जाते हैं। सः कुत्र गच्छति ?–वह कहाँ जाता है ? सः विद्यालयं गच्छति–वह विद्यालय जाता है। तत्र किं भवति–वहाँ क्या हो रहा है ? तत्र क्रीडनं भवति–वहाँ खेल हो रहा है।

सुभाषित—सत्यं वद–सत्य बोलो। धर्मं चर–धर्म करो। सत्यम् एव जयते–सत्य की ही जय होती है। मातृदेवो भव–माता को देवता समझो। पितृदेवो भव–पिता को देवता समझो। आचार्यदेवो भव–गुरु को देवता समझो।

(क) संस्कृत बनाओ—

वह जाता है। वह कहाँ जाता है? वह विद्यालय जाता है। वह क्या पढ़ता है? वह पत्र लिखता है। वहाँ क्या हो रहा है? वहाँ खेल हो रहा है। वे दोनों पढ़ते हैं। वे दोनों घर जाते हैं। वे सब विद्यालय जाते हैं। वे दोनों पत्र लिखते हैं। वे सब पत्र लिखते हैं। वह बालक हँसता है। वे सब हँसते हैं।

सत्य बोलो। माता को देवता समझो। गुरु को देवता समझो। सत्य की ही जय होती है। धर्म करो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

सः किं पठति? ते किं लिखन्ति? ते कुत्र गच्छन्ति? तत्र किं भवति? तौ कुत्र गच्छतः? तौ किं लिखतः? तौ किं पठतः? ते किं पठन्ति।

(ग) अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करो—

सः पुस्तकं पठन्ति। ते पत्रं लिखति। तौ गृहं गच्छन्ति। तत्र क्रीडनं भवन्ति। बालकाः विद्यालयं गच्छति।

(घ) संस्कृत में वाक्य बनाओ—

पठति। पठतः। पठन्ति। गच्छति। गच्छन्ति। हसति। हसन्ति। भवति। तत्र। कुत्र। किम्।

(ङ) लट् लकार प्रथम पुरुष के रूप लिखो—

पठ्, लिख्, गम्, हस्, भू।

अभ्यास २

शब्दावली—त्वम् = तू, युवाम् = तुम दोनों, यूयम् = तुम सब। कः = कौन, गृहम् = घर, पुस्तकम् = पुस्तक, फलम् = फल, भोजनम् = भोजन, सत्यम् = सत्य। वद् = बोलना, पच् = पकाना, खाद् = खाना, क्रीड् = खेलना। अद्य = आज, इदानीम् = अब, यदा = जब, तदा = तब, कदा = कब, च = और, एव = ही, न = नहीं, अपि = भी।

नियम ३—कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है और कर्म में द्वितीया। तू पुस्तक पढ़ता है—त्वं पुस्तकं पठसि। तुम सच बोलते हो-यूयं सत्यं वदथ। तू भी फल खाता है-त्वम् अपि फलं खादसि।

नियम ४—वर्तमान काल (लट्) मध्यम पुरुष में धातु के अन्त में ये संक्षिप्त रूप लगते हैं:-एक वचन में असि, द्विवचन में अथः, बहुवचन में अथ। जैसे—वद् के वदसि, वदथः, वदथ। क्रीड् के क्रीडसि, क्रीडथः, क्रीडथ।

उदाहरण-वाक्य—त्वं पुस्तकं पठसि। युवां भोजनं खादथः। यूयं सत्यं वदथ। त्वं गृहं न गच्छसि। त्वम् अपि क्रीडसि। रामः कृष्णः च गच्छतः। त्वम् एव भोजनं पचसि। त्वं किं न क्रीडसि? त्वं कदा पठसि? यूयम् इदानीं क्रीडथ।

सुभाषित—विद्याविहीनः पशुः—विद्या से हीन मनुष्य पशुतुल्य होता है। विद्या परं दैवतम्-विद्या महान् देवता है। विद्या सर्वस्य भूषणम्-विद्या सबका आभूषण है। विद्या ददाति विनयम्-विद्या विनय देती है। विद्वान् सर्वत्र पूज्यते-विद्वान् की सब जगह पूजा होती है।

(क) संस्कृत बनाओ—

तू घर जाता है। तू भोजन पकाता है। तू सत्य बोलता है। तुम दोनों खेलते हो। तुम दोनों पुस्तक पढ़ते हो। तुम सब विद्यालय जाते हो। तुम क्यों नहीं खेलते हो ? तू ही भोजन पकाता है। तुम सब भी खेलते हो। तू अब लिखता है। तू कब घर जाता है ? तुम सब भी फल खाते हो।

विद्याहीन पशु होता है। विद्या सबका आभूषण है। विद्वान् की सर्वत्र पूजा होती है। विद्या विनय देती है।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

विद्या किं ददाति ? कः सर्वत्र पूज्यते ? कः पशुः भवति ? किं परं दैवतम् ? सः किं खादति ? ते किं पठन्ति ?

(ग) अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करो—

यूयं फलं खादसि। यूयं भोजनं पचसि। त्वं सत्यं वदथ। ते किं न खादति ? युवां गृहं गच्छथ। यूयं क्रीडसि। ते किं वदति ? त्वं न गच्छति।

(घ) संस्कृत में वाक्य बनाओ—

खादसि। क्रीडसि। लिखति। वदसि। पचथ। गच्छसि। इदानीम्। कदा। एव। अपि।

(ङ) लट् लकार मध्यम पुरुष के रूप लिखो—

पठ्, लिख्, वद्, क्रीड्, पच्, खाद्।

अभ्यास. ३

शब्दावली—अहम् = मैं, आवाम् = हम दोनों, वयम् = हम सब । बालिका = लड़की, पाठशाला = पाठशाला, विद्या = विद्या, कथा = कथा, कहानी, क्रीडा = खेल । आगम् (आगच्छ्) = आना, पा (पिब्) = पीना, सद् (सीद्) = बैठना, स्था (तिष्ठ्) = रुकना, बैठना, दृश् (पश्य्) = देखना । इतः = इधर, यहाँ से, ततः = वहाँ से, यतः = जहाँ से, कुतः = कहाँ से, कथम् = क्यों, कैसे ।

नियम ५—हिन्दी में जहाँ 'और' लगता है, संस्कृत में 'और' के लिए 'च' एक शब्द के बाद लगता है । जैसे–राम और कृष्ण–रामः कृष्णः च । फल और फूल–फलं पुष्पं च ।

नियम ६—वर्तमान काल (लट्) उत्तम पुरुष में धातु के अन्त में ये संक्षिप्त रूप लगते हैं—एकवचन में 'अमि', द्विवचन में 'आवः', बहुवचन में 'आमः' । जैसे–पठ् के पठामि, पठावः, पठामः ।

उदाहरण-वाक्य—अहं पुस्तकं पठामि । अहं बालिकां पश्यामि । अहं जलं पिबामि । त्वं किं करोषि (करता है) ? अहं लेखं लिखामि । वयं पाठशालां गच्छामः । अहम् अत्र सीदामि । वयम् आगच्छामः । त्वं कुतः आगच्छसि ? अहं गृहात् (घर से) आगच्छामि । स इतः गच्छति । त्वं कथं न लिखसि ?

सुभाषित—नहि सत्यात् परो धर्मः–सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है । सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्–सत्य में सब कुछ स्थित है । सत्यात् न प्रमदितव्यम्–सत्य बोलने में प्रमाद न करना । सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्–सत्य स्वर्ग-प्राप्ति की सीढ़ी है ।

(क) संस्कृत बनाओ—

मैं विद्यालय जाता हूँ। मैं खेल देखता हूँ। मैं वहाँ से आता हूँ। हम यहाँ बैठते हैं। हम जल पीते हैं। हम विद्या पढ़ते हैं। हम पाठ-शाला जाते हैं। हम यहाँ खड़े हैं। वह कहाँ से आता है? हम यहाँ से जाते हैं। तुम क्यों हँसते हो? तुम क्या करते हो? मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है। सत्य स्वर्ग-प्राप्ति की सीढ़ी है।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

त्वं किं करोषि? त्वं किं लिखसि? त्वं किं पश्यसि? त्वं किं पिबसि? त्वं कुत्र गच्छसि? त्वं किं पठसि?

(ग) अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करो—

वयं जलं पिबन्ति। अहं ततः आगच्छामः। वयम् अत्र तिष्ठामि। आवां कुतः आगच्छामः। त्वं कथं हसति? अहं पाठशालां गच्छति।

(घ) संस्कृत में वाक्य बनाओ—

विद्याम्। तिष्ठामि। पिबामि। सीदामः। आगच्छामः। क्रीडाम्। कथाम्। कुतः। ततः। इतः।

(ङ) इन धातुओं के लट् लकार उत्तम पुरुष के रूप लिखो—

स्था, गम्, आगम्, हस्, पा, दृश्, पठ्, लिख्।

अभ्यास ४

शब्दावली—कार्यम् = काम, अध्ययनम् = अध्ययन, पढ़ाई, लेखनम् = लिखना, यानम् = गाड़ी, लेखः = लेख, पाठः = पाठ। अस् = होना, घ्रा (जिघ्र) = सूँघना, दा (यच्छ्) = देना। एकः = एक, द्वौ = दो, त्रयः = तीन, चत्वारः = चार, पञ्च = पाँच। कति = कितने।

नियम ७—तीनों लिङ्गों में धातु का रूप वही रहता है। जैसे-बालकः गच्छति, बालिका गच्छति, यानं गच्छति।

नियम ८—(अपदं न प्रयुञ्जीत) कारक चिह्न (सुप्) या क्रिया-चिह्न (तिङ्) लगाए बिना किसी शब्द या धातु का प्रयोग नहीं होता। केवल बालक या पठ् आदि का प्रयोग नहीं होता। बालकः, बालकम्, पठति, लिखति आदि का ही प्रयोग होगा।

अस् (होना) धातु के लट् लकार के रूप ये हैं—

सः अस्ति (वह है) तौ स्तः (वे दोनों हैं) ते सन्ति (वे हैं) त्वम् असि। (तू है) युवां स्थः (तुम दोनों हो) यूयं स्थ (तुम हो) अहम् अस्मि (मैं हूँ) आवां स्वः (हम दोनों हैं) वयं स्मः (हम हैं)।

उदाहरण-वाक्य—एकः बालकः पठति। वहाँ दो आदमी हैं-तत्र द्वौ मनुष्यौ स्तः। यहाँ तीन बालक हैं-अत्र त्रयः बालकाः सन्ति। चत्वारः बालकाः पुस्तकं पठन्ति। पञ्च बालिकाः क्रीडन्ति। ते पुष्पं जिघ्रन्ति। स वनं गच्छति। त्वं किं यच्छसि ?

(क) संस्कृत बनाओ—

वह एक बालक है। दो बालक खेल रहे हैं। तीन बालक हँस रहे हैं। चार आदमी आ रहे हैं। पाँच बालिकाएँ पढ़ रही हैं। वहाँ कौन है ? वहाँ दो बालक हैं। यहाँ तीन आदमी हैं। तुम यहाँ हो। वे वहाँ हैं। मैं यहाँ हूँ। वे कहाँ हैं ? वे यहाँ हैं। वे फूल सूँघ रहे हैं। वह क्या दे रहा है ? वह फूल दे रहा है। गाड़ी जाती है। बालिका जाती है। मैं भी जाता हूँ।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

अत्र कति जनाः सन्ति ? त्वं किं पठसि ? त्वं कुत्र गच्छसि ? चत्वारः बालकाः किं लिखन्ति ? त्वं किं यच्छसि ? ते कुत्र सन्ति ? वयं कुतः आगच्छामः ?

(ग) रिक्त स्थान भरो—

···बालकौ पठतः। त्रयः···लेखं लिखन्ति। तत्र कति···सन्ति। चत्वारः बालकाः···पठन्ति। पञ्च बालिकाः···जिघ्रन्ति। वयम् अत्र ·। अहम् अत्र···।

(घ) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

द्वौ बालकौ पठन्ति। अहम् अत्र अस्ति। वयं सन्ति। त्वम् अस्ति। तत्र कति जनाः अस्ति। वयं पुष्पं जिघ्रामि। यानं गच्छन्ति। बालिका सन्ति।

(ङ) अस् धातु के लट् लकार के रूप लिखो।

अभ्यास ५

शब्दावली—नरः = आदमी, मनुष्यः = मनुष्य, जनः = आदमी, छात्रः = विद्यार्थी, सज्जनः = सज्जन, दुर्जनः = दुर्जन। षट् = छह, सप्त = सात, अष्ट = आठ, नव = नौ, दश = दस। कृ = करना। इत्थम् = ऐसे, एवम् = ऐसे, कथम् = कैसे, यथा = जैसे तथा = वैसे, किमर्थम् = क्यों, किसलिए।

नियम ९—(विशेषण-विशेष्य) विशेषण में वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं, जो विशेष्य के होते हैं। जैसे—एकः बालकः। एका बालिका। एकं फलम्। द्वौ मनुष्यौ। चत्वारः नराः।

कृ (करना) धातु के लट् के रूप ये हैं—

करोति (करता है) कुरुतः (वे दो करते हैं) कुर्वन्ति (वे करते हैं) करोषि (तू करता है) कुरुथः (तुम दोनों करते हो) कुरुथ (तुम करते हो) करोमि (मैं करता हूँ) कुर्वः (हम दोनों करते हैं) कुर्मः (हम करते हैं)।

उदाहरण-वाक्य—षट् नराः कार्यं कुर्वन्ति। दश छात्राः आगच्छन्ति। त्वं किं करोषि? अहं भोजनं करोमि। ते किं कुर्वन्ति? ते पठन्ति। वयम् अध्ययनं कुर्मः। त्वम् इत्थं किं करोषि? एवं न कुरु (करो)। यथा वदसि तथा कुरु। अत्र अष्ट छात्राः क्रीडन्ति।

सुभाषित—परोपकाराय सतां विभूतयः-सज्जनों का ऐश्वर्य परोपकार के लिए होता है। परोपकारः पुण्याय-परोपकार से पुण्य होता है। परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः-वृक्ष परोपकार के लिए फल देते हैं। परोपकाराय वहन्ति नद्यः-नदियाँ परोपकार के लिए बहती हैं।

(क) संस्कृत बनाओ —

यहाँ छह आदमी हैं। सात छात्र यहाँ बैठे हैं। तुम क्या कर रहे हो ? मैं पाठ पढ़ रहा हूँ। वे क्या कर रहे हैं ? वे लेख लिख रहे हैं। तुम सब क्या कर रहे हो ? हम सब काम कर रहे हैं। सज्जन परोपकार करते हैं। दुर्जन दुष्टता करते हैं। जैसा कहते हो, वैसा ही करो। ऐसा काम न करो, जिससे (यथा) दुःख हो। परोपकार से पुण्य होता है।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो —

त्वं किं पठसि ? त्वं किं करोषि ? ते किं कुर्वन्ति ? तत्र कति जनाः सन्ति ? कति छात्राः क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति ? सतां विभूतयः किमर्थं भवन्ति ? नद्यः किमर्थं वहन्ति ? वृक्षाः किमर्थं फलन्ति ?

(ग) अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करो—

त्वं किं करोति ? वयं भोजनं कुर्वन्ति। यूयं कार्यं कुर्मः। द्वौ नराः गच्छतः। दश छात्राः क्रीडति। त्वं यथा वदति तथा करोषि। छात्राः अत्र किमर्थम् आगच्छति।

(घ) संस्कृत में वाक्य बनाओ —

सप्त। दश। एवम्। किमर्थम्। यथा ''तथा। कुर्वन्ति। करोषि। करोमि। कुर्मः।

(ङ) कृ धातु के लट के रूप लिखो।

अभ्यास ६

शब्दावली—बालकः = बालक, जनकः = पिता, पुत्रः = पुत्र, उपाध्यायः = गुरु, शिष्यः = शिष्य, सूर्यः = सूर्य, चन्द्रः = चन्द्रमा, प्राज्ञः = विद्वान्, प्रश्नः = प्रश्न। भवान् = आप (पुं०), भवती = आप (स्त्री०)। पत् = गिरना, नम् = झुकना, नमस्कार करना, स्मृ = याद करना, इष् (इच्छ्) = चाहना, प्रच्छ् (पृच्छ्) = पूछना, स्पृश् = छूना।

नियम १०—भवत् (आप) शब्द के साथ सदा प्रथम पुरुष होता है। भवान् गच्छति-आप जाते हैं। भवती पठति-आप पढ़ती हैं।

नियम ११—कर्ता (व्यक्ति नाम, वस्तुनाम आदि) में प्रथमा विभक्ति होती है। बालकः गच्छति। शिष्यः पतति।

नियम १२—किसी को सम्बोधन करने (पुकारने) में सम्बोधन विभक्ति होती है। हे राम! हे कृष्ण! हे पुत्र!

सूचना—जनक आदि शब्दों के रूप बालक के तुल्य चलेंगे (देखो शब्द १)। पत् आदि धातुओं के रूप भू धातु के तुल्य चलेंगे। भू धातु लट् लकार के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—जनकः आगच्छति। छात्रः उपाध्यायं नमति। वयं पाठं स्मरामः। उपाध्यायः प्रश्नं पृच्छति। त्वं किम् इच्छसि? अहं फलम् इच्छामि। ते बालकं स्पृशन्ति। भवान् किम् इच्छति? भवती कुत्र गच्छति? हे राम, अत्र आगच्छ।

सुभाषित—गुणाः पूजास्थानम्-गुणों की पूजा होती है। गुणेषु क्रियतां यत्नः-गुणों के लिए प्रयत्न करो। गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः-गुणवान् गुण को समझता है, निर्गुण व्यक्ति नहीं।

(क) संस्कृत बनाओ—

बालक घर जाता है। शिष्य यहाँ आता है। तुम कहाँ जाते हो? हम विद्यालय जाते हैं। गुरु प्रश्न पूछता है। वह क्या चाहता है? वह फल चाहता है। पुत्र गिरता है। मैं गुरु को नमस्कार करता हूँ? वे पाठ याद कर रहे हैं। तू बालक को छूता है। विद्वान् सुशिष्य को चाहता है। आप कहाँ जा रहे हैं? आप क्या देख रही हैं? आप यहाँ आती हैं। हे शिष्य, तुम क्या चाहते हो?

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

त्वं किम् इच्छसि? उपाध्यायः किं पृच्छति? विद्वान् किम् इच्छति? बालकाः किं स्मरन्ति? त्वं किं स्पृशसि? भवान् कुत्र गच्छति? भवती किम् इच्छति? कः गुरुं वेत्ति? किं पूजास्थानम्?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(लट् लकार)

अहं सूर्यं……(पश्य्)। ते चन्द्रं……(पश्य्)।
वयं पाठं……(स्मृ)। यूयं फलम्……(इच्छ्)।
भवती कुत्र……(गच्छ्)। अहं जनकं……(नम्)।
प्राज्ञः सुशिष्यम्……(इच्छ्)। ते कार्यं……(कृ)।

(घ) संस्कृत में वाक्य बनाओ—

जनकम्। चन्द्रम्। प्रश्नम्। पृच्छन्ति। नमामि। इच्छसि। स्मरन्ति। स्पृशामः। भवान्। भवती। हे पुत्र!। हे शिष्य!।

(ङ) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—

राम, बालक, शिष्य, पुत्र, सूर्य, उपाध्याय।

अभ्यास—७

शब्दावली—फलम् = फल, धनम् = धन, पुष्पम् = फूल, पत्रम् = पत्ता, चिट्ठी, वनम् = वन, नगरम् = नगर, जलम् = जल, नृत् = नाचना, सिव् = सीना, भ्रम् = घूमना। अभितः = दोनों ओर, उभयतः = दोनों ओर, सर्वतः = चारों ओर, परितः = चारों ओर, प्रति = ओर, धिक् = धिक्कार, विना = बिना।

नियम १३—(द्वितीया) कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है। रामः विद्यालयं गच्छति। स धनम् इच्छति। गुरुः प्रश्नं पृच्छति।

नियम १४—(द्वितीया) अभितः, उभयतः, परितः सर्वतः प्रति, धिक्, विना के साथ द्वितीया होती है। ग्रामम् अभितः (गाँव के दोनों ओर), नगरं परितः (नगर के चारों ओर), गृहं प्रति (घर की ओर), दुर्जनं धिक् (दुर्जन को धिक्कार), धर्मं विना (धर्म के बिना)।

सूचना—फल शब्द (शब्द १८) के पूरे रूप स्मरण करो। भू धातु के लोट् के रूप स्मरण करो। नृत् आदि के रूप हैं—नृत्यति, सीव्यति, भ्राम्यति।

उदाहरण वाक्य—फलम् आनय। धनम् इच्छ। वनं गच्छ। बालिका नृत्यतु। बालिका वस्त्रं सीव्यतु। बालकः भ्राम्यतु। नगरं गच्छ। विद्यालयम् अभितः जलं वर्तते (है)। नगरं परितः वनं वर्तते। गृहं प्रति गच्छ। ज्ञानं विना न सुखम्।

सुभाषित—अद्भिः गात्राणि शुध्यन्ति-जल से शरीर शुद्ध होता है। मनः सत्येन शुध्यति-मन सत्य से शुद्ध होता है। बुद्धिः ज्ञानेन शुध्यति-बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

(क) संस्कृत बनाओ—

फूल लाओ। धन चाहो। पत्र पढ़ो। घर जाओ। तू विद्यालय जा। वे घर जायें। पत्ता गिरे। तुम सब जल पीओ। हम घर आवें। बालिका नाचे। रमा वस्त्र सीवे। बालक घर में घूमे। गुरु प्रश्न पूछे। तुम सब घर जाओ। मैं नगर जाऊँ। गाँव के दोनों ओर जल है। नगर के चारों ओर जंगल है। मैं घर की ओर जा रहा हूँ। दुर्जन को धिक्कार। धर्म के बिना सुख नहीं।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

गुरुः किं पृच्छति? बालिका किं सीव्यति? का (कौन) नृत्यति? कः भ्राम्यति? किं विना न सुखम्? कं धिक्? विद्यालयम् उभयतः किं वर्तते? सत्येन किं शुध्यति? ज्ञानेन किं शुध्यति?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(लोट् लकार)

रामः फलम् ·····(इच्छ्)। ते पुष्पम् ·····(स्पृश्)
त्वं पत्रं ·····(पठ्)। ते लेखं····· (लिख्)
त्वं गृहं·····(गच्छ्)। गुरुः प्रश्नं (पृच्छ्)
बालिका····· (नृत्)। उमा वस्त्रं·····(सीव्)

(घ) संस्कृत में वाक्य बनाओ—

नृत्यति। सीव्यतु। भ्राम्यन्ति। अभितः। उभयतः।
सर्वतः। विना। धिक्। शुध्यति।

(ङ) इन धातुओं के लोट् के रूप लिखो—

पठ्। लिख्। पा (पिब्)। गम् (गच्छ्)।
नृत्। भ्रम्। प्रच्छ् (पृच्छ्)।

अभ्यास ८

शब्दावली—बालिका = लड़की, विद्या = विद्या, लता = लता आज्ञा = आज्ञा, प्रजा = प्रजा, लज्जा = लज्जा। कथ् (कथय) = कहना, भक्ष् (भक्षय) = खाना, चुर् (चोरय) = चुराना, गण् (गणय) = गिनना, चिन्त् (चिन्तय) = सोचना, रच् (रचय) = बनाना। दिनम् = दिन, वर्षम् = वर्ष, क्रोशः = कोस (२ मील)।

नियम १५—(द्वितीया) गमन (जाना चलना) अर्थ की धातुओं के साथ द्वितीया होती है। ग्रामं गच्छति। विद्यालयम् अगच्छत्।

नियम १६—(द्वितीया) समय और मार्ग की दूरी के वाचक शब्दों में द्वितीया होती है। दश दिनानि पठति–दस दिन तक पढ़ता है। क्रोशम् अगच्छत्—कोस भर गया।

सूचना—बालिका शब्द (शब्द ११) के पूरे रूप स्मरण करो। भू धातु के लङ् लकार के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—बालिकां पश्य। विद्यां पठ। उपाध्यायस्य आज्ञां पालय। सः कथाम् अकथयत्। त्वं पुस्तकानि अगणयः। अहं फलं न अचोरयम्। त्वं किं रचयसि? त्वं किं चिन्तयसि। उमा लज्जां करोति। नृपः प्रजां रक्षति। स दश दिनानि अपठत्। रामः क्रोशम् अगच्छत्।

सुभाषित—वसुधैव कुटुम्बकम्–सारी पृथ्वी ही कुटुम्ब है। मौनं स्वीकृतिलक्षणम्–चुप रहना स्वीकृति का चिह्न है। माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः–अपने बच्चे को न पढ़ाने वाले माता–पिता शत्रु हैं।

(क) संस्कृत बनाओ—

पुस्तक पढ़ो। लेख लिखो। राम घर गया। बालक यहाँ आया। तुमने क्या पढ़ा? मैंने गीता पढ़ी। तूने भोजन खाया। मैंने पुस्तक नहीं चुराई। हमने पुस्तकें गिनीं। तुमने क्या सोचा? उसने घर बनाया। उसने लता देखी। राजा ने प्रजा की रक्षा की। गुरु ने कथा कही। वह पाँच दिन तक पढ़ता है। देवदत्त कोस भर गया। रमा लज्जा करती है। पिता की आज्ञा का पालन करो। ईश्वर का चिन्तन करो (चिन्त्)।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

रमा किम् अपठत्? त्वं किम् अगणयः? स किम् अरचयत्? त्वं किम् अभक्षयः? बालिका किम् अलिखत्? कस्य आज्ञां पालय? प्रजां कः अरक्षत्? कः शत्रुः? मौनं किम् अस्ति?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

अहं भोजनम् अभक्षयत्। त्वं गृहम् अरचयत्। स ईश्वरं चिन्तय। यूयं जनकस्य आज्ञाम् अपालयः। त्वं लतां पश्यतु। सा लज्जां न करोषि। ते गृहम् अरचयत्। अहम् ईश्वरम् अचिन्तयत्।

(घ) संस्कृत में वाक्य बनाओ—

अभक्षयत्। अचिन्तयम्। अगणयः। अचोरयत्। कथय। रचय। गच्छ। चिन्तय। क्रोशम्। वर्षाणि।

(ङ) इन धातुओं के लङ् के रूप लिखो—

चिन्त्। भक्ष्। चुर्। पठ्। लिख्। गम्। दृश् (पश्य्)।

अभ्यास ९

शब्दावली—हरिः = विष्णु, बन्दर, मुनिः = मुनि, कविः = कवि, रविः = सूर्य, अग्निः = आग, गिरिः = पहाड़, कपिः = बन्दर, भूपतिः = राजा। कन्दुकम् = गेंद, दण्डः = डंडा। सह = साथ सार्धम् = साथ, साकम् = साथ। ताडय = मारना, उत्थापय = उठाना। उदेति = उदय होता है।

नियम १७—(तृतीया) करण कारक में तृतीया होती है। बालकः कन्दुकेन क्रीडेत्। पुत्रः दण्डेन क्रीडति। दण्डेन ताडय।

नियम १८—(तृतीया) सह, साकम्, सार्धम् (साथ अर्थ) के साथ तृतीया होती है। जनकः पुत्रेण सह आगच्छत्। रामः सीतया सह वनम् अगच्छत्।

सूचना—हरि शब्द (शब्द २) के पूरे रूप स्मरण करो। भू धातु के विधिलिङ्ग के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—

हरिं नयेत्। मुनिः काव्यं रचयेत्। कविः श्लोकम् अरचयत्। रविः प्रातः उदेति। कपयः क्रीडन्ति। अग्निः दहति (जलाती है)। भूपतिना सह मन्त्री आगच्छत्। बालकः कन्दुकेन अक्रीडत्। गुरुः दण्डेन अताडयत्। हस्तेन भारम् उत्थापय। गिरौ कपयः सीदन्ति।

सुभाषित—सतां सङ्गो हि भेषजम्-सज्जनों की सङ्गति ओषधि है। सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्-सत्संगति मनुष्य का क्या लाभ नहीं करती? सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम्-सज्जनों की सङ्गति करे। सद्भिरेव सहासीत-सज्जनों के ही साथ बैठे।

(क) संस्कृत बनाओ—

बालक पुस्तक पढ़े। रमा लेख लिखे। वे फल खावें। तू यहाँ आना। मैं गीता पढ़ूँ। हम यहाँ आवें। हरि को प्रणाम करे। बन्दर पहाड़ पर खेलें। आग जलाती है। राजा के साथ मन्त्री भी आवे। सूर्य उदय होता है। गुरु शिष्य के साथ आया। हाथ से पुस्तक उठावो। कवि काव्य बनावे। मुनि वेद पढ़े। राम लक्ष्मण के साथ वन गए। सज्जनों के साथ बैठे। सज्जनों की संगति करे।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

बालकः किं पठेत् ? बालिकाः किं लिखेयुः ? गुरुः किं पृच्छेत् ? छात्राः किं भक्षयेयुः ? कं नमेत् ? नृपेण सह कः आगच्छत् ? कविः किं रचये ? रविः कदा उदेति ? कपयः किं कुर्वन्ति ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(विधिलिङ्ग लकार)

गुरुः शिष्येण सह······(आगच्छ्)। गिरौ कपयः···(क्रीड्)
रामः पुस्तकं ······(पठ्)। रमा लेखं······(लिख्)
बालिका······(नृत्)। हरिं ···(नम्)
कविः श्लोकं······(रच्)। असत्यं न······(वद्)

(घ) संस्कृत में वाक्य बनाओ—

पठेयुः। गच्छेयुः। भक्षयेयम्। कथयेत्। सह। ताडय।

(ङ) इन धातुओं के विधिलिङ् में रूप लिखो—

पठ्, लिख्, क्रीड्, गम् (गच्छ्), पा (पिब्), नृत्।

अभ्यास १०

शब्दावली—गुरुः = गुरु, साधुः = सज्जन, भानुः = सूर्य, वायुः = वायु, शिशुः = बालक, पशुः = पशु, तरुः = वृक्ष। उपदिश् = उपदेश देना, वह् = बहना, रुह् = निकलना, चढ़ना, चर् = चरना। किम् = क्यालाभ, किं प्रयोजनम् = क्या लाभ, कोऽर्थः = क्या लाभ, प्रकृतिः = स्वभाव, अलम् = बस, मत, विवादः = विवाद, कलहः = झगड़ा।

नियम १९—(तृतीया) किम्, कोऽर्थः, किं प्रयोजनम् के साथ तृतीया होती है। अलम् (बस, मत) के साथ भी तृतीया होती है। मूर्खेण पुत्रेण किम्, किं कार्यम्, कोऽर्थः—मूर्ख पुत्र से क्या लाभ ? अलं विवादेन—विवाद मत करो।

नियम २०—(तृतीया) प्रकृति आदि क्रियाविशेषण शब्दों से तृतीया होती है। प्रकृत्या साधुः। सुखेन जीवति। दुःखेन जीवति।

सूचना—गुरु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। भू-धातु के लृट् के रूप स्मरण करो। इन धातुओं के लृट् में ये रूप बनते हैं—पठ्-पठिष्यति, लिख्-लेखिष्यति, पा-पास्यति, दृश्-द्रक्ष्यति, गम्-गमिष्यति, कृ-करिष्यति, नम्-नंस्यति, भक्ष्-भक्षयिष्यति।

उदाहरण वाक्य—शिष्यः पठिष्यति, लेखं लेखिष्यति, पाठं स्मरिष्यति, कार्यं करिष्यति, फलं भक्षयिष्यति, जलं पास्यति, गुरुं नंस्यति, भानुं द्रक्ष्यति, साधुं प्रक्ष्यति च। वायुः वहति, पशुः चरति, तरुः रोहति। अलं कलहेन। मूर्खेण शिष्येण किं कार्यम् ?

(क) संस्कृत बनाओ—

गुरु कार्य करेगा। बालक पाठ पढ़ेगा। बालिकाएँ लेख लिखेंगी। शिशु खेलेंगे (क्रीडिष्यन्ति)। गुरु उपदेश देगा (उपदेष्यति)। शिष्य साधु से पूछेगा। मैं सूर्य को देखूँगा। शिष्य पाठ याद करेंगे। शिशु जल पीएँगे। पशु चर रहे हैं। वायु बह रही है। वृक्ष निकल रहा है। तुम क्या लिखोगे? वे कहाँ जाएँगे? वे सूर्य को नमस्कार करेंगे। मूर्ख पुत्र से क्या लाभ? झगड़ा न करो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

शिष्यः किं करिष्यति? बालकः कं प्रक्ष्यति? बालिका किं द्रक्ष्यति? शिशुः कं द्रक्ष्यति? कः वहति? कः उपदेक्ष्यति? कः क्रीडिष्यति? के पाठं स्मरिष्यन्ति? ते किं लेखिष्यन्ति? ते कुत्र गमिष्यन्ति? त्वं कं नंस्यसि?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(लृट् लकार)

ते लेखं ···· (लिख्)। त्वं कार्यं······ (कृ)।
त्वं गृहं······ (गम्)। वयं गृहात्······ (आगम्)
ते जलं······ (पा)। ते भानुं ····· (दृश्)
वयं प्रश्नं ···· (प्रच्छ्)। अहं पाठं······ (स्मृ)

(घ) इन शब्दों के रूप लिखो—

गुरु, शिशु, पशु, भानु।

(ङ) इन धातुओं के लृट् लकार के रूप लिखो:—

पठ्, लिख्, दृश्, पा, कृ, स्मृ, भक्ष्।

अभ्यास ११

शब्दावली—विद्यालयः = विद्यालय, अध्यापकः = अध्यापक, कक्षा = श्रेणी उत्तरम् = उत्तर, परीक्षा = परीक्षा, परिणामः = परिणाम, अङ्कः = अंक, अवकाशः = छुट्टी, वादनम् = बजे, अनुशासनम् = अनुशासन सुलेखः = सुलेख पृष्ठम् = पृष्ठ, यत् = जो, तत्—वह, किम् = कौन, एतत् = यह, जि = जीतना, यच्छ् = देना श्वः = आने वाला कल, ह्यः = बीता हुआ कल।

नियम २१ (चतुर्थी) संप्रदान कारक (दान देना आदि) में जिसको दान दिया जाता है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। ब्राह्मणाय धनं ददाति। शिष्याय पुस्तकं ददाति। पुत्राय फलं यच्छ।

नियम २२—(चतुर्थी) नमः (नमस्कार) और स्वस्ति (आशीर्वाद) के साथ चतुर्थी होती है। गुरवे नमः। शिष्याय स्वस्ति।

सूचना—यत्, तत् एतत्, किम् शब्दों के पुंलिङ्ग के रूप स्मरण करो। जैसे—यः, यौ, ये। सः, तौ, ते। एषः, एतौ, एते। कः, कौ, के। जि धातु (संख्या १२) के लट् आदि पाँच लकारों में रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—विद्यालये दश अध्यापकाः शतं च छात्राः सन्ति। कक्षायां सावधानेन पठ। विद्यालये एकवादने अवकाशः भवति। सुलेखं लिख। अनुशासनं पालय। मम परीक्षा मार्चमासे भविष्यति। ये छात्राः सुलेखं लिखन्ति, ते शोभनान् अङ्कान् लभन्ते (पाते हैं)। यं यं पश्यसि, तं तं दीनं वचनं न वद। त्वं कस्मिन् नगरे वससि? अहं तस्मिन् नगरे वसामि। नृपः शत्रुं जयति।

सुभाषित—आचारः परमो धर्मः—सदाचार सबसे बड़ा धर्म है। शीलं परं भूषणम्—सुशीलता श्रेष्ठ आभूषण है। सकलगुणभूषा च विनयः—विनय सारे गुणों का आभूषण है।

(क) संस्कृत बनाओ—

मैं विद्यालय में पढ़ता हूँ। विद्यालय में दस अध्यापक और सौ विद्यार्थी हैं। विद्यालय में अनुशासन उत्तम है। मेरी कक्षा में बीस (विंशतिः) छात्र हैं। मेरी परीक्षा कल होगी। जो परीक्षा में सुलेख लिखते हैं उन्हें अच्छे अंक मिलते हैं। विद्यालय में एक बजे अवकाश होता है। शिष्य को फल दो। पुत्र को पुस्तक दो। गुरु को नमस्कार। पुत्र को आशीर्वाद। तुम किस गाँव में रहते हो? मैं उस गाँव में रहता हूँ। अनुशासन का पालन करो। राजा शत्रु को जीतता है। तुम दुर्जन को जीतो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

विद्यालये कति अध्यापकाः सन्ति? तव कक्षायां कति छात्राः सन्ति? तव विद्यालयस्य किं नाम अस्ति? त्वं कस्मिन् नगरे निवससि? तव परीक्षा कदा भविष्यति? विद्यालये कतिवादने अवकाशः भवति? नृपः कं जयति? त्वं कं जेष्यसि?

(ग) रिक्त स्थान को भरो—

······बालकाय फलं यच्छ (तत्)।
·· ···प्रकारेण शत्रुं जेस्यसि (किम्)।
अहं······ग्रामे वसामि (तत्)।
त्वं······विद्यालये पठसि (किम्)।
मम विद्यालये······छात्राः सन्ति।
·· ···नमः। ······स्वति।

(घ) इन सर्वनामों के पुंलिङ्ग में रूप लिखो—

यत्, तत्, एतत्, किम्।

(ङ) जि धातु के लट्, लङ् और लृट् में रूप लिखो।

———

अभ्यास १२

शब्दावली—संचिका = कापी, लेखनी = कलम, धारालेखनी = फाउन्टेन पेन, कर्गदम् = कागज, पृष्ठम् = पृष्ठ, मसी = स्याही, मसी, पात्रम् = दावात, कठिनी = चॉक, श्यामपट्टम् = ब्लैक बोर्ड। रुच् = अच्छा लगना, क्रुध् = क्रोध करना, कुप = क्रोध करना, द्रुह् = द्रोह करना, ईर्ष्य = ईर्ष्या करना, असूय = दोष निकालना, स्मृ = याद करना।

नियम २३—(चतुर्थी) रुच् (अच्छा लगना) अर्थ की धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। पुत्राय मोदकं रोचते-पुत्र को लड्डू अच्छा लगता है। शिष्याय फलं रोचते। गुरवे दुग्धं रोचते।

नियम २४—(चतुर्थी) क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य और असूय अर्थ की धातुओं के साथ जिस पर क्रोध किया जाय, उसमें चतुर्थी होती है। गुरुः दुर्जनाय (दुर्जन पर) क्रुध्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति।

सूचना—यत्, तत्, एतत्, किम् शब्दों के नपुंसक लिंग के रूप स्मरण करो। स्मृ धातु के पाँच लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—लेखन्या संचिकायां लेखं लिख। मसीपात्रे मसी वर्तते। गुरुः कठिन्या श्यामपट्टे लिखति। तव संचिकायां कति पृष्ठानि सन्ति? कर्गदे शोभनं लिख। बालकाय फलं रोचते। गुरुः मूर्खाय कुप्यति, क्रुध्यति च। यानि पुष्पाणि सुन्दराणि सन्ति, तानि आनय। कानि फलानि मधुराणि सन्ति?

सुभाषित—आपदर्थे धनं रक्षेत्-विपत्ति के समय के लिए धन बचाकर रखे। आत्मानं सततं रक्षेत्-अपनी सदा रक्षा करे। यथेच्छसि तथा कुरु—जैसी इच्छा हो, वैसा करो।

(क) संस्कृत बनाओ—

कापी में कलम से लेख लिखो। मेरी दावात में स्याही है। राम चाक से ब्लैक बोर्ड पर श्लोक लिखता है। मेरी कापी में दस पृष्ठ हैं। कागज पर स्वच्छ लिखो। बालक को क्या अच्छा लगता है ? उसको फल अच्छा लगता है। राजा दुर्जन पर क्रोध करता है। यह सुन्दर फूल है। ये मधुर फल हैं। वह फूल यहाँ लावो। तुम क्या चाहते हो ? मैं वह पुस्तक चाहता हूँ। जो फल मीठे हों, उन्हें बालक को दो। तुम किस घर में रहते हो ? मैं इस घर में रहता हूँ। अपनी सदा रक्षा करे। जैसा चाहो, वैसा करो। मैंने अपना पाठ याद किया। तुम पाठ याद करो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

त्वं लेखन्या किं लिखसि ? तव संचिकायां कति पृष्ठानि सन्ति ? तस्मै बालकाय किं रोचते ? त्वं कस्मिन् विद्यालये पठसि ? नृपः कस्मै क्रुध्यति ? गुरुः कस्मै कुप्यति ? कं सततं रक्षेत् ? किमर्थं धनं रक्षेत् ? तस्मिन् वृक्षे कति खगाः सन्ति ?

(ग) अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करो—

एतं बालकं फलं रोचते। गुरुः कुशिष्यं कुप्यति। नृपः दुर्जनं क्रुध्यन्ति। अहं तं नगरं निवसामि। मम संचिकायाम् दश पृष्ठं सन्ति। वृक्षे पञ्च पुष्पम् अस्ति।

(घ) इन सर्वनामों के नपुंसक लिंग में रूप लिखो—

किम्, यत्, तत्, एतत्

अभ्यास १३

शब्दावली—क्रीडकः = खिलाड़ी, क्रीडाक्षेत्रम् = खेलका मैदान, कन्दुकम् = गेंद, यष्टिका = हॉकी, पादकन्दुकम् = फुटबाल, आसन्दिका = कुर्सी, फलकम् = मेज, लेखनपीठम् = डेस्क, काष्ठासनम् = बेंच, यवः = जौ। अधीते – पढ़ता है, वारयति = हटाता है। श्रु = सुनना, स्थापय = रखना।

नियम २५—(पंचमी) अपादान कारक में पंचमी विभक्ति होती है। वृक्षात् पत्रं पतति। अश्वात् नरः अपतत्।

नियम २६—(पंचमी) जिससे विद्या पढ़ी जाय, उसमें पञ्चमी होती है। गुरोः पठति। उपाध्यायात् रामायणम् अधीते।

नियम २७—(पंचमी) जिस वस्तु से किसी को हटाया जाय, उसमें पंचमी होती है। क्षेत्रात् पशुं वारयति। पुत्रं पापात् निवारयति।

सूचना—यत्, तत्, एतत्, किम् के स्त्रीलिंग के रूप स्मरण करो। श्रु धातु (संख्या १४) के लट् आदि पाँच लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—क्रीडकः क्रीडाक्षेत्रे पादकन्दुकेन क्रीडति। केचित् (कोई) यष्टिकाभिः कन्दुकं ताडयन्ति। गुरुः आसन्दिकायां सीदति। शिष्याः काष्ठासने सीदन्ति। फलके पुस्तकानि स्थापय। गुरोः विद्यां पठ। बालः वृक्षात् अपतत्। शिष्यं पापात् निवारय। सा बालिका तस्यां कक्षायां पठति। तासु लतासु पुष्पाणि सन्ति। कस्यै बालिकायै पुस्तकानि यच्छसि? धर्मं शृणु। स शब्दम् अशृणोत्।

सुभाषित—लोभः पापस्य कारणम्—लोभ पाप का कारण है। मा गृधः कस्यस्विद् धनम्—किसी दूसरे के धन का लालच न करो।

(क) संस्कृत बनाओ—

खिलाड़ी क्रीडाक्षेत्र में खेलते हैं। तुम फुटबाल से खेलो। तुम हाकी से गेंद को मारो। खेल के मैदान में प्रतिदिन खेलो। गुरु कुर्सी पर बैठे हैं। शिष्य बेंच पर बैठें। डेस्क पर अपनी कापी रखो। मेज पर पुस्तकें हैं। सैनिक घोड़े से गिरा। वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। शिष्य गुरु से गीता पढ़ता है। वह आचार्य से विद्या पढ़ता है। पिता पुत्र को पाप से हटाता है। रमा किस कक्षा में पढ़ती है? वह दसवीं (दशम्याम्) कक्षा में पढती है। तुम किस बालिका को फल और फूल देते हो?

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

क्रीडाक्षेत्रे के क्रीडन्ति? त्वं यष्टिकया किं ताडयसि? शिष्याः कुत्र सीदन्ति? गुरुः कुत्र असीदत्? सा कस्मात् गीतां पठति? कः पुत्रं पापात् वारयति? त्वं कस्यां कक्षायां पठसि? त्वं फलानि कस्यै यच्छसि?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

रमा दशम्यां······अधीते।
नवम्यां······शीला पठति।
तस्यां लतायां····· पुष्पाणि सन्ति।
त्वं····· लतां पश्यसि?
······कक्षायां दश छात्राः सन्ति।
······लतासु पत्राणि सन्ति।
······बालिकायै फलं यच्छ।
त्वं······कक्षायां पठसि?

(घ) इन सर्वनामों के स्त्रीलिंग में रूप लिखो—

किम्, यत्, तत्, एतत्।

अभ्यास १४

शब्दावली—सर्वः = सब, विष्टरः = बिस्तर वस्त्रम् = वस्त्र, अधो-वस्त्रम् = धोती, शाटिका = साड़ी, कञ्चुकः = कुर्ता, पादयामः = पायजामा, आप्रपदीनम् = पैंट, शिरस्कम् = टोपी, शय्या = बिस्तर, प्रच्छदः = चादर, नीशारः = रजाई, कम्बलम् = कम्बल, शिरस् = सिर, धारय = रखना, पहनना, प्रसारय = बिछाना, बिभेति = डरता है, त्रायते = बचाता है, उद्भवति = निकलती है, निलीयते = छिपता है। पटुतरः अधिक चतुर।

नियम २८—(पंचमी) भय और रक्षा अर्थ की धातुओं के साथ भय के कारण में पंचमी होती है। चोराद् बिभेति = चोर से डरता है। सैनिकः बालं चोरात् त्रायते—सैनिक बालक को चोर से बचाता है।

नियम २९—(पंचमी) उद्भवति, प्रभवति, जायते (ये निकलना या उत्पन्न होना अर्थ में हों तो), निलीयते (छिपता है) के साथ पंचमी होती है। हिमालयात् गङ्गा उद्भवति। बीजेभ्यः अङ्कुराः जायन्ते। चोरः सैनिकात् निलीयते।

नियम ३०—(पंचमी) तुलना अर्थ में जिससे तुलना की जाती है, उसमें पंचमी होती है। रामात् कृष्णः पटुतरः = राम से कृष्ण अधिक चतुर है। धनात् विद्या गुरुतरा = धन से विद्या बढ़कर है।

उदाहरण वाक्य—रामः अधोवस्त्रं कञ्चुकं शिरस्कं च धारयति। कृष्णः आप्रपदीनं धारयति। शय्यायां प्रच्छदं प्रसारय। विष्टरे कम्बलं नीशारं च स्थापय। कमला शाटिकां धारयति। कञ्चुकं पादयामं च धारय। शिरसि शिरस्कं धारय। सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

(क) संस्कृत बनाओ—

सब सुख चाहते हैं। सब में आत्मा है। तुम कुर्ता और धोती पहनो। वह पैंट पहनता है। उमा साड़ी पहनती है। बिस्तर पर चादर बिछावो। शय्या पर कम्बल और रजाई रखो। सिर पर टोपी पहनो। बालक चोर से डरता है। सैनिक शिशुको चोर से बचाता है। गंगा हिमालय से निकलती है। बीजों से अंकुर उत्पन्न होते हैं। बालक सिपाही से छिपता है। कृष्ण देवदत्त से अधिक चतुर है। बल से बुद्धि बढ़कर है।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

सर्वस्मिन् किम् अस्ति ? सर्वे किम् इच्छन्ति ? उमा किं धारयति ? शिरसि किं धारय ? विष्टरे किं स्थापय ? बालकः कस्मात् बिभेति ? कः बालं चोरात् त्रायते ? गङ्गा कुतः उद्भवति ? रामात् कः पटुतरः ? धनात् का गुरुतरा अस्ति ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

सर्वः सुखम्……(इष्) ।
सर्वस्मिन्……अस्ति ।
बलात्……गुरुतरा ।
बीजेभ्यः अङ्कुराः…… ।
कृष्णः भ्रातुः…… ।
विष्टरे……प्रसारय ।
चोरः……निलीयते ।
गङ्गा हिमालयात्…… ।

(घ) सर्व शब्द के पुंलिंग के रूप लिखो।

(ङ) दिव् और नृत् धातु के लोट् और लङ् के रूप लिखो।

अभ्यास १५

शब्दावली—इदम् = यह, अन्नम् = अन्न, भोजनम् = भोजन, पाचकः = रसोइया, रोटिका = रोटी, सूपः = दाल, शाकम् = साग, ओदनम् = चावल, भक्तम् = भात, मोदकः = लड्डू, पायसम् = खीर, मिष्टान्नम् = मिठाई, सिता चीनी, नवनीतम् = मक्खन, घृतम् घी, पच् = पकाना, प्रक्षिप् = डालना, नश् - नष्ट होना भ्रम् = घूमना ।

नियम ८१—(षष्ठी) संबन्ध कारक के अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है । इदं रामस्य पुस्तकम् अस्ति । इदं देवदत्तस्य गृहम् अस्ति ।

नियम ८२ (षष्ठी) स्मरण अर्थ की धातुओं के साथ (खेदपूर्वक स्मरण में) कर्म में षष्ठी होती है । शिशुः मातुः स्मरति-शिशु माता को खेदपूर्वक स्मरण करता है ।

सूचना इदम् शब्द (संख्या ३२) के पुंलिंग के रूप स्मरण करो । नश् और भ्रम् धातुओं (संख्या ३९,४०) के पाँच लकारों के रूप स्मरण करो ।

उदाहरण वाक्य—अयं बालकः भोजनं करोति । इमं बालकं पश्य । अस्मै बालकाय मोदकं यच्छ । अस्य बालकस्य इदं पुस्तकं वर्तते । अस्मिन् वृक्षे खगाः सन्ति । पाचकः ओदनं शाकं च पचति । अहं रोटिकां सूपं भक्तं शाकं पायसं च भक्षयामि । तस्मै बालकाय मिष्टान्नं नवनीतं च यच्छ । दुग्धे पायसे च सितां प्रक्षिप । सूपे लवणं क्षिप । भूकम्पेन गृहम् अनश्यत् । बालकाः क्षेत्रे भ्राम्यन्ति ।

सुभाषित—अति सर्वत्र वर्जयेत्–सब कामों में अति न करे । अति-लोभो न कर्तव्यः-बहुत लालच नहीं करना चाहिए । श्रद्धया देयम्-श्रद्धा से दान दो । श्रिया देयम्–धन होनेपर दान दो ।

(क) संस्कृत बनाओ —

यह मेरा घर है। यह रामकी पुस्तक है। यह गंगा का जल है। शशु मां को खेदपूर्वक स्मरण करता है। इस वृक्ष को देखो। इस शिष्य को फल दो। इस पेड़ से पत्ता गिरा। इस बालक का नाम कृष्ण है। इस घर में सात आदमी रहते हैं। मैं भोजन में रोटी, दाल, साग और भात खाता हूँ। कृष्ण दूध और मक्खन खाता है। दाल में घी डालो। दूध में चीनी डालो। रसोइया भोजन पकाता है। वह खीर और मिठाई खाता है। भूकम्प से गाँव नष्ट हो गया। प्रातः मैदान में घूमो। बालक मैदान में घूम रहे हैं।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

क्षेत्रे के भ्राम्यन्ति ? भूकम्पेन किम अनश्यत् ? दुग्धे किं क्षिप ? सूपे किं क्षिप ? पाचकः किं पचति ? त्वं किं भक्षयसि ? तस्मै बालकाय किं यच्छसि ? अस्मिन् वृक्षे कति खगाः सन्ति ? अस्य बालकस्य किं नाम अस्ति ? अस्मात् वृक्षात् किं पतति ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

इमं बालकं फलं यच्छ। अस्मिन् वृक्षे सप्त खगाः अस्ति। त्वं क्षेत्रे भ्राम्यतु। मम पुस्तकानि अनश्यत्।

(घ) इदम् शब्द के पुंलिग के रूप लिखो।

(ङ) नश् और भ्रम् धातुओं के लङ् और विधिलिङ् के रूप लिखो।

अभ्यास १६

शब्दावली—भवनम् = मकान, द्वारम् = दरवाजा, कपाटम् = किवाड़, गवाक्षः = खिड़की, प्राङ्गणम् = आंगन, सोपानम् = सीढ़ी, भवनपृष्ठम् = छत, कक्षः = कमरा, उपवेशकक्षः = ड्राइंगरूम, शयनकक्षः = सोने का कमरा, कुट्टिमम् = फर्श। धाव् = धोना, दौड़ना, तुद् = दुःख देना, इष् (इच्छ्) = चाहना। पटुतमः = सबसे चतुर, श्रेष्ठः = श्रेष्ठ।

नियम ३३—(षष्ठी) उपरि (ऊपर), अधः (नीचे), नीचैः (नीचे) पुरः, अग्रे, अग्रतः (आगे), पश्चात् (पीछे) के साथ षष्ठी होती है। गृहस्य उपरि, अधः, पुरः, पश्चात् च बालकाः सन्ति।

नियम ३४—(षष्ठी) बहुतों में से एक को छाँटने के अर्थ में, जिनमें से छाँटा जाय, उनमें षष्ठी और सप्तमी दोनों होती हैं। छात्राणा छात्रेषु रामः श्रेष्ठः। कवीनां कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।

सूचना—इदम् शब्द (संख्या ३२) के नपुंसक लिंग के रूप स्मरण करो। तुद् और इष् धातु (संख्या ४६, ४७) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—मम भवने द्वारं कपाटं गवाक्षाः प्राङ्गणं च सन्ति। सोपानेन भवनपृष्ठम् आरोह। उपवेशकक्षे पठ। शयनकक्षे शयनं कुरु। प्रतिदिनं कुट्टिमं धाव। इदं गृहं शोभनं वर्तते। अस्मिन् कक्षे एतानि वस्तूनि सन्ति। कमपि न तुद। सदा सुखम् इच्छ। स धनम् ऐच्छत्।

सुभाषित—यथा राजा तथा प्रजा—जैसा राजा वैसी प्रजा होती है। यथा वृक्षस्तथा फलम्—जैसा पेड़ वैसा फल। यथा बीजं तथाऽङ्कुरः—जैसा बीज वैसा अंकुर।

(क) संस्कृत बनाओ —

तेरे मकान में दरवाजे, किवाड़, खिड़कियाँ, आंगन और कमरे हैं। आंगन में बैठो। इस सीढ़ी से छत पर चढ़ो। ड्राइंगरूम में पढ़ो और सोने के कमरे में शयन करो। फर्श और कमरे को धोओ। किसी को दुःख न दो। सदा उन्नति चाहो। इस मकान के ऊपर, नीचे, आगे और पीछे बालक हैं। मकान के ऊपर जाओ। बालकों में श्याम सबसे चतुर है। जैसा राजा वैसी प्रजा। जैसा गुरु वैसा शिष्य। इस कमरे में कितनी पुस्तकें हैं ?

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

अस्मिन् भवने कति कक्षाः सन्ति ? कथं भवनपृष्ठम् आरोहति ? इदं भवनं कीदृशम् अस्ति ? प्रतिदिनं किं धाव ? क्व पठ ? क्व शयनं कुरु ? कक्षायां कः पटुतमः अस्ति ? सदा किम् इच्छ ? कविषु कः श्रेष्ठः ? तव कक्षे कति पुस्तकानि सन्ति।

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

भवने······सन्ति।
भवनपृष्ठम्······आरोह।
कुट्टिमं प्रतिदिनं······।
······कक्षे······वस्तूनि सन्ति।
सदा······इच्छ।
कवीनां······श्रेष्ठः।

(घ) इदम् शब्द के नपुंसकलिंग के रूप लिखो।

(ङ) तुद् और इष् धातु के लट्, विधिलिङ् और लृट् के रूप लिखो।

अभ्यास १७

शब्दावली—शरीरम् = शरीर, मुखम् = मुँह, शिर: = सिर, केशा: = बाल, हस्त = हाथ, पाद = पैर, नासिका = नाक, नेत्रम् = नेत्र, उदरम् = पेट, पृष्ठम् = पीठ, दन्ता: = दाँत, जिह्वा = जीभ, कण्ठ: = गला, वक्षःस्थलम् = छाती, भुजौ = बाँह, स्पृश = छूना, प्रच्छ् (पृच्छ्) = पूछना, कृते = लिए, समक्षम् = सामने, अन्त:, अन्तरे = (अन्दर), पार्श्वम् = पास, अन्तिकम् = पास।

नियम ३५—(षष्ठी) कृते, समक्षम्, मध्ये, अन्त:, अन्तरे के साथ षष्ठी होती है। भोजनस्य कृते—भोजन के लिए। गृहस्य समक्षम्, मध्ये, अन्त: वा बाला: सन्ति—घर के सामने, बीच में, अन्दर बालक हैं।

नियम ३६—(षष्ठी) दूर और समीपवाची शब्दों के साथ षष्ठी और पंचमी दोनों होती हैं। ग्रामस्य ग्रामात् वा दूरम्–गाँव से दूर। गुरो: समीपात् पार्श्वात् अन्तिकात् वा–गुरु के पास से।

सूचना—इदम् स्त्रीलिंग के (शब्द ३२) के रूप स्मरण करो। स्पृश् और प्रच्छ् (संख्या ४८, ४९) धातुओं के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—मम शरीरे मुखं शिर: केशा: हस्तौ पादौ नासिका नेत्रे दन्ता: जिह्वा उदरं पृष्ठ वक्षःस्थलं च सन्ति। मुखं स्पृश धाव च। शिरसि तैलं मर्द। त्वं भुजौ प्रसारय। गुरुं प्रश्नं पृच्छ। जिह्वया सत्यं वद। भोजनेन उदरं पूरय। केशान् पादौ मुखं च स्पृश। अध्ययनस्य कृते विद्यालयं गच्छ। अस्मै बालिकायै फलं यच्छ अस्यां लतायां षट् पुष्पाणि सन्ति। इमां मातरं प्रणम। अस्या: बालिकाया: इदं पुस्तकम् अस्ति।

(क) संस्कृत बनाओ—

मेरे दो हाथ हैं। मेरे मुँह में दाँत हैं। शरीर पर तेल लगावो। बालों को धोओ। आँख से देखो और हाथ से काम करो। जीभ से सदा मधुर वचन बोलो। वह दोनों हाथ फैलाता है। गुरु से प्रश्न पूछो। तुम क्या पूछते हो। मैं एक प्रश्न पूछता हूँ। तुम क्या छूते हो? मैं फूल छूता हूँ। गुरु ने प्रश्न पूछा। मैं अध्यापक से प्रश्न पूछूंगा। मलिन वस्त्र को न छूओ। अध्ययन के लिए गुरु के पास जाओ। घर के सामने बालक है। मैं गुरु के पास से आ रहा हूँ। गाँव से दूर नदी है। इस बालिका को देखो। इस कन्या को फल दो। इस लता पर दस फूल हैं।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

शिरसि किं मर्दय? गृहस्य अन्तः के सन्ति? कं प्रश्नं पृच्छ? किं प्रसारय? केन उदरं पूरय? किमर्थं विद्यालयं गच्छ? कं स्पृशसि? कां प्रणम? जिह्वया किं वद?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(स्पृश् और प्रच्छ् धातु)

स मुखं······।
मलिनं वस्त्रं न······।
इमां लतां······।
गुरुं प्रश्नं······।
गुरुः शिष्यं प्रश्नं······।
बालिका प्रश्नं······।

(घ) इदम् शब्द के स्त्रीलिंग के रूप लिखो।

(ङ) स्पृश् और प्रच्छ् धातु के लट्, लोट् और लङ् के रूप लिखो।

अभ्यास १८

शब्दावली—पुत्रः = लड़का, पुत्री = लड़की, जनकः = पिता, जननी = माता, भ्राता = भाई, पितृव्यः = चाचा, मातुलः = मामा, अग्रजः = बड़ा भाई, अग्रजा = बड़ी बहिन, अनुजः = छोटा भाई, अनुजा = छोटी बहिन, पौत्रः = पोता, नप्ता = नाती, श्वशुरः = ससुर, श्वश्रूः = सास, श्यालः = साला, भगिनी = बहिन। चुर् (चोरय) = चुराना, चिन्त् (चिन्तय) = सोचना। यत् = कि।

नियम ३७—(सप्तमी) अधिकरण कारक में सप्तमी होती है। स विद्यालये पठति। गृहे वस। नगरे जनाः सन्ति। वृक्षे खगाः सन्ति।

नियम ३८—(सप्तमी) 'विषय में' 'बारे में' अर्थ में तथा समय-बोधक शब्दों में सप्तमी होती हैं। मम धर्मे अभिलाषः अस्ति—मेरी धर्म के विषय में अभिलाषा है। प्रातःकाले भ्रमणार्थं गच्छ। सायंकाले सन्ध्यां कुरु। शैशवे विद्या पठ।

सूचना—युष्मद् शब्द (२५) के पूरे रूप स्मरण करो। चुर् और चिन्त् (६०,६१) धातुओं के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—मम गृहे जनकः, जननी, अग्रजः, अनुजः, पितृव्यः, भगिनी च सन्ति। मम श्वशुरः श्वश्रूः श्यालः च सज्जनाः सन्ति। मम पितृव्यस्य द्वौ पुत्रौ, द्वे पुत्र्यौ, एकः पौत्रः च सन्ति। कस्यापि किमपि न चोरय। स पुस्तकम् अचोरयत्। अहं धनं न चोरयिष्यामि। सदा शुभं चिन्तय। सः अचिन्तयत् यत् अहं श्रमेण संस्कृतं पठिष्यामि।

सुभाषित—ऋणकर्ता पिता शत्रुः—कर्ज लेने वाला पिता शत्रु है। अतिथिदेवो भव—अतिथि को देवता समझो। यतो धर्मः ततो जयः—जहाँ धर्म है, वहाँ विजय है।

(क) संस्कृत बनाओ—

राम के दो पुत्र, दो पुत्रियाँ, एक भाई, एक चाचा और एक मामा हैं। मेरे दो बड़े भाई, दो छोटे भाई, एक बहन और एक साला हैं। कृष्ण के सास, ससुर, नाती और पोता सज्जन हैं। किसी की कोई वस्तु न चुराओ। चोर ने राम का धन चुराया। मैं कभी धन नहीं चुराऊँगा। सदा अच्छी बात सोचो। उसने सोचा कि वह परिश्रम से कार्य करेगा। मेरी ज्ञान के विषय में अभिलाषा है। प्रातःकाल घूमने जाओ। सायंकाल व्यायाम करो। मध्याह्न में खाना खाओ। पेड़ पर पक्षी हैं। घर में आदमी हैं। बचपन में विद्या पढ़ो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

कस्यापि किं न चोरय ? सदा किं चिन्तय ? चोरः किम् अचोरयत् ? तव कति पितृव्याः सन्ति ? रामस्य कति भ्रातरः आसन् ? तव भगिनी किं करोति ? कः पिता शत्रुः ? कुत्र जयः ? प्रातःकाले किं कुरु ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

त्वां फलं ददामि। मम धर्मस्य अभिलाषः अस्ति। त्वं धनम् अचोरयत्। त्वम् इदम् अचिन्तयत्। प्रातःकालं भ्रमणं कुरु। गृहे जनाः अस्ति। वृक्षे खगः सन्ति।

(घ) युष्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) चुर् और चिन्त् धातुओं के लोट्, विधिलिङ् और लृट् के रूप लिखो।

अभ्यास १९

शब्दावली—स्वर्णम् = सोना, रजतम् = चाँदी, लौहम् = लोहा, चक्रम् = पहिया, स्वर्णकारः = सुनार, लौहकारः = लोहार, चर्मकारः = चमार, कुम्भकारः = कुम्हार, नापितः = नाई, रजकः = धोबी पादत्राणम् = जूता, घटः = घड़ा, सैनिकः = सिपाही। रक्ष् = रक्षा करना, रच् (रचय) = बनाना, निर्मापि (निर्मापय) = बनाना, कृन्त् = काटना।

नियम ३९—(सप्तमी) संलग्न और चतुर अर्थ वाले शब्दों के साथ सप्तमी होती है। सः पठने संलग्नः, तत्परः, युक्तः, आसक्तः वा अस्ति—वह पढ़ाई में लगा हुआ है। रामः विद्यायां निपुणः अस्ति। कृष्णः शास्त्रे चतुरः दक्षः वा अस्ति।

नियम ४०—(सप्तमी) प्रेम, आसक्ति और आदर सूचक शब्दों और धातुओं के साथ सप्तमी होती है। तस्य मयि स्नेहः अस्ति। स रमायाम् आसक्तः अस्ति। मम गुरौ आदरः अस्ति।

सूचना—अस्मद् शब्द (२६) के पूरे रूप स्मरण करो। कथ् और और भक्ष् धातुओं (६२,६३) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—स्वर्णकारः स्वर्णेन आभूषणं रचयति। लौहकारः लौहेन पात्राणि निर्मापयति। नापितः केशान् कृन्तति। कुम्भकारः घटं चर्मकारः च पादत्राणं निर्मापयति। सैनिकः नगरं रक्षति। रजकः वस्त्रं धावति। मया सह क्रीड। मह्यं फलं रोचते। मयि शौर्यं वर्तते। सत्यं कथय। अहम् असत्यं न कथयिष्यामि। पथ्यं भोजनं भक्षय। छात्राणां गुरौ आदरः अस्ति।

(क) संस्कृत बनाओ—

सुनार सोने से गहना बनाता है। लोहार लोहे से पहिया बनाता है। नाई जाल बनाता है। कुम्हार घड़ा बनाता है। सुनार चाँदी के गहने बनाता है। सिपाही नगर की रक्षा करता है। तुम मेरे साथ खेलो। मेरी पुस्तक मुझे दो। गुरु का मुझपर स्नेह है। हमारा मित्र काशी में रहता है। हमारे गाँव में विद्यालय है। राम शस्त्रविद्या में निपुण है। कृष्ण गान में चतुर है। मैं खेल में लगा हुआ हूँ।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

स्वर्णकारः किं रचयति ? नापितः किं कृन्तति ? रजकः किं धावति ? कुम्भकारः किं करोति ? चर्मकारः किं निर्मापयति ? कस्य गुरौ आदरः अस्ति ? कः गाने चतुरः अस्ति ? त्वं किं भक्षयसि ? किं कथय ? अहं किं कथयिष्यामि ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(कथ्, भक्ष् धातु)

अहं सत्यं ... ... ।
ते असत्यं न .... ।
वयं कथां .... ।
यूयं भोजनं .... ।
ते पथ्यं .... ।
अजीर्णे भोजनं न ... ।

(घ) अस्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) कथ् और भक्ष् धातु के लट्, लङ् और विधिलिङ् के रूप लिखो।

अभ्यास २०

शब्दावली– गौः = गाय, अश्वः = घोड़ा, वृषभः = बैल, उष्ट्रः = ऊँट, सिंहः = शेर, मृगः = हिरन, वानरः = बन्दर, कुक्कुरः = कुत्ता, मार्जारी = बिल्ली, अजा = बकरी, महिषी = भैंस, रानी, मूषकः = चूहा, गर्दभः = गधा, श्रृगालः = गीदड़, घासः = घास, तृणम् = घास, भारः = भार, बोझ; वह् = ढोना, चर् = चरना, घूमना, क्षिप् = फेंकना ।

नियम ४१–(सप्तमी) एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होने पर पहली क्रिया में सप्तमी होती है । रामे वनं गते भरतः आगतः = राम के वन जाने पर भरत आए । मयि आगते स गृहं गतः ।

नियम ४२–(सप्तमी) फेंकना अर्थ की धातुओं के साथ तथा विश्वास और श्रद्धा अर्थ वाली धातुओं और शब्दों के साथ सप्तमी होती है । रामः मृगे बाणं क्षिपति । स धर्मे विश्वसिति । मम धर्मे श्रद्धा अस्ति ।

सूचना–एक शब्द के (३४) के तीनों लिंगों में रूप स्मरण करो । अस् धातु (२४) के पाँचों लकारों में रूप स्मरण करो ।

उदाहरण वाक्य–गौः दुग्धं ददाति । अश्वः भारं वहति । महषी, उष्ट्रः वृषभः च घासं चरन्ति । वने सिंहाः, वानराः, मृगाः, शृगालाः च भ्रमन्ति । मार्जारी दुग्धं पिबति । ग्रामे गर्दभाः, अजाः, कुक्कुराः मूषकाः च भवन्ति । मृगे बाणं न क्षिप । स मातरि विश्वसिति । मम गुरौ श्रद्धा अस्ति । त्वयि गृहं गते सः अत्र आगतः । ईश्वरे श्रद्धां कुरु । एकः बालकः एकस्यै बालिकायै एकं फलं यच्छति । एकस्मिन् नगरे मम गृहम् अस्ति । सः अत्र आसीत्, त्वम् आसीः, अहं च आसम् ।

(क) संस्कृत बनाओ—

गाय दूध देती है। मेरे घर में भैंस, बकरी, कुत्ता, बिल्ली और चूहे हैं। जंगल में शेर, हिरन, बन्दर और गीदड़ रहते हैं। घोड़े, बैल, ऊँट और गधे बोझ ढोते हैं। गाय, भैंस और बकरी घास खाते हैं। हिरन पर बाण न फेंको। मेरे आने पर वह घर आया। राम के वन जाने पर भरत अयोध्या आये। तुम सत्य पर श्रद्धा करो। वह गुरु पर विश्वास करता है। एक बालिका को एक फल दो। एक गाँव में मैं रहता हूँ। तुम कहाँ थे ? मैं यहाँ ही था।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

गौ: किं ददाति ? वृषभा: किं चरन्ति ? वने के पशव: भवन्ति ? ग्रामे के पशव: भवन्ति ? के पशव: भार वहन्ति ? के पशव: तृणं चरन्ति ? रामे वनं गते क: आगत: ? स धर्मे किं करोति ? कस्मिन् श्रद्धां कुरु ? कस्मिन् विश्वासं कुरु ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

एकं बालकं दुग्धं देहि। एकां बालिकां फलं यच्छ। एके वने सिंह: आसीत्। एकां लतायां पुष्पाणि सन्ति। अहम् अत्र आसीत्। वयम् अत्र आसन्। त्वम् अत्र अस्तु। ते तत्र स्यात्।

(घ) एक शब्द के पुंलिंग और स्त्रीलिंग में रूप लिखो।

(ङ) अस् धातु के लोट्, लङ्, विधिलिङ् में रूप लिखो।

अभ्यास—२१

शब्दावली— खगः = पक्षी, काकः = कौवा, शुकः = तोता, सारिका = मैना, मयूरः = मोर, बकः = बगुला हंसः — हंस कोकिलः = कोयल, चटका = चिड़िया, कपोतः = कबूतर, कुक्कुटः = मुर्गा, उलूकः = उल्लू, गृध्रः = गिद्ध, आकाशः = आकाश। उड्डयते – उड़ता है। कीदृशम् = कैसा, ईदृशम् = ऐसा।

नियम ४३—(यण् संधि) इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ को र्, ऌ को ल् होता है, बाद में कोई स्वर हो तो। सवर्ण (वैसा ही) स्वर हो तो नहीं। जैसे—यदि + अपि = यद्यपि। मधु + अरिः = मध्वरिः। पितृ + आ = पित्रा। ऌ + आकृतिः = लाकृतिः।

नियम ४४—(अयादि संधि) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् होता है, बाद में कोई स्वर हो तो। शब्द के अन्तिम ए और ओ के बाद अ होगा तो नहीं। (१) हरे + ए = हरये। जे + अः = जयः। (२) भो + अनम् = भवनम्। (३) नै + अकः = नायकः। (४) पौ + अकः = पावकः।

सूचना—द्वि शब्द (३५) के तीनों लिंगों में रूप स्मरण करो। कृ धातु (५६) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य :—वृक्षे काकाः, शुकाः, सारिकाः, कपोताः, गृध्राः च सन्ति। मयूरः नृत्यति। उलूकः रात्रौ वदति। सरोवरे हंसाः बकाः च सन्ति। खगाः चटकाः च आकाशे उड्डयन्ते। द्वौ बालकौ, द्वे बालिके च अत्र सन्ति। द्वाभ्यां छात्राभ्यां द्वे पुस्तके देहि। त्वं कार्यं कुरु। सः कार्यं कुर्यात्। अहं कार्यम् अकरवम्। अहं श्रमं करिष्यामि।

(क) संस्कृत बनाओ —

पक्षी उड़ता है। आकाश में हंस, गिद्ध, बगुले और कौवे उड़ रहे हैं। उल्लू रात में बोलता है। मोर नाचता है। मुर्गा बोलता है। कोयल मधुर बोलती है। तालाब में हंस और बगुले हैं। दो बालकों को दो पुस्तकें दो। दो पेड़ों पर दो चिड़ियाँ हैं। तुम सदा काम करो। वह काम करे। मैं अध्ययन करूँ उसने यह काम किया। तुमने क्या काम किया ? मैंने यह काम किया। मैं अब परिश्रम करूँगा। वे अब क्या काम करेंगे ?

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

खगाः कुत्र उड्डयन्ते ? मयूरः किं करोति ? उलूकः कदा वदति ? सरोवरे के खगाः सन्ति ? वृक्षे के पक्षिणः सन्ति ? कोकिलः कीदृशं वदति ? कुक्कुटः किं करोति ? हंसः कुत्र अस्ति ? त्वम् इदानीं किं करिष्यसि ? बालकाः किं कुर्वन्ति ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो —

आकाशे खगाः······ ।
मयूरः··· · ।
······बालकाभ्यां······पुस्तके देहि ।
······वृक्षयोः······खगौ स्तः ।
अहं······अकरवम् ।
वयं······करिष्यामः ।

(घ) कृ धातु के लट्, लङ्, विधिलिङ् के रूप लिखो।

(ङ) सन्धि करो—प्रति + एकः। अनु + अयः। मातृ + आ। गुरो + ए। शे + अनम्। गै + अकः। द्वौ + इमौ।

(च) सन्धि-विच्छेद करो—यद्यपि। अन्वयः। मात्रे। लाकृतिः। शयनम्। नयनम्। पवनः। पावकः। गायकः। द्वाविमौ।

अभ्यास—२२

शब्दावली—जलम् = जल, नीरम् = जल, सरोवरः = तालाब, तडागः = तालाब, समुद्रः = समुद्र नदी = नदी मत्स्यः = मछली, दर्दुरः = मेढक, कच्छपः = कछुआ, कूपः = कुआँ, मकरः = मगर, धीवरः = धीवर, तरङ्गः = लहर, कमलम् = कमल, विकस् = खिलना, व्यापादय = मारना, सेव् = सेवा करना, लभ् = पाना, उत्तिष्ठ = उठना।

नियम ४५—(गुण संधि) अ या आ के बाद (१) इ या ई होगा तो दोनों को ए, (२) उ या ऊ होगा तो दोनों को ओ, (३) ऋ होगा तो अर्, (४) ऌ होगा तो अल् होगा। जैसे—गण + ईशः = गणेशः। पर + उपकारः = परोपकारः। महा + ऋषिः = महर्षिः। तव + ऌकारः = तवल्कारः।

नियम ४६—(वृद्धि संधि) अ आ के बाद (१) ए या ऐ होगा तो दोनों को ऐ, (२) ओ और औ होगा तो दोनों को औ। जैसे—अत्र + एव = अत्रैव। महा + ओषधिः = महौषधिः।

सूचना—त्रि शब्द (३६) के तीनों लिंगों के रूप स्मरण करो। सेव् और लभ् धातुओं (१५,१६) के आत्मनेपद लट् के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—जले कमलानि विकसन्ति। सरोवरे मत्स्याः दर्दुराः च सन्ति। समुद्रे मकराः कच्छपाः च तरन्ति। धीवरः मत्स्यान् व्यापादयति। कूपे मधुरं नीरम् अस्ति। अत्र त्रयः छात्राः, तिस्रः बालिकाः त्रीणि पुस्तकानि च सन्ति। त्रिभ्यः बालकेभ्यः, तिसृभ्यः बालिकाभ्यः च त्रीणि फलानि देहि। त्रयाणां छात्राणाम् इमानि त्रीणि पुस्तकानि सन्ति। शिष्याः गुरुं सेवन्ते, विद्यां च लभन्ते। वयं गुरुं सेवामहे।

(क) संस्कृत बनाओ—

तालाब में कमल खिल रहे हैं। सरोवर में मछलियाँ और मेढक हैं। नदी में मछलियाँ और कछुए तैर रहे हैं। कुएँ में मीठा पानी है। समुद्र में मगर और कछुए हैं। धीवर मछली मारते हैं। समुद्र में तरंगें उठ रही हैं। तीन बालकों को तीन पुस्तकें दो। यहाँ तीन छात्र, तीन छात्राएँ और तीन फल हैं। तीन बालिकाओं की ये तीन पुस्तकें हैं। शिष्य गुरु की सेवा करता है। वह धन पाता है। वे पिता की सेवा करते हैं। हम माता की सेवा करते हैं। तू धन पाता है। हम फल पाते हैं।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

जले किं विकसति ? समुद्रे के जलचराः तरन्ति ? सरोवरे के सन्ति ? कूपे कीदृशं जलम् अस्ति ? धीवरः कान् व्यापादयति ? त्वं कं सेवसे ? वयं कं सेवामहे ? ते किं लभन्ते ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

त्रयः बालिकाः। तिस्रः शिष्याः। त्रयः पुस्तकानि। त्रिभ्यः बालिकाभ्यः। त्रयाणां बालिकानाम्। त्रयः गृहाणि।

(घ) सेव् और लभ् धातु के आत्मनेपद लट् के रूप लिखो।

(ङ) सन्धि करो—महा + ईशः। गज + इन्द्रः। हित + उपदेशः। सप्त + ऋषिः। अद्य + एव। सा + एषा। जल + ओघः।

(च) सन्धि-विच्छेद करो—नेति। महेश्वरः। रमेशः। राजर्षिः। सप्तर्षिः। नैतत्। नैवम्। पश्योपरि। गङ्गोदकम्।

अभ्यास—२३

शब्दावली—आम्रम् = आम, दाडिमम् = अनार, द्राक्षा = अंगूर, बदरीफलम् = बेर, जम्बूफलम् = जामुन, कदलीफलम् = केला, सेवफलम् = सेव, दृढबीजम् = अमरूद, नारङ्गफलम् = संतरा, जम्बीरम् = नीबू, भक्षय = खाना, वृध् = बढ़ना, मुद् = प्रसन्न होना। वृत् = होना, भाष् = कहना, ईक्ष् = देखना, यत् = यत्न करना।

नियम ४७—(दीर्घ संधि) अ इ उ ऋ के बाद कोई सवर्ण (सदृश) अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर उसी का दीर्घ अक्षर हो जाता है। अर्थात् (१) अ या आ + अ या आ = आ। (२) इ या ई + इ या ई = ई। (३) उ या ऊ + उ या ऊ = ऊ। (४) ऋ + ऋ = ॠ। जैसे—विद्या + आलयः = विद्यालयः। गिरि + ईशः = गिरीशः। भानु + उदयः = भानूदयः। होतृ + ऋकारः = होतॄकारः।

सूचना—चतुर् शब्द (३७) के तीनों लिंगों में रूप स्मरण करो। वृध्, मुद् (१७,१८) आदि के रूप सेव् के तुल्य चलेंगे। लोट् के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—अहं भोजनान्ते फलानि सेवे। मह्यम् आम्रं दाडिमं द्राक्षा बदरीफलं सेवफलं कदलीफलं दृढबीजं च रोचन्ते। जम्बूफलं नारङ्गफलं जम्बीरं च लाभकराणि वर्तन्ते। त्वं धनेन वर्धस्व, ज्ञानाय यतस्व, सुखेन मोदस्व च। ते सुखेन मोदन्ताम्, सत्यं भाषन्ताम्, मोदन्तां च। स शरीरेण वर्धताम्, सुखं च ईक्षताम्। अहं धनेन मोदै, विद्यायै यतै, सत्यं भाषै च। चत्वारः जनाः चत्वारि फलानि भक्षयन्ति। चतस्रः कन्याः चत्वारि पुष्पाणि जिघ्रन्ति।

(क) संस्कृत बनाओ—

यह आम मधुर है। तुम खाने के लिए सेव, अंगूर, संतरा, केला और जामुन लाओ। भोजन के अन्त में सेब, केला, संतरा खाओ। मुझे फल अच्छे लगते हैं (रुच्)। तुम ज्ञान से बढ़ो। वे धन से प्रसन्न हों। तुम सत्य ही कहो (भाष्)। तुम रमा को देखो (ईक्ष्)। वे धन के लिए प्रयत्न करें (यत्)। वे सुख से रहें (वृत्)। मैं यत्न करूँ और और प्रसन्न रहूँ (मुद्)। उपवन में चार बालक, चार बालिकाएँ और चार फल हैं। चार बालकों और चार बालिकाओं को चार फल दो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

तुभ्यं कानि फलानि रोचन्ते? भोजनान्ते कानि फलानि सेवस्व? कानि फलानि लाभकराणि वर्तन्ते। स कथं वर्धताम्? त्वं कथं मोदस्व? त्वं किमर्थं यतस्व? ते किम् ईक्षन्ते? चतस्रः कन्याः किं जिघ्रन्ति? त्वं चतुर्भ्यः बालकेभ्यः किं यच्छसि?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(लोट् लकार)

ते सत्यं······(भाष्)।
त्वं विद्यायै······(यत्)।
त्वं धनेन······(मुद्)।
स ज्ञानेन······(वृध्)।
ते गुरुम्······(ईक्ष्)।
अहं मातरं······(सेव्)।

(घ) चतुर् शब्द के पुंलिग और स्त्रीलिंग के रूप लिखो।

(ङ) वृध्, मुद् और वृत् धातुओं के लोट् के रूप लिखो।

(च) सन्धि करो—दया+आनन्दः। महा+आत्मा। शिष्ट+आचारः। श्री+ईशः। नदी+ईशः। गुरु+उपदेशः। भानु+उदयः।

अभ्यास २४

शब्दावली—पद्मम् = कमल, **कुमुदम्** = सफेद कमल, **स्थलपद्मम्** = गुलाब, **कुसुमम्** = फूल, **चम्पक:** = चम्पा, **मालती** = चमेली **केतकी** = केवड़ा, **गन्धपुष्पम्** = गेंदा, **स्तबक:** = गुच्छा, **मल्लिका** = बेला। **घ्रा (जिघ्र्)** = सूंघना, सह् = सहना, याच् = मांगना, वन्द् = वन्दना करना, शिक्ष् = सीखना, रम् = लगना, रमण करना, कम्प् = कांपना, पलाय् = भागना। शुभ् = शोभित होना। वा = अथवा, अद्यत्वे = आजकल, नो चेत् = नहीं तो।

नियम ४८—(पूर्वरूप संधि) पद (सुबन्त या तिङन्त) के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो वह हट जाता है। (अ हटा है, इस बात को बताने के लिए ऽ अवग्रह = चिह्न लगा दिया जाता है)। जैसे—

हरे + अव = हरेऽव। सर्वे + अपि = सर्वेऽपि
विष्णो + अव = विष्णोऽव। को + अपि = कोऽपि

सूचना—पञ्चन्, षष्, सप्तन् (३८ से ४०) शब्दों के रूप स्मरण करो। सह् आदि के लङ् आत्मनेपद के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—उपवने स्थलपद्मस्य चम्पकस्य मालत्याः केतक्याः मल्लिकायाः च पुष्पाणि विकसन्ति। सरोवरे पद्मानि, कुमुदानि च शोभन्ते। स साहित्यपठने अरमत, दुःखम् असहत, गुरुम् अवन्दत, शास्त्रम् अशिक्षत च। स न कमपि अयाचत, न अकम्पत, न च पलायत। वन्दे मातरम्। अद्यत्वे स्थलपद्मस्य महत्त्वम् अस्ति। पठ, नो चेत् गुरुः त्वां दण्डयिष्यति।

सुभाषित—सहसा विदधीत न क्रियाम्—शीघ्रता में कोई काम न करो। साहसे श्रीर्वसति—साहस में लक्ष्मी का निवास है। संघे शक्तिः कलौ युगे—कलियुग में संगठन में ही शक्ति है।

(क) संस्कृत बनाओ—

तालाब में कमल खिले हैं। वह गुलाब सूँघता है। बालिका को चम्पा, चमेली, केवड़ा, बेला और गेंदा के फूल दो। फूलों का गुच्छा बनाओ (रच्)। बगीचे में फूलों के पेड़ हैं। आजकल गुलाब का प्रचलन है। उसने गुरु की सेवा की और उनको प्रणाम किया (वन्द्)। उसने व्याकरण सीखा (शिक्ष्)। उसका मन पढ़ने में लगा। चोर भाग गया (पलाय्)। तुम किसी से कुछ न मांगो। माता को प्रणाम (वन्द्)। पढ़ो, नहीं तो पिता तुम्हें दण्ड देंगे (दण्डय)। आजकल तुम कहाँ रहते हो ? (निवस्)।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

कां वन्दे ? कः त्वां दण्डयिष्यति ? कः पलायत ? सरोवरे कानि पुष्पाणि विकसन्ति ? उपवने कानि पुष्पाणि शोभन्ते। सहसा किं न कुर्यात् ? श्रीः कुत्र वसति। कलियुगे कुत्र शक्तिः वर्तते। अद्यत्वे कस्य पुष्पस्य महत्त्वम् अस्ति।

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

स दुःखम् असहत्। ते पठने अरमत्। चोरः पलायत्। त्वं कम् अवन्दत् ? अहं धनम् अयाचम्। गुरुं वन्द। पञ्च बालकाः क्रीडति। सप्त बालकानाम् एतानि पुस्तकानि अस्ति।

(घ) पञ्चन्, षष्, सप्तन् शब्दों के रूप लिखो।

(ङ) इन धातुओं के लङ् आत्मनेपद के रूप लिखो—सह्, याच्।

(च) संधि करो—सो + अपि। रामो + अपि। सर्वे + अत्र। के + अत्र। सो + अद्य। राम + अवदत्। सो + अयम्।

अभ्यास २५

शब्दावली—क्षेत्रम् = खेत, अन्नम् = अन्न, शस्यम् = अन्न (खेत में विद्यमान), गोधूमः = गेहूँ, व्रीहिः = धान (चावल), तण्डुलः = चावल (भूसी रहित), यवः = जौ, चणकः = चना, द्विदलम् = दाल, यवः = जौ, मुद्गः = मूंग, आढकी = अरहर, मसूरः = मसूर, माषः = उड़द, सर्षपः = सरसों, तैलम् = तेल, चूर्णम् = आटा, रसवती = रसोई। ह्यः = बीता हुआ कल, श्वः = आने वाला कल। ओदनम् = भात।

नियम ४९—(श्चुत्व संधि) स् या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग हो तो स् को श् और त वर्ग को च वर्ग होता है। अर्थात्—स् को श्, त् को च्, द् को ज्, न् को ञ्। जैसे—रामस्+च = रामश्च। कस्+चित् = कश्चित्। तत्+च = तच्च। सद्+जनः = सज्जनः। याच्+ना = याच्ञा।

सूचना—अष्टन्, नवन्, दशन् (४१ से ४३) शब्दों के रूप स्मरण करो। सेव् आदि के विधिलिङ् आत्मनेपद के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—मह्यं गोधूमस्य रोटिका रोचते। क्षेत्रे शस्यं भवति। तण्डुलान् ओदनं पच। यवस्य रोटिकां भक्षय। चणकाः रुचिकराः भवन्ति। मुद्गस्य मसूरस्य आढक्याः माषस्य च द्विदलं खाद। सर्षपस्य तैलं शिरसि मर्दय। रसवत्यां भोजनं पच। गोधूमचूर्णं चणकचूर्णं च भक्षय। अहं ह्यः आगच्छम्, श्वः च गमिष्यामि। अत्र अष्ट छात्राः, नव बालिकाः, दश पुस्तकानि च सन्ति। स गुरुं सेवेत, शास्त्रं शिक्षेत, ज्ञानं लभेत च। त्वं पितरं सेवेथाः, वर्धेथाः मोदेथाः च। अहं मातरं सेवेय, वन्देय, मोदेय च। श्वः कार्यम् अद्य कुर्यात्।

(क) संस्कृत बनाओ—

खेत में अन्न होता है। मुझे चने की रोटी अच्छी लगती है। गेहूँ का आटा लाओ। चावल पकाओ। भोजन में मूँग, मसूर, अरहर और उड़द की दाल खाओ। सरसों का तेल सिर पर लगाओ। रसोई में खाना बनाओ (पच्)। वह कल यहाँ आया था। तू परसों (परश्वः) घर जाएगा। कल का काम आज ही कर लो। यहाँ आठ पुस्तकें, नौ छात्राएँ और दस छात्र हैं। तू गुरु की सेवा कर। मैं माता की वन्दना करूँ। वह व्यायाम सीखे।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

तुभ्यं कस्य रोटिका रोचते? भोजने कस्य द्विदलं भक्षय? के रुचिकराः भवन्ति? रसवत्यां किं कुरु? सर्षपस्य तैलं किं कुरु? त्वं कदा आगच्छः? स कदा गमिष्यति? त्वं कं वन्देथाः? श्वः कार्यं कदा कुर्यात्? अहं कं सेवेय? सः किं लभेत?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(विधिलिङ्)

अहं गुरुं······(वन्द्)।
त्वं शास्त्रं······(शिक्ष्)।
वयं धनं······(लभ्)।
यूयं भ्रातरं······(सेव्)।
ते धनेन ······(मुद्)।
त्वं कमपि न······(याच्)।

(घ) अष्टन् और दशन् शब्दों के रूप लिखो।

(ङ) इन धातुओं के विधिलिङ् आत्मनेपद के रूप लिखो—
सेव्, लभ्, याच्, भाष्।

(च) संधि करो—सत्+चित्। सत्+चरित्रः। गुरुस्+च। रामस्+च। कस्+चित्। उद्+ज्वलः। याच्+ना।

अभ्यास २६

शब्दावली—पाचकः = रसोइया, मोदकः = लड्डू, अपूपः = पूआ, रोटिका = रोटी, शाकः = साग, शष्कुली = पूरी, भक्तम् = भात, सूपः = दाल, शर्करा = शक्कर, सिता = चीनी, पायसम् = खीर, मिष्टान्नम् = मिठाई, पक्वान्नम् = पकवान, लवणान्नम् = नमकीन, नवनीतम् = मक्खन, लप्सिका = हलुआ, घृतम् = घी, तक्रम = मट्ठा, सूत्रिका = सेंवई।

नियम ५०—(ष्टुत्व संधि) स् या त वर्ग से पहले या बाद में ष् या टवर्ग कोई भी हो तो स् को ष् और त वर्ग को ट वर्ग होता है। अर्थात् स् को ष्, त् को ट्, द् को ड् और न् को ण्। जैसे—रामस् + षष्ठः—रामष्षष्ठः। इष् + तः—इष्टः। उद् + डीनः—उड्डीनः। विष् + नुः—विष्णुः।

सूचना—विंशतिः (२०) से शतम् (१००) तक की संख्याएं स्मरण करो। सेव् आदि के लृट् आत्मनेपद के रूप स्मरण करो। कुछ में इष्यते वाले रूप लगते हैं और कुछ में स्यते आदि। जैसे—सेविष्यते, मोदिष्यते, याचिष्यते, वर्धिष्यते, ईक्षिष्यते, कूर्दिष्यते। लप्स्यते, रंस्यते।

उदाहरण वाक्य—पाचकः रसवत्यां रोटिकां शष्कुलीम् अपूपान् पायसं च पचति। मह्यं मिष्टान्नं पक्वान्नं लप्सिका सूत्रिका च रोचन्ते। तुभ्यं लवणान्नं नवनीतं तक्रं च रोचन्ते। दशम्यां कक्षायां त्रिंशत्, नवम्यां चत्वारिंशत्, अष्टम्यां षष्टिः, पञ्चम्यां च नवतिः छात्राः सन्ति। त्वं पितरं सेविष्यसे, मोदिष्यसे, वर्धिष्यसे च। स विद्याम् अध्येष्यते, धनं लप्स्यते, सुखेन रंस्यते च। अहं कमपि धनं न याचिष्ये।

(क) संस्कृत बनाओ—

रसोइया पूरी, खीर, पकवान और हलुआ बना रहा है (पच्)। मुझे लड्डू, मिठाई, नमकीन और हलुआ अच्छा लगता है (रुच्)। तुम सेंवई, मक्खन, घी और चीनी खाओ। तुम दाल में घी, दूध में चीनी और मटठे में नमक डालो (क्षिप्)। दसवीं कक्षा में पचास, आठवीं में साठ, सातवीं में सत्तर, छठीं में अस्सी और पाँचवीं में नब्बे छात्र हैं। जो खेलेगा, कूदेगा, पढ़ेगा, वह धन पाएगा, बढ़ेगा, प्रसन्न रहेगा (मुद्) और सुख से आनन्दित होगा (रम्)। वह किसी से धन नहीं माँगेगा।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

तुभ्यं किं मिष्टान्नं रोचते ? पाचकः किं पचति ? दुग्धे किं क्षिप ? किं तुभ्यं तक्रं रोचते ? त्वं भोजने प्रतिदिनं किं खादसि ? यः अध्येष्यते (पढ़ेगा), स किं लप्स्यते ? यः गुरुं सेविष्यते, स किं लप्स्यते ? नवम्यां कक्षायां कति छात्राः सन्ति ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(लृट् लकार)

अहं गुरुं······(सेव्)।
त्वं धनं······(लभ्)।
स सुखेन······(रस्)।
स भवनम्······(ईम्)।
अहं कमपि न······(याच्)।
वृक्षे वानरः ······(कूर्द्)।

(घ) इन धातुओं के लृट् आत्मनेपद के रूप लिखो -

सेव्, मुद् याच्, लभ्, रम्।

(ङ) संधि करो—कृष्+नः। उष्+त्रः। उद्+डयते। दुष्+तः। विष्+नुः। इग्+तिः। तुष्+तिः।

अभ्यास २७

शब्दावली—आपणः = दुकान, आपणिकः = दुकानदार, विपणिः = बाजार, ग्राहकः = लेने वाला, विक्रेता = बेचने वाला, मूल्यम् = मूल्य, मूल्येन = नगद, पण्यम् = बिक्री की वस्तु, क्री = खरीदना, विक्री = बेचना, सहस्रम् = हजार, लक्षम् = लाख, कोटिः = करोड़, अर्बुदम् = अरब, क्रीणाति = खरीदता है, विक्रीणीते = बेचता है।

नियम ५१—(जश्त्व संधि) वर्ग के १, २, ३, ४ (अर्थात् पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण) को अपने वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है, यदि वह पद (शब्द) का अन्तिम अक्षर हो तो। जैसे—सत् + आचारः = सदाचारः। जगत् + ईशः = जगदीशः। अच् + अन्तः = अजन्तः।

नियम ५२—(जश्त्व संधि) वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण को अपने वर्ग का तृतीय अक्षर हो जाता है यदि बाद में तृतीय या चतुर्थ वर्ण हो तो। (यह नियम पद के बीच में लगता है)। जैसे—बुध्+धिः = बुद्धिः। दुघ्+धम् = दुग्धम्। लभ्+धः = लब्धः।

सूचना—नी धातु (२१) के दोनों पदों में पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—विपणौ आपणिकः मूल्येन पण्यानि विक्रीणीते। स आपणात् वस्त्रं क्रीणाति। अहं प्रतिदिनं विपणिं गच्छामि, तत्र च गोधूमं तण्डुलं द्विदलं (दाल) शाकं च क्रीणामि। अहं सदा मूल्येन पण्यं क्रीणामि। धनिकस्य समीपे लक्षं कोटिः च रूप्यकाणि भवन्ति। तीर्थेषु लक्षशः कोटिशः च जनाः नद्यां स्नानं कुर्वन्तिः। अजां ग्रामं नय। स भारम् अत्र आनयत्। भृत्यः भारं नेष्यति नेष्यते वा। पठने समयं नयेत्।

(क) संस्कृत बनाओ--

वह प्रतिदिन बाजार जाता है। दुकानदार नगद सामान बेचता है। जाओ और दुकान से फल लाओ। ग्राहक दुकान से मिठाई खरीदता है। तू बाजार से मिठाई, नमकीन और फल ला। मैं सदा सामान नगद खरीदता हूँ। बाजार से गेहूँ, चावल, दाल, घी और नमक लाओ। उसके पास एक लाख रुपए हैं। तीर्थों पर लाखों लोग गंगा और यमुना में स्नान करते हैं। वह बकरी गाँव में ले जाता हूँ। मैं पुस्तक घर ले जाता हूँ। नौकर बोझा लाया। वह पुस्तकें घर ले जाएगा।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो--

विपणौ आपणिकः किं करोति ? अहं प्रतिदिनं कुत्र गच्छामि ? अहं विपणौ किं क्रीणामि ? स आपणात् किं क्रीणाति ? ग्राहकः पण्यं कथं क्रीणाति ? त्वम् आपणात् किं क्रीणासि ? तीर्थेषु कति जनाः स्नानं कुर्वन्ति ? त्वं पुस्तकं कुत्र नयसि ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(नी धातु)

सः भारं······ ।
अहं पुस्तकं गृहं······ ।
त्वम् अजां ग्रामं······ ।
अहं भारं······ ।
पठने समयं······ ।
भृत्यः भारं······ ।

(घ) नी धातु के लोट्, विधिलिङ् और लङ् के रूप लिखो।

(ङ) संधि करो—जगत्+ईशः। सुप्+अन्तः। अच्+अन्तः। सत्+आचारः। शुध्+धिः। बुध्+धः। दघ्+धः।

अभ्यास २८

शब्दावली—आभूषणम् = आभूषण, अलंकार = आभूषण, हार: = मोती की माला, अङ्गुलीयकम = अंगूठी, कङ्कणम् = कंकण, मेखला = करधनी, कुण्डलम् = कान की बाली, तिलकम् = तिलक, दर्पण: = शीशा, गन्धतैलम् = इत्र, सिन्दूरम् = सिन्दूर, अञ्जनम् = काजल, चूर्णकम् = पाउडर, ओष्ठरञ्जनम् = लिपस्टिक, फेनिल: = साबुन, आभूषय = सजाना, सखि = मित्र, हृ = ले जाना, चुराना, योजय = लगाना।

नियम ५३—(चर्त्वसंधि) वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण को उसी वर्ग का प्रथम अक्षर हो जाता है, बाद में वर्ग के प्रथम, द्वितीय वर्ण, श ष स कोई हों तो। जैसे—सद् + कार: = सत्कार:। तद्+पर: = तत्पर:। उद्+साह: = उत्साह।

सूचना—सखि शब्द (३) के पूरे रूप स्मरण करो। हृ धातु (२२) के दोनों पदों में पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—नार्य: आभूषणै: स्वशरीरम् आभूषयन्ति। एता: अङ्गुलीषु अङ्गुलीयकम्, कण्ठे हारम्, कर्णयो: कुण्डलम्, हस्तयो: कङ्कणं च धारयन्ति। एता: शिरसि सिन्दूरम्, नत्रेयो: अञ्जनम्, कपोलयो: चूर्णकम्, ओष्ठयो: ओष्ठरञ्जने, भाले तिलकं च धारयन्ति। ता: फेनिलेन स्नानं कुर्वन्ति, गन्धतैलं च योजयन्ति। एतासां सौन्दर्यं दर्शनीयं भवति। आभूषणै: शरीरम् अलंकृतं भवति। स: मम सखा अस्ति। सख्या सह गृहं गच्छ। अहं सख्यु: पार्श्वे गच्छामि। कस्यचिद् वस्तु न हर। दुर्जन: स्वसख्यु: पुस्तकम् अहरत्। स: अजां ग्रामं हरति।

(क) संस्कृत बनाओ—

आभूषणों से शरीर अलंकृत होता है। स्त्रियाँ गले में हार, कान में कुंडल, अंगुलियों में अंगूठी और दोनों हाथों में कंकण पहनती हैं। नारियाँ सिर में सिन्दूर, आँखों में अंजन, माथे पर तिलक, गालों पर पाउडर और ओठों पर लिपस्टिक लगाती हैं। साबुन से स्नान करो और इत्र लगाओ। बालिका दर्पण में मुँह देखती है। स्त्री मेखला पहने। नारियों का सौन्दर्य दर्शनीय होता है। मित्र, मित्र का काम करता है। मित्र के साथ विद्यालय जाओ। मित्र पर विश्वास करो। मित्र को धन दो। किसी की वस्तु न चुराओ। उसने मेरी पुस्तक चुराई। मैंने उसका धन नही चुराया।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो —

नारी कण्ठे किं धारयति ? रमा नेत्रयोः किं धारयति ? नार्यः केन स्नानं कुर्वन्ति ? ताः ओष्ठयोः कपोलयोः च किं योजयन्ति ? कासां सौन्दर्यं दर्शनीयं भवति ? आभूषणैः किम् अलंकृतं भवति ? केन सह गृहं गच्छसि ? कः मम पुस्तकम् अहरत् ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

स सख्युः सह गृहम् अगच्छत्। सखायं पुस्तकं देहि। सखौ विश्वास कुरु। नार्यः आभूषणानि धारयति। स्त्रीणां सौन्दर्यं दर्शनीयः भवति। अहं सखिं पश्यामि। ते मम पुस्तकम् अहरत्।

(घ) सखि शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) हृ धातु के दोनों पदो में लोट्, लङ् और लृट् के रूप लिखो।

(च) संधि करो— सद्+पुत्रः। उद्+कृष्टः। सद्+कारः। उद्+पन्नः।

———

अभ्यास २९

शब्दावली—यात्रा = यात्रा, यात्रिकः, यात्रिन् = यात्री, तीर्थम् = तीर्थ, धूमयानम् = रेलगाड़ी, मोटरयानम् = मोटर, विमानम् = विमान, यात्राशुल्कम् = किराया, यात्रापत्रकम् = टिकट, विद्युद्-यानम् = बिजली से चलने वाली गाड़ी, अद् = खाना, आरुह् = चढ़ना, अवतॄ = उतरना, कर्तृ = करने वाला, श्रोतृ = सुनने वाला, वक्तृ = वक्ता, दातृ = दाता, नेतृ = नेता ।

नियम ५४—(अनुस्वार संधि) पद के अन्तिम म् के बाद कोई व्यंजन हो तो म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है। बाद में स्वर होगा तो नहीं। जैसे—सत्यम् + वद = सत्यं वद। गृहम् + गच्छ = गृहं गच्छ। पुस्तकम् + पठ = पुस्तकं पठ।

सूचना—कर्तृ शब्द (५) के पूरे रूप स्मरण करो। अद् धातु (२३) के पाँचों लकारों में रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—यात्रिणः धूमयानेन मोटरयानेन च तीर्थानि गच्छन्ति। यात्रिणः यात्राशुल्कं दत्त्वा यात्रापत्रकं च गृहीत्वा धूमयानेन नगराणि गच्छन्ति। केचन विमानेन विदेशान् गच्छन्ति। विद्युद्यानं तीव्रं चलति। ते धूमयानम् आरोहन्ति, यानावतारे च अवतरन्ति। कार्यस्य कर्ता स्वकार्यं करोति। वक्ता भाषणं ददाति, श्रोतारः च शृण्वन्ति (सुनते हैं)। नेता समाजसेवां करोति। दाता निर्धनाय धनं ददाति। दातारः सुखं लभन्ते। स भोजनम् अत्ति। त्वं फलम् अद्धि। अहं रोटिकाम् आदम्। स फलम् एव अत्स्यति। पशुः घासम् अत्ति। वानरः फलम् अद्यात्।

(क) संस्कृत बनाओ—

यात्री किराया देकर और टिकट लेकर रेलगाड़ी से नगर को जाता है। मोटर से प्रयाग जाओ। विमान से विदेश जाओ। बिजली की ट्रेन तेज चलती है। यात्री ट्रेन में चढ़ते हैं और स्टेशन पर उतरते हैं। तुम्हारी यात्रा शुभ हो। कुछ ट्रेन से और कुछ मोटर से तीर्थस्थानों को जाते हैं। स्टेशन पर कुछ लोग ट्रेन में चढ़ते हैं और कुछ उतरते हैं। दाता बालक को धन देता है। वक्ता व्याख्यान देता है। श्रोता भाषण सुनते हैं। धन का हर्ता धन चुराता है। नेता समाज की सेवा करते हैं। वह फल खाता है (अद्)। मैं रोटी खाता हूँ। तू हलुआ खा। वह पूरी खावे। वे रोटी नहीं खायेंगे।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

के धूमयानेन गच्छन्ति ? यात्रिणः कुत्र अवतरन्ति ? किं यानं तीव्रं चलति ? जनाः विमानेन कुत्र गच्छन्ति ? के व्याख्यानं शृण्वन्ति ? कः भाषणं ददाति ? के समाजसेवां कुर्वन्ति ? के सुखं लभन्ते ? त्वं किम् अत्सि ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

ते फलम् अत्ति। अहं रोटिकाम् अत्ति। ते मिष्टान्नम् अद्यात्। स शाकम् अत्स्यन्ति। ते लवणान्नम् आदत्। अहं सूपम् अद्यात्।

(घ) कर्तृ शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) अद् धातु के लट्, लोट् लङ् के रूप लिखो।

(च) संधि करो—कार्यम्+कुरु। फलम्+खाद। गृहम्+गच्छ किम्+करोषि। लेखम्+लिखामि। भोजनम्+करोमि।

अभ्यास ३०

शब्दावली—पितृ = पिता, भ्रातृ = भाई, दिनम् = दिन, सप्ताहः = सप्ताह, ऋतुः = ऋतु, वसन्तः = वसन्त ग्रीष्मः = गर्मी, वर्षा = वर्षा, शरद् = शरद, हेमन्तः = हेमन्त, शिशिरः = शिशिर, आतपः = धूप, हिमम् = बर्फ, कृशः = निर्बल, स्थूलः = मोटा, मधुरम् = मीठा, कटुः = कड़वा, अल्पः = छोटा, महत् = बड़ा, ह्रस्व = छोटा, दीर्घः = बड़ा, लम्बा, हन् = मारना ।

नियम ५५—(विसर्ग संधि) विसर्ग (:) के बाद वर्ग का प्रथम, द्वितीय वर्ण या श ष स होगा तो विसर्ग को स् हो जायगा । (बाद में श् या च वर्ग होगा तो उस स् को श् हो जायगा)। जैसे—रामः + च = रामश्च । कः + चित् = कश्चित् । बालः + तिष्ठति = बालस्तिष्ठति ।

सूचना—पितृ शब्द (६) के पूरे रूप स्मरण करो। हन् धातु (२५) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—सप्ताहे सप्त दिनानि भवन्ति—सोमवारः, मङ्गलवारः, बुधवारः, बृहस्पतिवारः, शुक्रवारः, शनिवारः, रविवारः च । वर्षे षड् ऋतवः भवन्ति—वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद्, हेमन्तः शिशिरः च । ग्रीष्मे आतपः तीव्रः भवति । वर्षासु वृष्टिः भवति, शिशिरे हिमं पतति, वसन्ते कुसुमानि विकसन्ति । पितरं वन्दे । भ्रात्रा सह गृहं गच्छ । तव पितुः किं नाम अस्ति ? पितरि श्रद्धां कुरु । रामः शत्रून् हन्ति । त्वं शत्रून् जहि । कृष्णः बाणेन शत्रुं हन्यात् । अहं सज्जनं न हनिष्यामि । ते दुष्टान् अघ्नन् । त्वं पापिनं हन्याः । रामः रावणम् अहन् ।

(क) संस्कृत बनाओ—

सप्ताह में सात दिन होते हैं। ये सात दिन हैं—सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार। साल में ६ ऋतुएँ होती हैं—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर। वसन्त ऋतुराज है। वसन्त में फूल खिलते हैं और वृक्षों पर नवीन पत्ते आते हैं। वर्षा में वृष्टि होती है। शिशिर में बर्फ गिरती है। मैं पिता की वन्दना करता हूँ। तुम पिता के साथ घर जाओ। मैं भाई के साथ यहाँ आया। मेरे भाई का नाम श्याम है। पिता पर श्रद्धा करो। राम ने रावण को मारा। कृष्ण शत्रु को मारता है। तुम दुष्ट को मारो। तुम सज्जन को न मारो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

सप्ताहे कति दिनानि भवन्ति ? किं च तेषां नामानि ? वर्षे कति ऋतवः भवन्ति, के च ते ? ग्रीष्मे आतपः कीदृशः भवति ? वर्षासु किं भवति ? शिशिरे किं पतति ? वसन्ते कानि विकसन्ति ? कः रावणम् अहन् ? कस्मिन् श्रद्धां कुरु ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

सप्ताहे सप्त दिनं भवति। वर्षे षड् ऋतवः अस्ति। रामः रावणम् अघ्नन्। तव पितुः कः नाम सन्ति। वसन्ते कुसुमानि विकसति। ग्रीष्मे आतपं तीव्रं भवति। शिशिरे हिमं पतन्ति।

(घ) पितृ शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) हन् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) सन्धि करो—कृष्णः+च। कः+चम। बालः+तरति। बालाः+चलन्ति। कृष्णः+शेते। हरिः+च।

अभ्यास ३१

शब्दावली—भगवत् = भगवान्, भवत् = आप, श्रीमत् = श्रीमान्, बुद्धिमत् = बुद्धिमान्, धनवत् = धनवान्। मासः = मास, पक्षः = पक्ष, शुक्लपक्षः = शुक्लपक्ष, कृष्णपक्षः = कृष्णपक्ष, प्रतिपद् = प्रतिपदा, पूर्णिमा, पूर्णमासी = पूर्णिमा, तिथिः = तिथि, पञ्चाङ्गम् = पत्रा। इ = जाना, उद् + इ = उदय होना, अप + इ = दूर हटना, आ + इ = आना।

नियम ५६—(रुत्वसंधि) शब्द के अन्तिम स् को रु (र्) हो जाता है।

सूचना—प्रथमा के एकवचन आदि में इसी र् का विसर्ग रहता है। अ और आ के अतिरिक्त अन्य स्वरों के बाद यह र् रहता है। जैसे—हरिः + अस्ति = हरिरस्ति। गुरुः + अवदत् = गुरुरवदत्। हरेः + एव = हरेरेव। गुरोः + धनम् = गुरोर्धनम्।

नियम ५७—(संख्येय शब्द) एक से दश तक संख्येय (व्यक्ति या वस्तु-बोधक) क्रमवाचक विशेषण ये हैं—प्रथमः (पहला), द्वितीयः (दूसरा), तृतीयः (तीसरा), चतुर्थः (चौथा), पञ्चमः (पाँचवाँ) षष्ठः (छठा), सप्तमः (सातवाँ), अष्टमः (आठवाँ), नवमः (नवाँ), दशमः (दसवाँ) स्त्रीलिंग में प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी।

सूचना—भगवत् शब्द (७) के पूरे रूप स्मरण करो। इ धातु (२६) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—भगवन्तं भज। अहं भवन्तं पृच्छामि। श्रीमन्तः बुद्धिमन्तः धनवन्तश्च श्रमेण वर्धन्ते। त्वम् अत्र एहि। सूर्यः उदेति। दुर्जनः अपैति। एकस्मिन् मासे त्रिंशत् दिनानि भवन्ति। एकस्मिन् पक्षे पञ्चदश दिनानि भवन्ति। पञ्चाङ्गे तिथिविवरणं भवति। सप्तम्यां कक्षायाम् अशीतिः छात्राः सन्ति।

(क) संस्कृत बनाओ—

भगवान् को स्मरण करो (स्मृ)। आपको नमस्ते (नमः)। मैं श्रीमान् से पूछता हूँ। बुद्धिमान् नेता होते हैं। धनवान् निर्धनों को धन देता है। एक मास में तीस दिन होते हैं। एक पक्ष में १५ तिथियाँ होती हैं। पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा पूर्ण होता है। अमावास्या को रात्रि में अंधकार रहता है। आज पंचमी तिथि है। सूर्य उदय होता है। दुर्जन दूर हटता है। वह जाता है (इ)। तू जा (इ)। तू यहाँ आ (आ + इ)। पञ्चांग में तिथियों का विवरण होता है। कक्षा का प्रथम छात्र चौथे से प्रश्न पूछता है। मैं दशम कक्षा में पढ़ता हूँ। आठवीं कक्षा में अस्सी छात्र हैं।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

त्वं कस्यां कक्षायां पठसि? दशम्यां कक्षायां कति छात्राः सन्ति? अद्य का तिथिः अस्ति? अद्य चैत्रमासस्य पञ्चमी तिथिः (आज चैत्र मास की पंचमी तिथि है)। अमावास्यायां रात्रौ प्रकाशः भवति न वा? एकस्मिन् मासे कति दिनानि भवन्ति? एकस्मिन् पक्षे कति तिथयः भवन्ति?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

सूर्यः……(उद् + इ)।
अहं गृहम्……(इ)।
दुर्जनः……(अप + इ)।
त्वम् अत्र……(आ + इ)।
…मासे…दिनानि भवन्ति।
…कक्षायां…छात्राः सन्ति।

(घ) भगवत् और भवत् शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) इ धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) संधि करो—गुरुः + अस्ति। मुनेः + धनम्। विष्णोः + एव। शिशुः + अवदत्। भानुः + उदेति। गुरुः + अत्र।

अभ्यास ः २

शब्दावली—गच्छत् = जाता हुआ, पठत् = पढ़ता हुआ, लिखत् = लिखता हुआ, कुर्वत् = करता हुआ। कृषिः = खेती, कृषकः = किसान, भूमिः = जमीन, क्षेत्रम् = खेत, हलम् = हल, उर्वरा = उपजाऊ, ऊषरः = ऊसर, वृषभः = बैल, मृत्तिका = मिट्टी, कृष् = जोतना, खींचना वप् = बोना, ब्रू = कहना, रुह् = चढ़ना, निकलना।

नियम ५८—(उत्व संधि) अः को ओ हो जाता है, बाद में अ हो तो। अः + अ = ओऽ! ओ के बाद अ को पूर्वरूप अर्थात् ओ हो जाता है। अ के लिए अवग्रह चिह्न (ऽ) लगा दिया जाता है। जैसे—कः + अपि = कोऽपि। कः + अयम् = कोऽयम्। सः + अपि = सोऽपि।

नियम ५९—(उत्व संधि) अः को ओ हो जाता है, बाद में वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण, ह य व र ल कोई हों तो। जैसे—रामः + गच्छति = रामो गच्छति। कृष्णः + जयति = कृष्णो जयति। धर्मः + रक्षति = धर्मो रक्षति। बालः + लिखति = बालो लिखति।

सूचना—गच्छत् शब्द (८) के पूरे रूप स्मरण करो। ब्रू धातु (२७) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—गच्छन्तं सिंहं पश्य। पठते बालकाय फलं यच्छ। मयि लिखति सति पिता आगच्छत्। कार्यं कुर्वतः श्रीवृद्धिः भवति। कृषकः कृषिं करोति। स हलेन भूमिं कर्षति। वृषभाः हलं कर्षन्ति। कृषकः उर्वरायां भूमौ बीजानि वपति। ऊषरायां भूमौ बीजं न रोहति। एषा भूमिः उर्वरा अस्ति। गुरुः ब्रवीति। अहं ब्रवीमि। त्वं ब्रूहि। रामः अब्रवीत्। स ब्रूयात्। इदानीं स वक्ष्यति। स आह। त्वं किम् आत्थ?

(क) संस्कृत बनाओ—

जाते हुए बालक को देखो। पढ़ते हुए शिष्य को यह पुस्तक दो। परिश्रम करते हुए मनुष्य की श्रीवृद्धि होती है। मैं जब पढ़ रहा था, तब गुरु जी आए। लिखते हुए बालक को फल दो। भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है। किसान हल से भूमि जोतता है। बैल हल खींचते हैं। यह भूमि उपजाऊ है। ऊसर भूमि में बीज नहीं निकलते हैं। किसान उपजाऊ भूमि में बीज बोता है। वहाँ बीज ठीक (सम्यक्) उगते हैं। राम कहता है (ब्रू)। मैं गुरु से कहता हूँ। तुम सत्य कहो। उसने कहा कि यहाँ कोई नहीं है। अब वह कहेगा। तुम क्या कहते हो? तुम सत्य कहो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

पठते बालकाय किं यच्छसि? मयि लिखति सति कः आगच्छत्? श्रमं कुर्वतः किं भवति? कृषकः हलेन किं करोति? कुत्र बीजानि सम्यक् रोहन्ति? ऊषरायां भूमौ किं न रोहति? कृषकः किं वपति? भारतवर्षः कीदृशः देशः अस्ति?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

कृषकः बीजानि वपन्ति। अयं भूमिः उर्वरा अस्ति। अयं क्षेत्रम् ऊषरम् अस्ति। त्वं किं ब्रवीति? त्वं किम् आह? त्वं ब्रूयात्। अहम् अब्रवीत्। वयं ब्रूयाम्। ते वक्ष्यति। त्वं ब्रवीतु।

(घ) गच्छत् और पठत् शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) ब्रू धातु के लट्, लोट्, लङ् और लृट् के रूप लिखो।

(च) सन्धि करो—सः+अयम्। सः+अगच्छत्। कः+अपि। यतः+धर्मः। ततः+जयः। नृपः+जयति। देवः+गच्छति।

अभ्यास ३३

शब्दावली—आत्मन् = आत्मा, परमात्मन् = परमात्मा, ब्रह्मन् = ब्रह्मा, अध्वन् = मार्ग, राजन् = राजा, मूर्धन् = मस्तक, सिर। व्यापारः = व्यापार, व्यापारिन् = व्यापारी, वणिज् = बनिया, तुला = तराजू, तोलनम् = तोलना, पण्यम् = सामान, क्रेता = खरीदने वाला, विक्रेता = बेचने वाला, वस्तु = वस्तु, दुह् = दूहना, तोलय = तोलना, क्री = खरीदना।

नियम ६०—(यत्व संधि) अ या आ के बाद रु (र् या विसर्ग) को य् होता है। बाद में कोई स्वर होगा तो य् का लोप ऐच्छिक है। यदि बाद में कोई व्यंजन होगा तो य् का लोप अवश्य होगा अर्थात् विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे—रामः + इच्छति = राम इच्छति। देवाः + गच्छन्ति = देवा गच्छन्ति।

सूचना—आत्मन् शब्द (९) के रूप स्मरण करो। राजन् शब्द में द्वितीया बहुवचन आदि में अ का लोप होकर ये रूप बनेंगे—राज्ञः, राज्ञा, राज्ञे, राज्ञः, राज्ञोः, राज्ञाम्, राज्ञि, राजनि। शेष रूप आत्मन् के तुल्य होंगे। दुह् धातु (२८) के पाँचों लकारों में रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति। परमात्मने ब्रह्मणे च नमः। अध्वनि वृक्षः अस्ति। राजानं पश्य। राज्ञः आज्ञां पालय। तव मूर्धनि केशाः सन्ति। व्यापारिणः व्यापारं कुर्वन्ति। वणिजः तुलया पण्यं तोलयन्ति। क्रेतारः विक्रेतुः वस्तूनि क्रीणन्ति। व्यापारे लक्ष्मी वसति। व्यापारे समुन्नतिः देशस्य लक्ष्मीं वर्धयति। क्रयः विक्रयः च व्यापारस्य आधारौ स्तः। रामः गां दुग्धं दोग्धि। श्यामः गाम् अधोक्। यः गां धोक्ष्यति, स दुग्धं प्राप्स्यति। गोपालाः गाः दुहन्ति।

(क) संस्कृत बनाओ—

सबमें आत्मा है। परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है। ब्रह्म को नमस्कार। मुझे मार्ग में एक फल मिला (लभ्)। राजा प्रजा की रक्षा करता है। राजा की आज्ञा पालो। तेरे सिर पर क्या है? मेरे सिर पर बाल हैं। धन के लिए व्यापार करो। व्यापार में लक्ष्मी निवास करती है। व्यापारी व्यापार करते हैं। बनिये तराजू से सामान तोलते हैं। खरीदने वाले विक्रेता से सामान खरीदते हैं। व्यापार में उन्नति राष्ट्र की संपत्ति को बढ़ाती है। खरीदना और बेचना व्यापार का आधार है। कृष्ण गाय का दूध दुहता है। राम ने गाय दुही। जो गाय दुहेंगे, वे दूध प्राप्त करेंगे। ग्वाले गाय दुहते हैं।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

कस्मिन् आत्मा अस्ति? परमात्मा कुत्र व्याप्तः अस्ति? कः प्रजां रक्षति? तव मूर्धनि किम् अस्ति? धनार्थं किं कुरु? व्यापारे किं निवसति? विक्रेतुः के पण्यानि क्रीणन्ति? वणिजः तुलया किं तोलयन्ति? कः गाम् अधोक्? गोपालाः किं कुर्वन्ति?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

सर्वे आत्मा अस्ति। राजा प्रजायाः रक्षति। व्यापारे लक्ष्मीः वसन्ति। रामः गां दुग्धं दुहन्ति। अहं गाम् अदुहम्। ते गां धोक्ष्यति। अहं गां दोहामि। किं त्वं गां दोग्धि? राजस्य आज्ञां पालय।

(घ) आत्मन् और राजन् शब्द के रूप लिखो।

(ङ) दुह् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) संधि करो—बालाः + इच्छति। छात्राः + गच्छन्ति। देवाः + आगच्छन्ति। कः + आगतः। बालिकाः + हसन्ति।

अभ्यास ३४

शब्दावली—करिन् = हाथी, दण्डिन् = संन्यासी, विद्यार्थिन् = विद्यार्थी, ज्ञानिन् = ज्ञानी, मन्त्रिन् = मंत्री, पक्षिन् = पक्षी, शशिन् = चन्द्रमा, योगिन् = योगी, वाणिज्यम् = वाणिज्य, अभिकर्तृ = एजेन्ट, शुल्कम् = कमीशन, अर्घः = मूल्य, रेट, आयातः = आयात, निर्यातः = बाहर जाना, करः = टैक्स, आयकरः = इन्कम टैक्स, विक्रयकरः = सेल्स टैक्स, विनिमयः = अदल बदल, मूलधनम् = पूँजी, स्वप् = सोना, आदाय = लेकर।

नियम ६१—(सुलोप संधि) सः और एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है, बाद में कोई व्यंजन हो तो। जैसे—सः + पठति = स पठति। सः + गच्छति = स गच्छति। एषः + वदति = एष वदति।

सूचना—करिन् शब्द (१०) के रूप स्मरण करो। स्वप् धातु (२९) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—करिणं पश्य। करिणः दन्तं स्पृश। तीर्थे दण्डिनः योगिनः च भ्रमन्ति। अस्यां कक्षायां विंशतिः विद्यार्थिनः सन्ति। ज्ञानिनः शास्त्राणि पठन्ति। मन्त्रिणः मन्त्रणां कुर्वन्ति। आकाशे पक्षिणः उड्डयन्ते। रात्रौ शशी शोभते। वाणिज्यं श्रीवृद्ध्यै भवति। अभिकर्तारः शुल्कम् आदाय पण्यानि क्रीणन्ति, विक्रयं च कुर्वन्ति। सर्वकारः (सरकार) क्रयेविक्रये च करं गृह्णाति (लेती है)। शासनम् आये आयकरम्, विक्रये विक्रयकरं च गृह्णाति। व्यापारे वस्तूनां विनिमयः भवति। मूलधनेन व्यापारः भवति। वाणिज्येन मूलधनं वर्धते। स गृहे स्वपिति। अहं रात्रौ स्वपिमि। त्वम् अत्र न स्वपिहि। स एकहोरां यावत् अस्वपत्। त्वं कदा स्वप्स्यसि ?

(क) संस्कृत बनाओ—

तीन हाथी जा रहे हैं। हाथी को फल दो। इस कक्षा में तीस विद्यार्थी हैं। यह उस विद्यार्थी की पुस्तक है। गंगातट पर योगी और दण्डी घूम रहे हैं। आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं। ज्ञानी पुस्तकें पढ़ते हैं। यहाँ मन्त्री मन्त्रणा कर रहे हैं। शशी की शोभा देखो। एजेन्ट कमीशन लेकर सामान खरीदते हैं और विक्रय करते हैं। वाणिज्य से मूलधन बढ़ता है। सरकार आय पर आयकर लेती है। शासन बिक्री पर सेल्स टैक्स लेता है। व्यापार में वस्तुओं का विनिमय होता है। धन लेकर व्यापार करो। मैं रात में सोता हूँ। तुम कहाँ सोते हो? यहाँ न सोओ। वह एक घंटा सोया। वह कब सोएगा?

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

कस्य दन्तं स्पृश? तीर्थे के भ्रमन्ति? अस्यां कक्षायां कति विद्यार्थिनः सन्ति? सर्वकारः आये किं गृह्णाति? कथं मूलधनं वर्धते? आकाशे के उड्डयन्ते?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

करि पश्य। करिणं फलं देहि। मन्त्रिणः मन्त्रणां करोति। ज्ञानी शास्त्रं पठन्ति। व्यापारे विनिमयः भवन्ति। स स्वपति। त्वं स्वप। अहं स्वपामि। स स्वपिष्यति। वयं स्वपामः।

(घ) करिन् और विद्यार्थिन् के पूरे रूप लिखो।

(ङ) स्वप् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) संधि करो—सः + पठतु। सः + गच्छेत्। सः + लिखति। एषः + हसति। एषः + वदति।

अभ्यास ३५

शब्दावली—मतिः=बुद्धि, श्रुतिः=वेद, स्मृतिः=स्मृति श्रेणिः=कक्षा, प्रीतिः=प्रेम, शान्तिः=शान्ति, प्रकृतिः=प्रकृति, स्वभाव, समितिः=सभा, सूक्तिः=सुभाषित, नियतिः=भाग्य, समृद्धिः=समृद्धि, रात्रिः=रात्रि। न्यायः=न्याय, विधिः=कानून, न्यायाधीशः=न्यायाधीश, न्यायाध्यक्षः=मुंसिफ, प्राड्विवाकः=वकील, वादिन्=वादी, प्रतिवादिन्=प्रतिवादी, अभियोगः=अभियोग, अपराधिन्=अपराधी, न्यायालयः=न्यायालय। रुद्=रोना।

नियम ६२—(कर्मवाच्य) कर्मवाच्य में धातु से यक् (य) लगता है और आत्मनेपद में रूप चलते हैं। कर्मवाच्य में कर्म मुख्य होता है। कर्म के अनुसार क्रिया होगी। कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार होगी। मेरे द्वारा पाठ पढ़ा जाता है—मया पाठः पठ्यते। मया लेखः लिख्यते। मया ग्रामः गम्यते। मया भोजनं खाद्यते। मया पुस्तकानि पठ्यन्ते।

सूचना—मति शब्द (१२) के रूप स्मरण करो। रुद् धातु (३०) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—मतिः बलाद् गुरुतरा। श्रुतिं स्मृतिं च पठ। अहं दशमश्रेण्यां पठामि। जनेषु प्रीतिः शान्तिः समृद्धिः च स्यात्। सूक्तीः स्मर। समित्यां वद। रामः प्रकृत्या सरलः। न्यायालये न्यायाधीशः न्यायं करोति। स वादिनं प्रतिवादिनं च शृणोति। प्राड्विवाकाः पक्षं प्रतिपक्षं च स्थापयन्ति। ते अभियोगस्य समर्थनं खण्डनं वा कुर्वन्ति। न्यायाधीशः अपराधिनं दण्डयति। बालकः रोदिति। त्वं रोदिषि। अहं रोदिमि। त्वं न रुदिहि। रामः अरोदीत्। त्वं न रुद्याः। शिशुः रोदिष्यति।

(क) संस्कृत बनाओ—

तुम श्रुति पढ़ो। स्मृतियों में धर्म की व्याख्या है। बल से बुद्धि बढ़कर है। तुम किस श्रेणी में पढ़ते हो? समिति में भाषण दो। सूक्तियाँ स्मरण करो। समृद्धि चाहो। रात्रि में शयन करो। नियति क्या नहीं करती? न्यायाधीश न्याय करता है। वह पक्ष और विपक्ष को सुनता है। वह अपराधी को दण्ड देता है। वादी और प्रतिवादी अपना पक्ष रखते हैं। वकील अभियोग को प्रस्तुत करते हैं। वे अभियोग का खण्डन या समर्थन करते हैं। राम रोता है। तू रोता है। मैं रोता हूँ। बालक रोया। तू न रो। शिशु रोयेगा। वह न रोवे। तू क्यों रो रहा था?

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

बलात् का गुरुतरा? त्वं कस्यां श्रेण्यां पठसि? जनेषु का स्यात्? का: स्मर? कुत्र वद? न्यायाधीश: किं करोति? प्राड्विवाका: किं कुर्वन्ति? न्यायाधीश: कं दण्डयति?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

मया······लिख्यते।
अस्माभि: पुस्तकानि······।
मया······गम्यते।
त्वया भोजनं··· ।
मया बालिका····· (दृश्)।
त्वया······स्पृश्यते।

(घ) मति और श्रेणि शब्द के रूप लिखो।

(ङ) रुद् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) इन धातुओं के कर्मवाच्य लट् प्रथम पुरुष एकवचन के रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम्, हस्, दृश्, स्पृश्, रुद्।

अभ्यास ३६

शब्दावली—नदी = नदी, भवती = आप (स्त्री) रजनी = रात्रि, सखी = सखी, पुरी = नगरी, वाणी = वाणी, बुद्धिमती = विदुषी स्त्री, मृगी = हरिणी, सिंही = सिंहनी, गौरी = पार्वती, राज्ञी = रानी। कार्यालयः = कार्यालय, करणिकः = क्लर्क उपस्करः = फर्नीचर, आसन्दिका = कुर्सी, फलकम् = मेज, पत्रसंचयिनी = फाइल, राजाज्ञा = शासनादेश, प्रमाणलेखः = रिकार्ड। आस् = बैठना।

नियम ६३—(भाववाच्य) अकर्मक धातुओं से भाववाच्य होता है। भाववाच्य में कर्मवाच्य के तुल्य धातु से यक् (य) प्रत्यय होता है। आत्मनेपद में केवल एकवचन में रूप चलते हैं। कर्ता में तृतीया, क्रिया प्रथमपुरुष एकवचन। कर्म नहीं होता है। कुछ धातुओं के रूप ये हैं— लिख्यते, गम्यते क्रियते, ह्रियते, पीयते, गीयते, तीर्यते, पूर्यते, उच्यते, गृह्यते, जीयते, दीयते, चोर्यते, कथ्यते, भक्ष्यते, गण्यते। मया सुप्यते। त्वया हस्यते। किं दीयते, पीयते, उच्यते, कथ्यते।

सूचना—नदी शब्द (१३) के पूरे रूप स्मरण करो। आस् धातु (३१) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण-वाक्य—भवती नद्यां स्नानं कुरु। राज्ञी विदुषीं वदति। बुद्धिमत्याः वाण्यां माधुर्यम् अस्ति। रजन्यां पुर्यां शान्तिः भवति। वने मृग्यः सिंह्यः च भ्रमन्ति। कार्यालये करणिकः आसन्दिकायां सीदति। स फलके पत्रसंचयिनीं स्थापयति। करणिकः राजाज्ञानां प्रमाणलेखानां च संग्रहं करोति। त्वया किम् उच्यते ? तेन किं कथ्यते ? छात्रेण गम्यते, हस्यते, तीर्यते, गीयते च। स अत्र आस्ते। त्वम् आस्व। स आसने आस्त। स आसिष्यते।

(क) संस्कृत बनाओ—

नदी में स्नान करो। रानी की वाणी में माधुर्य है। पुरी में बुद्धिमती विदुषियाँ भी रहती हैं। गौरी पर्वत पर रहती है। वन में मृगी, सिंहनी भी रहती हैं। रात्रि में शयन करो। सखी से पूछो। क्लर्क कार्यालय का कार्य देखता है। कार्यालय में मेज, कुर्सी और फर्नीचर है। क्लर्क फ़ाइल, शासनादेश और रिकार्ड रखता है (स्थापय)। वह बैठता है। वे बैठते हैं। तुम बैठो। वह यहाँ बैठा। वह आसन पर बैठेगा। तेरे द्वारा क्या पढ़ा जाता है? मेरे द्वारा पत्र पढ़ा जाता है। मेरे द्वारा धन दिया जाता है। तेरे द्वारा लेख लिखा जाता है। तुम क्या कहते हो? वह क्या कहता है?

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

तेन किं पठ्यते? मया किं लिख्यते? तेन कुत्र गम्यते? तेन किं गीयते? त्वया किं दीयते? रामेण किं पीयते? करणिकः किं स्थापयति? कार्यालये के उपस्कराः सन्ति?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

मया ग्रामः गम्यन्ते। त्वया कार्यं क्रियन्ते। तैः धनं दीयन्ते। त्वया चित्राणि दृश्यते। मया उच्यन्ते। तेन सुप्यन्ते। करणिकः पत्र व्यवहारं कुर्वन्ति। त्वम् आस्ते। अहम् आस्ते। ते आस्त। त्वम् आसिष्यसि। ते आसीत।

(घ) नदी, भवती और रजनी के पूरे रूप लिखो।

(ङ) आस् धातु के लट्, लोट् और लङ् के रूप लिखो।

(च) इन धातुओं के भाववाच्य प्र० पु० एक० के रूप लिखो—
पठ्, लिख्, स्वप्, कृ, वच्, कथ्, पा, दा, ग्रह्, तॄ, पॄ।

अभ्यास ३७

शब्दावली—धेनुः = गाय, रेणुः = धूल, रज्जुः = रस्सी, यानम् = गाड़ी, रथः = रथ, शकटः = गाड़ी, बैलगाड़ी, मोटरयानम् = मोटर, विमानम् = हवाई जहाज, पोतः = पानी का जहाज, द्विचक्रिका = साइकिल, द्विचक्रकम् = स्कूटर, त्रिचक्रकम् = थ्री व्हीलर। शी = सोना। वह् = ढोना, नी = ले जाना, प्रापय = पहुँचाना, पाठय = पढ़ाना, कारय = कराना, लेखय = लिखवाना, उत्थापय = उठाना।

नियम ६४—(प्रेरणार्थक णिच् प्रत्यय) प्रेरणा (दूसरे से काम कराना) अर्थ में धातु से णिच् (अय) प्रत्यय होता है। प्रेरणार्थक धातुओं के साथ मूल धातु के कर्ता में तृतीया होती है, कर्म में द्वितीया, क्रिया कर्ता के अनुसार। जैसे —पढ़ना-पढ़ाना, करना-करवाना। शिष्य लेख लिखता है, गुरु शिष्य से लेख लिखवाता है—गुरुः शिष्येण लेखं लेखयति। नृपः भृत्येन भारं वाहयति।

सूचना—धेनु शब्द (१४) के रूप स्मरण करो। शी धातु (३२) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—धेनुं पश्य। धेनोः दुग्धं पिब। धेनवे तृणं यच्छ। रेणुः मूर्ध्नि पतति। रज्जुम् आनय। वृषभाः शकटं वहन्ति। अश्वाः रथं नयन्ति। अद्यत्वे द्विचक्रिका बहु प्रचलति। केचन द्विचक्रकेण, त्रिचक्रकेण, मोटरयानेन वा स्वकार्यालयं गच्छन्ति। यात्रिणः विमानेन पोतेन वा विदेशान् गच्छन्ति। विमानं निर्दिष्टं स्थानं द्रुतं प्रापयति। त्वं भृत्येन कार्यं कारय। गुरुः शिष्यं पाठं पाठयति। मित्रं नगरं प्रापय। रामं वार्ता श्रावय। त्वं भारम् उत्थापय। बालः शेते। बालाः शेरते। त्वं शेष्व। स गृहे अशेत। त्वं कुत्र शयिष्यसे।

(क) संस्कृत बनाओ—

गाय को यहाँ लाओ। गाय का दूध पीओ। गाय को घास दो। सिर पर धूल गिर रही है। रस्सी यहाँ लाओ। बैल और ऊँट गाड़ी ढोते हैं। घोड़े रथ खींचते हैं। साइकिल, स्कूटर या मोटर से घर जाओ। लोग स्कूटर या तिपहिया से अपने आफिस जाते हैं। यात्री विमान मे या पानी के जहाज से विदेश जाते हैं। विमान शीघ्र निर्दिष्ट स्थान को पहुँचाते हैं। तुम बोझा उठाओ। कृष्ण से लेख लिखवाओ। नौकर से काम करवाओ। आचार्य शिष्य को पाठ पढ़ाता है। वह मित्र को शहर पहुँचाता है। वह कृष्ण को बात सुनाता है। शिशु सोता है। बालक सोवे। मैं शय्या पर सोया। वे यहाँ सोयेंगे। तुम कहाँ सोओगे?

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

त्वं कस्याः दुग्धं पिब? धेनवे किं यच्छ? अद्यत्वे किं बहु प्रचलति? त्वं कार्यालयं केन यानेन गच्छसि? यात्रिणः विदेशान् कथं गच्छन्ति? रामं किं श्रावय? गुरुः शिष्यं किं पाठयति?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

धेनुं घासं यच्छ। केचन द्विचक्रकेण कार्यालयं गच्छति। शिष्यं पाठः पाठय। रामाय वार्ता श्रावय। त्वं भारः उत्थापयति। त्वं शेताम्। ते अशेत। अहम् अशेत। के अत्र शयिष्यते?

(घ) धेनु शब्द के रूप लिखो।

(ङ) शी धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) इन धातुओं के प्रेरणार्थक रूप बनाओ - पठ्, लिख् वह्, कृ, श्रु, प्राप्, उत्था।

अभ्यास ३८

शब्दावली—वधूः=बहू, तनूः=शरीर, चमूः=सेना, श्वश्रूः=सास, दण्डः=डंडा, वेत्रम्=बेंत, गदा=गदा, परशुः=फरसा, असिः=तलवार, छुरिका=चाकू, कृपाणः=कृपाण, प्रासः=भाला, युद्धम्=युद्ध, प्रहरणम्=शस्त्र, आयुधम्=शस्त्रास्त्र, शस्त्रागारम्=हथियार रखने का स्थान, योधः=योद्धा, सैनिकः=सैनिक, युध्=युद्ध करना, प्र+हृ=प्रहार करना। हु=हवन करना।

नियम ६५—(सन् प्रत्यय) धातु से 'चाहना या इच्छा करना' अर्थ में सन् (स) प्रत्यय होता है, यदि इच्छा करने वाला वही व्यक्ति हो तो। स लगने पर धातु को द्वित्व हो जाता है। धातुरूप भू या सेव् के तुल्य चलेंगे। कुछ सन् वाले रूप ये हैं:—पठ्-पिपठिषति, लिख्-लिलिखिषति, कृ-चिकीर्षति, तॄ-तितीर्षति, ब्रू-विवक्षति, पा-पिपासति, दा-दित्सति, जि-जिगीषति, श्रु-शुश्रूषते, ज्ञा-जिज्ञसते, दृश्-दिदक्षते, लभ्-लिप्सते। रामः कार्यं चिकीर्षति, जलं पिपासति, गुरुं दिदृक्षते च।

सूचना—वधू शब्द (१५) के रूप स्मरण करो। हु धातु (३३) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य--वध्वाः तन्वां वस्त्राणि शोभन्ते। सा श्वश्रूं सेवते। चमूषु योधाः सैनिकाश्च भवन्ति। योधाः युद्धेषु युध्यन्ते। ते आयुधानि धारयन्ति। ते असिभिः कृपाणैः प्रासैः परशुभिः च शत्रुषु प्रहारं कुर्वन्ति। प्रहरणं सैनिकानाम् आभूषणम्। पुरा युद्धेषु गदायाः परशोः प्रासादीनां च प्रयोगः अभवत्। शस्त्रागारेषु आयुधानि स्थाप्यन्ते। स प्रतिदिनं जुहोति। अहं जुहोमि। त्वं जुहुधि। सः अजुहोत्। शिष्याः होष्यन्ति।

(क) संस्कृत बनाओ—

बहू का शरीर वस्त्र से शोभित हो रहा है। वह सास की सेवा करे। सेना में सैनिक होते हैं। योद्धा युद्धों में युद्ध करते हैं। योद्धा हथियार रखते हैं। शस्त्र योद्धाओं का आभूषण है। वे शत्रुओं पर तलवार, भाला, परशु से प्रहार करते हैं। शस्त्रागार में शस्त्र रखे जाते हैं। पहले युद्धों में गदा, परशु, भाले आदि का प्रयोग होता था। वह हवन करता है। मैं भी हवन करता हूँ। तू हवन कर। बालक हवन करेंगे। मैं काम करना चाहता हूँ (कृ), जल पीना चाहता हूँ और दान देना चाहता हूँ (दा)। तू पढ़ना चाहता है और लेख लिखना चाहता है। वह तैरना चाहता है। मैं कुछ कहना चाहता हूँ (ब्रू)।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

वध्वाः तनूः कथं शोभते? सा कां सेवेत? योधानां किम् आभूषणम्? शस्त्रागारेषु किं स्थाप्यते? योधाः कुत्र युध्यन्ते? पुरा युद्धेषु केषां शस्त्राणां प्रयोगः अभवत्? योधाः किं धारयन्ति?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(सन् का प्रयोग)

रामः पुस्तकं······(पठ्)।

अहं कार्यं······(कृ)।

श्यामः नदीं······(तृ)।

बालाः जलं······(पा)।

स धर्मं······(ज्ञा)।

स बालां······(दृश्)।

(घ) वधू शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) हु धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) इन धातुओं के सन् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—

पठ्, लिख्, कृ, तृ, दृश्, ब्रू, लभ्, दा, जि, पा।

अभ्यास ३१

शब्दावली—मातृ = माता। धनुर्धरः = धनुषधारी, चापम् = धनुष, बाणः = बाण, तूणीरम् = तरकश, गुलिका = गोली, वर्मन् = कवच, भुशुण्डिः = बन्दूक, लघुभुशुण्डिः = पिस्तौल, शतघ्नी = तोप, आग्नेयास्त्रम् = बम, अग्निचूर्णम् = बारूद, परमाण्वस्त्रम् = एटम बम, धूमास्त्रम् = अश्रु (गैस), क्षिप् = फेंकना, भी = डरना।

सूचना—मातृशब्द (१६) और भी धातु (३४) के रूप स्मरण करो।

नियम ६६—(क्त प्रत्यय) भूतकाल अर्थ में धातु से क्त (त) प्रत्यय होता है। त प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है। अतः कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा क्रिया के लिंग, वचन और विभक्ति कर्म के तुल्य होंगे। जैसे—रामेण पुस्तकं पठितम्, पुस्तकानि पठितानि, ग्रन्थः पठितः। तेन बालिका दृष्टा, फलं दृष्टम्, जनः दृष्टः। अकर्मक धातु से त प्रत्यय होगा तो कर्ता में तृतीया और क्रिया में नपुंसक लिंग एकवचन। तेन हसितम्। तेन रुदितम्।

नियम ६७—(क्त प्रत्यय) जाना, चलना अर्थ की धातुओं और अकर्मक धातुओं से 'त' प्रत्यय होने पर कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया होगी। स गृहं गतः। स आगतः। स सुप्तः। स मृतः।

नियम ६८—(क्त प्रत्यय)—'त' प्रत्यय से बने कुछ रूप ये हैं—पठितः, लिखितः, गम्–गतः, कृतः, दृश्–दृष्टः, ब्रू–उक्तः, नम्–नतः, जन्–जातः, धा–हितः, छिद्–छिन्नः, स्था–स्थितः, पा–पीतः।

उदाहरण वाक्य—वन्दे मातरम्। धनुर्धरः चापेन बाणं क्षिपति। सैनिकः लघुभुशुण्ड्या शत्रुषु गोलिकां क्षिपति। जनसंहाराय परमाण्वस्त्रम् आग्नेयास्त्रं च क्षिप्यते। बालकः चोरात् बिभेति। त्वं बिभेषि। त्वं न बिभीहि, सः अबिभेत्, बालः भेष्यति।

(क) संस्कृत बनाओ—

माता की वन्दना करता हूँ। योद्धा धनुष से बाण फेंकता है। तरकश में बाण हैं। सैनिक कवच पहनता है (वर्म धारयति)। युद्ध में बम, एटम बम और अश्रु गैस का प्रयोग होता है। योद्धा पिस्तौल से गोली चलाता है (क्षिप्)। तुम माता का कहना मानो (पालय)। माता की सेवा करो। माता जननी होती है। वह डरता है। मैं नहीं डरता। तुम न डरो। वह नहीं डरेगा। उसने पुस्तक पढ़ी। तूने फल देखा। मैंने जल पिया। उसने क्या कहा (उक्तम्)। राम वन गए। वह यहाँ आया। वह सोया। पशु मरा। वह हँसा। वह रोया। पुत्र उत्पन्न हुआ (जातः)। उसने लेख लिखा। तूने ग्रन्थ पढ़ा।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

केन ग्रन्थः पठितः? त्वया कति पुस्तकानि पठितानि? तेन किं दृष्टम्? तेन किं सत्यम् उक्तम्? तेन किं पीतम्? रामः कुत्र गतः? तेन किं लिखितम्? किं शिशुः सुप्तः? योधः चापेन किं क्षिपति? जन-संहाराय किं क्षिप्यते? बालकः कस्मात् बिभेति?

(ग) वाक्य बनाओ—

पीतम्। दृष्टम्। जातः। लिखितः। पठितानि। कृतम्। सुप्तः। गतः।

(घ) मातृ शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) भी धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) 'त' प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—

पठ्, लिख्, गम्, कृ, दृश्, पा, जन्, धा, स्था, ब्रू, हस्।

अभ्यास ४०

शब्दावली—वाच् = वाणी, त्वच् = त्वचा, ऋच् = वेद की ऋचा, शुच् = शोक। शिल्पम् = शिल्प, शिल्पिन् = शिल्पी, कारुः = शिल्पी, यान्त्रिकः = मिस्त्री, तक्षन् = बढ़ई, तन्तुवायः = जुलाहा, रजकः = धोबी, चर्मकारः = चमार, तन्तुः = धागा, पटः = वस्त्र, नापितः = नाई, क्षुरः = उस्तरा, कर्तनी = कैंची। कृन्तति = काटता है, वे (वयति) = बुनता है, रच् = बनाना, निर्मापय = बनाना।

नियम ६९—(क्तवतु प्रत्यय) भूतकाल में धातु से क्तवतु (तवत्) प्रत्यय होता है। यह कर्तृवाच्य में होता है, अतः कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया, क्रिया कर्ता के अनुसार। 'त' प्रत्यय वाले रूपों में 'वत्' और जोड़ देने से तवत्-प्रत्ययान्त रूप बन जाते हैं। जैसे—कृत-कृतवत्, दृष्ट-दृष्टवत्, उक्त-उक्तवत्।

नियम ७०—(तवत् प्रत्यय) तवत्-प्रत्ययान्त के रूप पुंलिंग में भगवत् (७), स्त्रीलिंग में नदी (१३) और नपुंसकलिंग में जगत् (२१) के तुल्य चलेंगे। जैसे—स पुस्तकं पठितवान्। तौ पुस्तकं पठितवन्तौ। ते पुस्तकानि पठितवन्तः। सा पुस्तकं पठितवती। तत् फलं पतितवत्।

सूचना—वाच् शब्द (१७) और दा धातु (२५) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—मधुरां वाचं वद। ऋचं पठ। शुचं त्यज। खगस्य त्वचं स्पृश। शिल्पं श्रीवृद्धेः साधनम् अस्ति। शिल्पिनः वस्तूनि रचयन्ति। तक्षा रथम्, तन्तुवायः पटम्, चर्मकारः पादत्राणम्, यान्त्रिकः यन्त्रं निर्मापयति। नापितः क्षुरेण केशान् कृन्तति। तन्तुवायः पटं वयति। बालकाय फलं देहि। स मह्यं फलानि अददात्। निर्धनाय धनं दद्यात्। क्षुधिताय भोजनं दद्यात्।

(क) संस्कृत बनाओ—

सदा मधुर वचन बोलो। वेद की ऋचाओं को पढ़ो। शोक न करो। कौवे की त्वचा काली (कृष्णा) होती है। शिल्प से श्रीवृद्धि होती है। शिल्पी नई वस्तुएँ बनाते हैं। बढ़ई मेज बनाता है। जुलाहा कपड़ा बुनता है। चमार जूता बनाता है। नाई उस्तरे से बाल काटता हैं। यान्त्रिक यन्त्र बनाता है। उसने गीता पढ़ी। उन्होंने वेद पढ़ा। उस बालिका ने पत्रिका पढ़ी। वह पत्ता गिरा। उसने सत्य कहा। मैंने घोड़ा देखा। उन्होंने लेख लिखा। वे कहाँ गये ? बच्चे को फल दो। निर्धन को धन दो उसने मुझे धन दिया। तुम मुझे क्या दोगे ? मैं तुझे पुरस्कार दूंगा। वह भूखे को भिक्षा दे।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

नापितः क्षुरेण किं करोति ? शिल्पिनः किं रचयन्ति ? यान्त्रिकः किं रचयति ? तन्तुवायः किं वयति ? क्षुधिताय किं दद्यात् ? सा किं पठितवती ? स किं दृष्टवान् ? स किम् उक्तवान् ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(तवत् प्रत्यय)

सा सत्यम्……(ब्रू)।
ते पुस्तकानि……(पठ्)।
वयं ग्रन्थान्……(दृश्)।
ते लेखान्……(लिख्)।
वयं कार्यं……(कृ)।
वृक्षात् पत्रं……(पत्)।

(घ) वाच् शब्द के रूप लिखो।

(ङ) दा धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) इन धातुओं के तवत् प्रत्यय के रूप बनाओ—

पठ्, गम्, लिख्, दृश्, पा, हस्, ब्रू, छिद्।

अभ्यास—४१

शब्दावली—सौचिकः = दर्जी, सूचिका = सूई, स्थपतिः = राज, मिस्त्री, अश्मचूर्णम् = सीमेंट, इष्टका = ईंट, चित्रकारः = पेण्टर, वर्तिका = ब्रश, कर्तरी = कैंची, शिल्पशाला = फैक्टरी। वारि = जल, शुचि = स्वच्छ, पवित्र, सुरभि = सुगन्धित, मनोहारिन् = मनोहर, सिव् = सीना, सीव्यति = सीता है, धा = रखना, नि + धा = रखना, वि + धा = करना।

नियम ७१—(शतृ प्रत्यय) 'रहा है' 'रहा था' आदि 'रहा' वाले प्रयोगों का अनुवाद शतृ (अत्) प्रत्यय लगाकर होता है। रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि धातु के लट् प्र० पु० बहु० के रूप में से 'इ' और 'न्' हटा दें तो शतृ प्रत्यय वाला रूप बचता है। जैसे—पठ्-पठन्ति-पठत्। लिख्-लिखत्। कृ-कुर्वत्। गम्-गच्छत्। शब्दों के रूप पुंलिंग में गच्छत् (८), स्त्रीलिंग में नदी (१३) और नपुं० में जगत् (२१) के तुल्य चलेंगे। जैसे—स गच्छन् आसीत्—वह जा रहा था। गच्छन्तं सिंहं पश्य। स क्रीडन् अस्ति।

सूचना—वारि शब्द (१९) और धा धातु (३६) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य-शुचि वारि पिब। सुरभि पुष्पं जिघ्र। मनोहारि दृश्यं पश्य। सौचिकः सूचिकया वस्त्रं सीव्यति। स्थपतिः इष्टकाभिः अश्मचूर्णेन च भवनं निर्मापयति। चित्रकारः वर्तिकया चित्रं करोति। शिल्पशालायां शिल्पिनः वस्तूनि निर्मापयन्ति। सा गच्छन्ती आसीत्। पठते बालकाय मोदकं यच्छ। धावतः अश्वात् नरः अपतत्। राजा रत्नं दधाति। फलके पुस्तकं निधेहि। त्वम् एतत् कार्यं विधेहि। त्वं किं विदधासि ? अहं टंकणक्रियां (टाइप) विदधामि।

(क) संस्कृत बनाओ—

वह स्वच्छ जल पीता है। मैं सुगन्धित फूल सूंघता हूँ। तुम मनोहर चित्र को देखो। दर्जी सूई से क्या सी रहा है ? वह कपड़ा सी रहा है। मिस्त्री ईंट और सीमेंट से मन्दिर बना रहा है। चित्रकार कूँची से बालिका का चित्र बना रहा है। फैक्टरी में कारीगर नई वस्तुएँ बनाते हैं। तुम यह कार्य करो। इस पुस्तक को वहाँ रखो। मैं टाइप कर रहा हूँ। राजा मुकुट धारण करता है। वह घर जा रहा था। जाते हुए शेर को देखो। पढ़ते हुए बालक को फल दो। दौड़ते हुए घोड़े से वह बालक गिरा। तुम कहाँ जा रहे हो ? तुम क्या पढ़ रहे हो ? मैं मैदान में खेल रहा था।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

कीदृशं वारि पिब ? सौचिकः किं सीव्यति ? चित्रकारः किं करोति ? शिल्पशालायां किं भवति ? त्वं किं विद[illegible]सि ? पुस्तकं कुत्र निधेहि ? पठते बालकाय किं ददासि ? धावतः अश्वात् कः अपतत् ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—(शतृ प्रत्यय)

······बालकं पश्य (गम्)।
······बालकाय मोदकं यच्छ (पठ्)।
······अश्वात् नरः पतितः (धाव्)।
अहं······अस्मि (क्रीड्)।
स कार्यं······आसीत् (कृ)।
अहं चित्रं······अस्मि (दृश्)।

(घ) वारि शब्द के रूप लिखो।

(ङ) धा धातु के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् के रूप लिखो।

(च) शतृ प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—

पठ्, लिख्, गम्, कृ, दृश्, घ्रा, क्रीड्, धाव्।

अभ्यास ४२

शब्दावली—मधु = शहद, दारु = लकड़ी, अम्बु = जल, वस्तु = वस्तु, वसु = धन, अश्रु = आँसू, स्वादु = स्वादिष्ट, बहु = बहुत, शाकम् = साग, आलुः = आलू, रक्ताङ्गः = टमाटर, गोजिह्वा = गोभी, कलायः = मटर, भण्टाकी = बैंगन, मूलकम् = मूली, गृञ्जनम् = गाजर, अलाबुः = लौकी, युध् = लड़ना (आ०) बुध् = जानना (आ०), शुध् = शुद्ध होना (पर०), अप् = जल, गात्रम् = शरीर।

नियम ७२—(शानच् प्रत्यय) आत्मनेपदी धातुओं से 'रहा' अर्थ में लट् के स्थान पर शानच् (आन) प्रत्यय होता है। कहीं पर 'मान' हो जाता है। 'आन' प्रत्ययान्त के रूप पुंलिंग में रामवत्, स्त्रीलिंग में बालिकावत्, नपुं० में फलवत् चलेंगे। 'आन' से बने कुछ रूप ये हैं—वर्तते-वर्तमानः। सेवते-सेवमानः। वर्धते-वर्धमानः। यजते-यजमानः। मोदते-मोदमानः। सहते-सहमानः। एधते-एधमानः। स याचमानः अस्ति-वह माँग रहा है। स वर्धमानः अस्ति। सा वर्धमाना अस्ति।

सूचना—मधु शब्द (२०) और युध् धातु (४१) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—मधु खाद। मधु आनय। दारु आनय। निर्मलम् अम्बु पिब। बालकस्य अश्रूणि पतन्ति। स वसूनि धारयति। इदं भोजनं बहु स्वादु वर्तते। अहम् अद्य भोजने आलोः रक्ताङ्गस्य गोजिह्वायाः च शाकम् अभक्षयम्। त्वं च कलायस्य भण्टाक्याः मूलकस्य गृञ्जनस्य अलाबोः च शाकम् अभक्षयः। योधाः युद्धेषु युध्यन्ते। बुधाः वेदार्थं बुध्यन्ते। बुद्धिः ज्ञानेन शुध्यति। मनः सत्येन शुध्यति। अद्भिः गात्राणि शुध्यन्ति।

(क) संस्कृत बनाओ—

शहद खाओ। शहद यहाँ लाओ। गंगा का जल पवित्र होता है। यहाँ कितनी वस्तुएँ हैं ? शिशु के आँसू गिर रहे हैं। यह आम बहुत स्वादिष्ट हैं। तुम्हें किसका साग अच्छा लगता है ? आलू का, गोभी का या मटर का ? लौकी, गाजर और मूली का साग खाओ। आलू-गोभी और आलू-मटर का साग उसे अच्छा लगता है। सैनिक युद्ध में लड़ते हैं। दुर्जन घर में ही लड़ पड़े। विद्वान् धर्म और अर्थ को जानते हैं। बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है। जल से शरीर शुद्ध होता है। सत्य से मन शुद्ध होता है। वह माँग रहा ह। वह बढ़ रहा है। वह दुःख सह रहा था।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

गङ्गायाः अम्बु कीदृशम् अस्ति ? तत्र कति वस्तूनि सन्ति ? तुभ्यं कस्य शाकं रोचते ? त्वम् अद्य कस्य शाकम् अभक्षय ? बुद्धिः केन शुध्यति ? मनः केन शुध्यति ? गात्राणि कथं शुध्यन्ति ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

बुधाः धर्मं बुध्यन्ति। मनः सत्येन शुध्यते। वीराः युद्धेषु युध्यन्ति। तत्र पञ्च वस्तु सन्ति। त्वां कस्य शाकं रोचन्ते ? दुर्जनाः गृहे एव युध्यन्ति। अयम् आम्रः बहु स्वादिष्टः अस्ति।

(घ) मधु शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) युध् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) इनके शानच् (आन)-प्रत्ययान्त रूप बनाओ—

मुद्, यज्, सह्, वृत्, वृध्, एध्, याच्।

अभ्यास ४३

शब्दावली—जगत् = संसार, वियत् = आकाश । महत् = महान्, पचत् = पकाता हुआ, पतत् = गिरता हुआ, शाकाहारिन् = शाकाहारी, मांसाहारिन् = मांसाहारी, भिण्डक: = भिंडी, जालिनी = तोरई, कूष्माण्ड: = कद्दू, कर्कटी = ककड़ी, लवणम् = नमक, पलाण्डु: = प्याज, हरिद्रा = हल्दी, धान्यकम् = धनिया, उपस्कर: = मसाला । जन् = पैदा होना ।

नियम ७३—(तुमुन् प्रत्यय) को, के लिए, अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् (तुम्) प्रत्यय होता है । यह अव्यय होता है । इसके रूप नहीं चलते । धातु को गुण होता है । जैसे—पढ़ने को, खाने को आदि । पठ्-पठितुम्, लिख्-लेखितुम्, गम्-गन्तुम्, कृ-कर्तुम्, रुद्-रोदितुम्, पच्-पक्तुम्, हृ-हर्तुम्, धृ-धर्तुम्, स्ना-स्नातुम्, पा-पातुम्, ब्रू (वच्)-वक्तुम्, दृश्-द्रष्टुम्, वह्-वोढुम्, सह-सोढुम्, यज्-यष्टुम्, दा-दातुम्, नी-नेतुम्, प्रच्छ्-प्रष्टुम् । अहं पठितुं विद्यालयं गच्छामि । अहम् एतत् कार्यं कर्तुं शक्नोमि । जलं पातुम् इच्छामि ।

सूचना—जगत् शब्द (२१) और जन् धातु (४२) के रूप स्मरण करो ।

उदाहरण वाक्य—इदं जगत् सुन्दरम् अस्ति । वियति महान्तः पक्षिणः उड्डीयन्ते । पचन्तं पाचकं पतत् फलं च पश्य । शाकाहारिण: भिण्डकस्य, जालिन्याः, कूष्माण्डस्य च शाकं खादन्ति । मांसाहारिण: मांसं भक्षयन्ति । शाके हरिद्रा, धान्यकं पलाण्डुः उपस्करः लवणं च क्षिप्यन्ते । इदं जगत् जायते । तत्र शान्तिः जायताम् । बालः अजायत । शतेषु शूरः जायते । देशे वीराः बालकाः जनिष्यन्ते ।

(क) संस्कृत बनाओ –

यह संसार सुन्दर और असुन्दर दोनों (द्वयम्) है। यह भवन महान् है। आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं। गिरते हुए फल को देखो। रसोइया भोजन पका रहा है। शाकाहारी भिंडी, तोरई, कद्दू का साग खाते हैं। साग में नमक, मसाला, हल्दी, धनिया डाले जाते हैं। मांसाहारी मांस खाते हैं। मांसाहार स्वास्थ्य के लिए हानिकर है। यह संसार उत्पन्न होता है। देश में शान्ति हो। शिशु उत्पन्न हुआ। सैकड़ों में कोई एक वीर उत्पन्न होता है। तुम पढ़ने (के लिए) विद्यालय जाओ। मैं गुरु को देखना चाहता हूँ। मैं यह कार्य कर सकता हूँ। तुम जल पीने (के लिए) कुएँ के पास जाओ।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

इदं जगत् कीदृशम् अस्ति? वियति के उड्डीयन्ते? किं पतत् अस्ति? शाके किं किं क्षिप्यते? मांसाहारः स्वास्थ्याय कीदृशः अस्ति? त्वं किं कर्तुं शक्नोषि? त्वं किं द्रष्टुम् इच्छसि?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

इदं जगत्······अस्ति।
अहं पितरं ·····इच्छामि (दृश्)।
अहं कार्यं······शक्नोमि (कृ)।
अहं दुःखं··· शक्नोमि (सह्)।
अहम् इमं भारं······शक्नोमि (वह्)।
अहं जलं······इच्छामि (पा)।

(घ) जगत् शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) जन् धातु के लट्, लोट्, लङ्, लृट् के रूप लिखो।

(च) इन धातुओं के तुमुन् (तुम्) प्रत्यय वाले रूप बनाओ—

पठ्, लिख्, गम्, पा, दा, स्ना, नी, प्रच्छ्, वह्, सह्, दृश्।

अभ्यास ४४

शब्दावली— नामन् = नाम, प्रेमन् = प्रेम, व्योमन् = आकाश, लोमन् = बाल, सामन् = सामवेद का मंत्र, शैलः = पहाड़, अद्रिः = पर्वत, शिला = चट्टान, निर्झरः = झरना, उत्सः = सोता, गुहा = गुफा, खनिः = खान, धातुः = धातु, हिमम् = बर्फ, अद्रिद्रोणी = घाटी, सु = रस निकालना, दु = दुःख देना, द्वयम् = दो. त्रयम् = तीन, चतुष्टयम् = चार, पञ्चकम् = पाँच, षट्कम् = छह, सप्तकम् = सात, दशकम् = दस।

नियम ७४—(क्त्वा प्रत्यय) 'कर' या 'करके' अर्थ में धातु से क्त्वा (त्वा) प्रत्यय होता है। यह अव्यय है, रूप नहीं चलते। जैसे—पढ़कर, लिखकर, जाकर आदि। पठ्-पठित्वा, लिख्-लिखित्वा, गम्-गत्वा, हन्-हत्वा, कृ-कृत्वा, हृ-हृत्वा, तॄ-तीर्त्वा, पॄ-पूर्त्वा, यज्-इष्ट्वा, ब्रू (वच्)-उक्त्वा, प्रच्छ्-पृष्ट्वा, वह्-ऊढ्वा, सह्-सोढ्वा, ग्रह् = गृहीत्वा, वस्-उषित्वा, दृश्-दृष्ट्वा, पा-पीत्वा, दा-दत्त्वा, पच्-पक्त्वा, हस्-हसित्वा, भक्ष्-भक्षयित्वा। पठित्वा, लिखित्वा, भुक्त्वा च विद्यालयं गच्छ।

सूचना—नामन् शब्द (२२) और सु धातु (४३) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—प्रभोः नाम स्मर। बालेषु प्रेम कुर्याः। साम गाय। शैलेषु शिलाः, निर्झराः, उत्साः, गुहाः च भवन्ति। शैलेषु धातूनां खनिः, हिमस्य च समूहः प्राप्यते। अद्रिद्रोण्यां जनाः निवसन्ति। स सोमं सुनोति। दुर्जनः सज्जनं दुनोति। अत्र छात्रद्वयम्, पुस्तकत्रयम्, बालिकाचतुष्टयम्, फलषट्कम्, पुष्पदशकं च वर्तन्ते। त्वं भोजनं खादित्वा, जलं पीत्वा, स्वकार्यं च पूर्त्वा, विद्यालयं गच्छ।

(क) संस्कृत बनाओ—

अपना नाम अमर करो। प्रभु का नाम स्मरण करो। व्योम में पक्षी है। शिर पर बाल हैं। साम का गान करो। पहाड़ पर शिला, गुफा, झरने और सोते होते हैं। पहाड़ों पर बर्फ का ढेर और धातुओं की खानें भी होती हैं। घाटी में गाँव, नदी और जंगल होते हैं। सोम का रस निकालो। किसी को दुःख न दो (दु)। यहाँ पर तीन छात्र, चार छात्राएँ, सात पुस्तकें, आठ फल, नौ फूल और दस वृक्ष हैं। तुम पाठ पढ़कर, लेख लिखकर और खाना खाकर विद्यालय जाओ। गुरु से प्रश्न पूछकर यहाँ आवो। फल लेकर, पुस्तकें देकर और भार लेकर वहाँ जावो। यहाँ आकर काम करो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

कस्य नाम स्मर ? व्योम्नि के उड्डीयन्ते ? शैले किं किं भवति ? अद्रिद्रोण्यां के निवसन्ति ? पुस्तकपञ्चकं कुत्र वर्तते ? किं कृत्वा विद्यालयं गच्छ ? गुरुं किं पृष्ट्वा आगच्छसि ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

स पुस्तकं ग्रीहीत्वा आगच्छति। गुरोः प्रश्नं पृष्ट्वा आगच्छ। त्वं जलं पात्वा आगच्छति। स नदीं तृत्वा इह आगतः। त्वं शत्रुं हनित्वा आगच्छसि। त्वं दुःखं सहित्वा विद्यां पठ।

(घ) नामन् और प्रेमन् शब्द के पूरे रूप लिखो।

(ङ) सु धातु के लट्, लङ् और विधिलिङ् के रूप लिखो।

(च) इन धातुओं के क्त्वा (त्वा) प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—

पठ्, लिख्, गम्, हन्, तॄ, पॄ, प्रच्छ्, दृश्, सह्, वह्, पच्।

अभ्यास—४५

शब्दावली—पयस् = जल, दूध; यशस् = यश, वचस् = वचन, शिरस् = शिर, सरस् = तालाब, तपस् = तपस्या, सदस् = सभा, नभस् = आकाश। वनम् = वन, लता = लता, वृक्षः = वृक्ष, मञ्जरी = बौर, पर्णम् = पत्ता, किसलयः = कोंपल, भद्रदारुः = चीड़, देवदारुः = देवदार, करीरः = बबूल। आप् = पाना, प्राप् = पाना, व्याप् = व्याप्त होना, समाप् = समाप्त करना, अधि + इ = पढ़ना, अधीते = पढ़ता है।

नियम ७५—(उपसर्ग) धातु से पहले लगने वाले प्र परा आदि को उपसर्ग कहते हैं। इनके लगने से धातु का अर्थ प्रायः बदल जाता है। कुछ उपसर्ग ये हैं–प्र, परा, अप, सम्, अनु, निर्, दुर्, वि, नि, उत्, उप।

नियम ७६—(ल्यप् प्रत्यय) धातु से पहले कोई उपसर्ग होगा तो तो क्त्वा (त्वा) को ल्यप (य) हो जाता है। जैसे—आदाय (लेकर), आगत्य (आकर), प्रहृत्य (प्रहार करके), आनीय (लाकर), आहूय (बुलाकर), प्रारभ्य (प्रारम्भ करके)।

नियम ७७—(गुण, वृद्धि, संप्रसारण)—गुण कहने पर ये कार्य होते हैं—इ, ई को ए, उ, ऊ को ओ, ऋ, ॠ को अर्, ए को ऐ, ओ को औ। संप्रसारण में ये कार्य होते हैं—य् को इ, व् को उ, र् को ऋ।

सूचना—पयस् शब्द (२३) और आप् धातु (४४) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—पयः पिब। यशः इच्छ। वचः ब्रूहि। सरसि कमलानि सन्ति। सदसि वद। वनेषु वृक्षाः लताः देवदारुः भद्रदारुः करीरः च भवन्ति। वृक्षेषु मञ्जर्यः, पर्णानि, किसलयानि च भवन्ति। त्वं रामम् आहूय, पुस्तकम् आदाय च अत्र आगच्छ। स धनं प्राप्नोत्। ईश्वरः जगत् व्याप्नोति। स कार्यं समाप्नोति।

(क) संस्कृत बनाओ—

जल पीओ। यश चाहो। सभा में वचन बोलो। शिर पर बाल हैं। तालाब में फूल हैं। आकाश में पक्षी हैं। वन में देवदार, चीड़ और बबूल के पेड़ हैं। लताओं पर पत्ते, कोंपल, बौर और फूल हैं। मैं पुरस्कार पाता हूँ। तूने धन पाया। ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है। वह अपना काम समाप्त करता है। यहाँ आकर काम करो। राम को बुलाकर लाओ। कार्य प्रारम्भ करके न छोड़ो। मुझे फल लाकर दो। शत्रु प्रहार करके भागा (पलायित:)। गुरु को प्रणाम करके (प्रणम्य) यहाँ आवो। यह शास्त्र पढ़ कर (अधीत्य) विद्वान् हुआ। तुम उठ कर (उत्थाय) यहाँ आवो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

सदसि किं कुरु ? किम् इच्छ ? शिरसि के सन्ति ? नभसि के उड्डीयन्ते ? वनेषु किं भवति ? वृक्षेषु किं भवति ? क: जगत् व्याप्नोति ? क: धनं प्राप्नोत् ? किम् आदाय विद्यालयं गच्छ ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

सदसि भद्रं वच:……(ब्रू)।
मह्यं जलम्…देहि (आनी)।
कार्यं…न त्यज (प्रारम्भ)।
शास्त्रम्…विद्वान् भव (अधी)।
गुरुं…अत्र आगच्छ (प्रणम्)।
पुस्तकम्…तत्र गच्छ (आदा)

(घ) पयस् और सरस् शब्द के रूप लिखो।

(ङ) आप् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) इन धातुओं के ल्यप् (य) प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—
आदा, आनी, आगम्, ग्रह, प्रणम्, उत्था, अधि+इ, प्रारभ्।

अभ्यास ४६

शब्दावली—मनस् = मन, तमस् = अंधकार, तेजस् = तेज, ओजस् = तेज, ओज; वयस् = आयु, उरस् = छाती, छन्दस् = छन्द। आम्रः = आम, जम्बूः = जामुन, अश्वत्थः = पीपल, निम्बः = नीम, वटः = बड़, नारिकेलः = नारियल, बिल्वः = बेल, पलाशः = ढाक, पनसः = कटहल, शाल्मलिः = सेमर। शक = सकना, चि = चुनना। पानकम् = शरबत।

नियम ७८—(तव्य प्रत्यय) धातु से 'चाहिए' अर्थ में तव्यत् (तव्य) प्रत्यय होता है। यह कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है। धातु को गुण होगा। क्त प्रत्यय के तुल्य तव्य में भी कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा, कर्म के अनुसार लिंग, विभक्ति, वचन होंगे। भाववाच्य में नपुं० एक० होगा। तव्य प्रत्यय के रूप, कृ—कर्तव्य। पठितव्य, लेखितव्य, नेतव्य, जेतव्य, द्रष्टव्य, प्रष्टव्य, गन्तव्य। मया पुस्तकं पठितव्यम्। मया बालिका द्रष्टव्या। मया ग्रन्थाः पठितव्याः।

नियम ७९—(अनीयर प्रत्यय) धातु से चाहिए अर्थ में अनीयर् (अनीय) प्रत्यय होता है। तव्य के तुल्य सब नियम लगेंगे। अनीय प्रत्यय के रूप—करणीय, पठनीय, लेखनीय, दर्शनीय, गमनीय, स्मरणीय, शोचनीय आदि। मया कार्यं करणीयम्।

सूचना—मनस् शब्द (२४) और शक् धातु (४५) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—मनः शक्तेः स्रोतः अस्ति। तमसि न गच्छ। ओजः तेजः च धारय। किं ते वयः? मम उरसि पीडा वर्तते। वाटिकायाम् आम्राः अश्वत्थाः बिल्वाः पनसाः च भवन्ति। आम्रं जम्बूफलानि बिल्वं नारिकेलं च भक्षय। अहम् एतत् कार्यं कर्तुं शक्नोमि। त्वं फलानि चिनु। अहं कार्यं कर्तुम् अशक्नवम्।

(क) संस्कृत बनाओ—

आपका मन शुद्ध है। मन शक्ति का स्रोत है। अंधकार में न जाओ। तुम्हारी क्या आयु है? मेरी आयु बीस वर्ष है। छन्दों को स्मरण करो। मेरी छाती में दर्द है। उद्यान में आम, जामुन, नीम बड़, बेल और ढाक के वृक्ष हैं। तुम आम, जामुन और नारियल खाओ। बेल का शरबत लाभदायक होता है। तुझे पाठ पढ़ना चाहिए। तुझे लेख लिखना चाहिए। तुझे गाँव जाना चाहिए। मुझे लड़की देखनी चाहिए। तुझे पाठ याद करना चाहिए। वह यह काम कर सकता है। मैं लेख लिख सकता हूँ। मैं यह काम कर सका। तुम कल चुनो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

किं ते वयः? ते उरसि किं वर्तते? किं फलं भक्षय? उद्याने के वृक्षाः सन्ति? कानि फलानि तुभ्यं रोचन्ते? बिल्वस्य पानकं कीदृशम् अस्ति? त्वया किं कर्तव्यम्? त्वया किं पठनीयम्? मया का द्रष्टव्या?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

मया पाठं पठितव्यम्। त्वया कार्यः करणीयः। रामेण लङ्का जेतव्यः। त्वया बाला द्रष्टव्यः। मम वयः त्रिंशत् वर्षः अस्ति। मया कानि कर्माणि कर्तव्यम्। मया ग्रामं गन्तव्यम्। त्वं पाठं स्मर्तव्यम्।

(घ) मनस् और तमस् शब्दों के रूप लिखो।

(ङ) शक् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(च) इन धातुओं के तव्य और अनीय प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—

पठ्, लिख्, गम्, कृ, दृ, दृश्, हस्, पा।

अभ्यास ४७

शब्दावली—नगरम् = शहर, नगरी = कस्बा, कुटी = कुटिया, भवनम् = मकान, प्रासादः = महल, मार्गः = सड़क, राजमार्गः = मुख्य सड़क, उद्यानम् = बगीचा, पुरोद्यानम् = पार्क, वीथिका = गली, मृ = मरना, कर्तृ = करने वाला, हर्तृ = चुराने वाला, दातृ = देने वाला, अध्येतृ = पढ़ने वाला, करणम् = करना, पठनम् = पढ़ना, लेखनम् = लिखना, चिन्तनम् = सोचना।

नियम ८०—(तृच् प्रत्यय) धातु से 'वाला' (कर्ता) अर्थ में तृच् (तृ) प्रत्यय होता है। धातु को गुण होता है। पुंलिंग में कर्तृ और स्त्रीलिंग में नदी के तुल्य रूप चलेंगे। कुछ रूप ये हैं—कर्तृ-कर्त्री, दातृ, धातृ, पक्तृ, छेतृ, प्रष्टृ। ईश्वरः जगतः कर्ता, धर्ता, हर्ता च अस्ति। प्रकृतिः कर्त्री अस्ति। स दाता, द्रष्टा, पक्ता, छेत्ता, प्रष्टा च अस्ति।

नियम ८१—(ल्युट प्रत्यय) भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से ल्युट् (अन) प्रत्यय होता है। धातु को गुण होगा। नपुं० में रूप चलते हैं। जैसे—पठ्-पठनम्, लेखनम्, गमनम्, भजनम्, गानम्, पानम्, स्थानम्। तस्य पठनं लेखनं गमनं गानं च सुन्दरम् अस्ति, सुन्दराणि सन्ति वा।

सूचना - मृ धातु (५१) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—इदं नगरं सुन्दरम् अस्ति। अत्र प्रासादाः, भवनानि, उद्यानानि, पुरोद्यानानि, राजमार्गाः, वीथिकाः च सन्ति। संसारे जनाः जायन्ते म्रियन्ते च। त्वं न बिभीहि, न मरिष्यसि। पशुः अम्रियत। रामस्य पठनं लेखनं गमनं गानं सर्वं सुन्दरम् अस्ति। पठने अनध्यायः न कर्तव्यः। ग्रन्थस्य कर्ता धर्ता दाता च अत्र सन्ति। धनस्य दातुः यशः भवति। धनस्य हर्तुः निन्दा भवति।

(क) संस्कृत बनाओ—

यह नगर सुन्दर है। इस नगर में मैं रहता हूँ। इस नगर में भवन, महल, बगीचे, पार्क, सड़कें और गलियाँ हैं। नगर का राजमार्ग स्वच्छ है। कस्बे में कुटियाँ, भवन, सड़क और उद्यान होते हैं। इस संसार में सारे प्राणी उत्पन्न होते हैं और मरते हैं। कौन नहीं मरता ? आत्मा नहीं मरता। पशु मरा। तुम मत डरो, नहीं मरोगे। इन छात्रों का पढ़ना, लिखना, गाना और जाना सुन्दर है। यह स्थान स्वच्छ है। धन का दाता नगर में रहता है। भोजन को पकाने वाला यहाँ आ रहा है। धन का हर्ता पापी है। संसार का कर्ता ईश्वर है। रानी धन की दात्री है। अध्येता ग्रन्थों को पढ़ता है।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

इदं नगरं कीदृशम् अस्ति ? अस्मिन् नगरे के निवसन्ति ? नगरे कानि वस्तूनि भवन्ति ? नगर्यां किं किं भवति ? के जायन्ते म्रियन्ते च ? धनस्य दातुः किं भवति ? कस्य निन्दा भवति ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

सर्वे लोकाः जायन्ते······च।
ईश्वरः ······कर्ता धर्ता च अस्ति।
इदं नगरं······अस्ति।
······पुरोद्यानानि सन्ति।
त्वं न······न मरिष्यसि।
नगरे······भवन्ति।

(घ) मृ धातु के लट्, लोट्, लङ्, लृट् के रूप लिखो।

(ङ) इन धातुओं के तृच् (तृ) और ल्युट् (अन) लगाकर रूप बनाओ—

कृ, धृ, भृ, मृ, दा, धा, ज्ञा, पा।

अभ्यास ४८

शब्दावली—नगरपालिका = म्युनिसिपलिटी, निगमः = कार्पोरेशन, द्वारम् = द्वार, कपाटम् = किवाड़, प्राङ्गणम् = आँगन, सोपानम् = सीढ़ी, चतुष्पथः = चौराहा, रक्षिस्थानम् = थाना, कोटपालः = कोतवाल, कोटपालिका = कोतवाली। मुच् = छोड़ना, सिच् = सींचना। स्म = भूतकालसूचक अव्यय।

नियम ८२—(क्तिन् प्रत्यय) धातुओं से क्तिन् (ति) प्रत्यय होता है। 'ति' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। मति शब्द (१२) के तुल्य रूप चलेंगे। ये भाववाचक संज्ञाशब्द होते हैं। कुछ रूप ये हैं—कृतिः (करना) गतिः (जाना), भू-भूतिः, स्था-स्थितिः, पा-पीतिः, गा-गीतिः स्तुतिः, भक्तिः। गम्-गतिः, मन्-मतिः, बुध्-बुद्धिः, वच्-उक्तिः, मुच्-मुक्तिः, शम्-शान्तिः।

नियम ८३—(घञ् प्रत्यय) धातु से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाने के लिए घञ् (अ) प्रत्यय होता है। धातु को वृद्धि होती है। घञ् प्रत्ययान्त शब्द पुंलिंग होते हैं। कुछ घञ्-प्रत्ययान्त शब्द ये हैं—पठ्-पाठः, लिख्-लेखः, हस्-हासः, कृ-कारः, हृ-हारः, पच्-पाकः, त्यज्-त्यागः, रुज्-रोगः, युज्-योगः, भुज्-भोगः, हन्-घातः। भोजनस्य पाकः। बालकस्य हासः।

सूचना—मुच् धातु (५२) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—नगरेषु नगरपालिका भवति। महानगरेषु निगमाः भवन्ति। नगरेषु चतुष्पथाः, रक्षिस्थानानि, कोटपालाः, कोटपालिकाः च भवन्ति। भवनेषु द्वाराणि, कपाटानि प्राङ्गणानि, सोपानानि च भवन्ति। माता बालं न मुञ्चति। त्वं मुञ्च माम्। यतिः गृहम् अमुञ्चत्। बालिका वृक्षं सिञ्चति। त्वं वृक्षान् सिञ्च। रामस्य कृतिः शोभना अस्ति। त्वं बुद्धिं शक्तिं शान्तिं मुक्तिं च इच्छ। योगः मुक्त्यै, भुक्त्यै भवति। स पठति स्म, लिखति स्म च।

(क) संस्कृत बनाओ—

बड़े नगरों में निगम होते हैं। नगरों में नगरपालिकाएँ होती हैं। नगरों में चौराहे, थाने, कोतवाली होती हैं। कोतवाल नगर की रक्षा करता है। मकानों में द्वार, किवाड़, आँगन और सीढ़ी भी होती हैं। तुम कुपथ को छोड़ो। माता बच्चे को नहीं छोड़ती है। तुम वृक्षों को सींचो। बच्चे पेड़ों को सींच रहे हैं। वन में शेर रहता था। बच्चा पढ़ रहा था। इस कवि की कृति सुन्दर है। गज की गति सुन्दर है। तुम शक्ति, शान्ति और मुक्ति चाहो। रामायण का पाठ मुझे अच्छा लगता है। बुद्धि से काम करो। ईश्वर की भक्ति और स्तुति करो। आहार और विहार को नियमित करो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

नगरेषु किं किं भवति ? कोटपालः किं करोति ? चतुष्पथाः कुत्र भवन्ति ? माता कं न मुञ्चति ? यतिः किम् अमुञ्चत् ? कस्य कृतिः शोभना अस्ति ? त्वं किम् इच्छ ? कस्य ग्रन्थस्य पाठः तुभ्यं रोचते ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

नगरे नगरपालिका भवन्ति। कोटपालः नगरस्य रक्षति। त्वां कि रोचते ? मां शान्तिः रोचते। त्वं गृहं मुञ्चतु। स नगरम् अमुञ्चन्। के वृक्षान् सिञ्चति ? माता पुत्रं न मुञ्चन्ति। त्वं शान्तिः इच्छ।

(घ) मुच् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(ङ) इन धातुओं के क्तिन् (ति) प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—

कृ, दृ, धृ, गम्, शम्, पच्, भज्, स्था, पा, गा, मन्, बुध्।

अभ्यास ४९

शब्दावली—गृहम् = घर, गवाक्षः = खिड़की, छदिः (स्त्री०) = छत, वरण्डः = बरामदा, कक्षः = कमरा, महाकक्षः = हाल, काचः = कांच, नालिः = नाली, शयनकक्षः = सोने का कमरा, उपवेशकक्षः = ड्राइंग-रूम, कुट्टिमम् = फर्श, खट्वा = खाट, पल्यङ्कः = पलंग, काष्ठासनम् = तख्त, भवनपृष्ठम् = ऊपर की छत, भित्तिः = दीवार, प्रलेपः = प्लास्टर। रुध् = रोकना, ढकना; छिद् = काटना।

नियम ८४—(समास) दो या अधिक शब्दों को मिलाने को समास कहते हैं। समास करने पर समास हुए शब्दों के बीच की विभक्ति (कारक) नहीं रहती। समस्त पद एक हो जाता है और अन्त में विभक्ति लगती है। समास ६ हैं—१. अव्ययीभाव, २. तत्पुरुष, ३. कर्मधारय, ४. द्विगु, ५. बहुव्रीहि, ६. द्वन्द्व।

नियम ८५—(अव्ययीभाव समास) अव्ययीभाव समास में किसी विशेष अर्थ में कोई अव्यय शब्द पहले रखा जाता है। समस्तपद अकारान्त होगा तो नपुं० एक० होगा। अन्य शब्द अव्यय होंगे। जैसे—प्रत्येक अर्थ में 'प्रति'–प्रतिगृहम्, प्रतिनगरम्। अनुसार अर्थ में 'यथा'–यथाशक्ति। साथ अर्थ में 'सह' को 'स'—सचक्रम्। अभाव अर्थ में निर्–निर्जनम्, निर्विघ्नम्। तक अर्थ में—'आङ्' आसमुद्रम्। समीप अर्थ में 'अनु'–अनुकूलम्।

सूचना—रुध् धातु (५३) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—मम गृहे गवाक्षः, छदिः, वरण्डः, कक्षत्रयम्, शयनकक्षः, उपवेशकक्षः च सन्ति। भित्तौ प्रलेपः अस्ति। भवनपृष्ठे कक्षद्वयं वर्तते। गवाक्षाः काचजटिताः सन्ति। कुट्टिमं दृढम् अस्ति। कक्षे खट्वा, पल्यङ्कः, काष्ठासनं च सन्ति। स मम मार्गं रुणद्धि। तक्षा काष्ठं छिनत्ति। त्वं काष्ठं छिन्धि। मेघः सूर्यम् अरुणत्।

(क) संस्कृत बनाओ—

राम के घर में खिड़की, दरवाजा, छत, कमरे, बरामदा और आंगन हैं। दीवार पर प्लास्टर है। फर्श पक्का है। सोने के कमरे में खाट और पलंग हैं। ड्राइंगरूम में कुर्सी और तख्त हैं। छत पर दो कमरे हैं। खिड़कियों में कांच लगा है। छत का पानी नाली से नीचे जाता है। वह तेरा मार्ग रोकता है। तू मेरा मार्ग न रोक। बढ़ई लकड़ी काटता है। तू लकड़ी फाड़। बादल ने सूर्य को ढक दिया। यथाशक्ति काम करो। यह स्थान निर्जन है। समुद्र तक जाओ। चक्र सहित यहाँ आवो। प्रत्येक नगर में थाने हैं। भाग्य कभी अनुकूल होता है और कभी प्रतिकूल।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

रामस्य गृहे कानि वस्तूनि सन्ति ? भित्तौ किम् अस्ति ? गवाक्षाः कीदृशाः सन्ति। मेघः कम् अरुणत् ? भवनपृष्ठस्य जलं कथं नीचैः गच्छति ? प्रतिनगरं किं भवति ? भाग्यं कीदृशं भवति ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

भित्तौ ····· अस्ति।
उपवेशकक्षे ····· सन्ति।
भवनपृष्ठे ····· वर्तते।
कुट्टिमं ······ अस्ति।
मेघः ······ अरुणत्।
तक्षा ······ छिनत्ति।

(घ) रुध् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(ङ) समास किसे कहते हैं ? समास होने पर क्या कार्य होते हैं ? समास कितने हैं ? उनके नाम लिखो।

अभ्यास ५०

शब्दावली—सुवर्णम् = सोना, रजतम् = चाँदी, ताम्रम् = ताँबा, पित्तलम् = पीतल, लोहम् = लोहा, कांस्यम् = काँसा, शुद्धायसम् = स्टेनलेस स्टील, अभ्रकम् = अबरक, पारदः = पारा, सीसम् = सीसा, त्रपु (नपुं०) = रांगा, गन्धकः = गंधक। भुज् (आ०) = खाना।

नियम ८६—(तत्पुरुष समास) तत्पुरुष समास में दो या अधिक शब्दों का समास होता है। बीच में से द्वितीया आदि विभक्ति का लोप होता है। समस्त पद से विभक्ति होगी। जिस विभक्ति का लोप होगा, उसी विभक्ति के नाम से वह तत्पुरुष समास कहा जायगा। जैसे—द्वितीया तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष आदि। रामम् आश्रितः-रामाश्रितः। विद्यया हीनः-विद्याहीनः। ज्ञानेन शून्यः-ज्ञानशून्यः। गवे हितम्-गोहितम्। स्नानाय इदम्-स्नानार्थम्। रोगात् मुक्तः-रोगमुक्तः। विद्यायाः आलयः-विद्यालयः। राज्ञः पुरुषः-राजपुरुषः। शास्त्रे निपुणः-शास्त्रनिपुणः। कार्ये दक्षः-कार्यदक्षः। जले मग्नः-जलमग्नः।

सूचना—भुज् धातु (आ०, ५४) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—सुवर्णस्य रजतस्य च आभूषणानि भवन्ति। सुवर्णं बहुमूल्यं वस्तु। ताम्रस्य पित्तलस्य लोहस्य कांस्यस्य शुद्धायसस्य च पात्राणि भवन्ति। धातुनिर्मितानि पात्राणि दृढानि भवन्ति। जनाः प्रायः धातुनिर्मितेषु पात्रेषु भोजनं कुर्वन्ति। अभ्रकं पारदः सीसं त्रपु च उपयोगिनः धातवः सन्ति। बालः भोजनं भुङ्क्ते। त्वं भोजनं भुङ्क्ष्व। ते फलानि अभुञ्जत। विद्याहीनः ज्ञानशून्यः वा पशुसमः। स्नानार्थं गच्छ। राजपुरुषः राजकार्यं करोति। शास्त्रनिपुणः शास्त्राणि अधीते।

(क) संस्कृत बनाओ –

सोने के आभूषण बनते हैं। सुनार चाँदी के भी अलंकार बनाता है। तांबा, पीतल, कांसा और स्टेनलेस स्टील के बर्तन बनते हैं। धातुनिर्मित पात्र मजबूत होते हैं। लोग प्रायः धातु-निर्मित पात्रों में खाना खाते हैं। अबरक, रांगा, सीसा और पारा उपयोगी धातुएँ हैं। राम खाना खाता है। तू फल खा। उसने पूआ खाया। तूने मिठाई खाई। वह खीर खाएगा। भोजन के लिए जाओ। विद्याहीन पशुतुल्य होता है। वह रोगमुक्त हुआ। राजपुरुष शासन करता है। शास्त्र-निपुण धर्मग्रन्थ पढ़ता है।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

कः धर्मग्रन्थान् अधीते? राजपुरुषः किं करोति? विद्याहीनः कीदृशः भवति? त्वं किम् अभुङ्क्थाः? रामः किं भोक्ष्यते? सः किं भुङ्क्ते? कस्य आभूषणानि भवन्ति? के उपयोगिनः धातवः सन्ति? कीदृशानि पात्राणि दृढानि भवन्ति?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

सुवर्णस्य आभूषणानि भवति। सुवर्णं बहुमूल्यः वस्तुः। लोहस्य पात्राणि दृढः भवति। विद्याहीनः पशुतुल्यम्। स फलं भुञ्जते। त्वं पूपम् अभुङ्क्त। स पायसं भोक्ष्यति। ते फलानि भुङ्क्ते। कः लवणान्नं भोक्ष्यति? कानि उपयोगिनः धातवः सन्ति?

(घ) भुज् धातु (आ०) के लट्, लोट्, लङ् और लृट् के रूप लिखो।

(ङ) इनके विग्रह (असमस्त रूप) बताओ—

स्नानार्थम्। ज्ञानशून्यः। जलमग्नः। राजपुरुषः। कार्य-निपुणः। रामाश्रितः। रोगमुक्तः। विद्यालयः।

अभ्यास ५१

शब्दावली—यत् = कि, अलम् = बस, समथ; इयत् = इतना कियत् = कितना, यावत् = जितना, तावत् = उतना, चेत् = तो, तर्हि = तो, नो चेत् = नहीं तो, नूनम् = अवश्य वरम् = अच्छा, आम् = हाँ, नहि = नहीं, अन्यत्र = और जगह, अन्यथा = नहीं तो वृथा = व्यर्थ, मुहुः = बारम्बार, भूयः = फिर, पुनः = फिर, वारंवारम् = बार-बार, एकत्र = एक जगह, सर्वत्र = सब जगह, सकृत् = एकबार. असकृत् = बारबार, मुहुः = बारबार, सहसा = एकदम, श्वः = आने वाला कल ह्यः = बीता हुआ कल। मल्लः = पहलवान। गृहाण = लो।

नियम ८७—(कर्मधारय समास) विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। विशेषण शब्द पहले रहेगा, विशेष्य बाद में। जैसे—नीलं कमलम्-नीलकमलम्। महान् आत्मा-महात्मा। मुखम् एव कमलम्-मुखकमलम्। सुन्दर अर्थ में 'सु'। सुन्दरः पुरुषः-सुपुरुषः। तरह अर्थ में 'इव'। घनः इव श्यामः-घनश्यामः।

नियम ८८—(द्विगु समास) कर्मधारय समास में ही पहला शब्द संख्यावाचक होगा तो वह द्विगु समास होगा। सप्त ऋषयः-सप्तर्षयः। समूह अर्थ में—त्रयाणां लोकानां समाहारः-त्रिलोकम्, त्रिलोकी। इसी प्रकार चतुर्युगम्, चतुर्युगी, शताब्दी, त्रिभुवनम्।

सूचना—तन् धातु (५५) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—अलं प्रयत्नेन। मल्लः मल्लाय अलम्। इयत् भोजनं भुङ्क्ष्व। कियत् धनम् इच्छसि ? यावत् इच्छसि तावत् भुङ्क्ष्व। पठ, नो चेत् गृहं गच्छ। किं तत्र गन्तुं शक्नोषि ? आम्, नहि। मुहुः, भूयो भूयः, वारं वारं वा पाठं पठ। सकृत् गृहं गच्छ, असकृत् पाठं स्मर। अहं ह्यः आगतः, श्वः गमिष्यामि। विद्या कीर्तिं वितनोति।

(क) संस्कृत बनाओ—

प्रयत्न मत करो। यह पहलवान उस पहलवान से लड़ सकता है। इतनी मिठाई खाओ। तुम कितना धन चाहते हो ? तुम जितना धन चाहते हो, उतना धन ले लो। पढ़ना चाहते हो तो पढ़ो, नहीं तो घर जाओ। तुम अवश्य सफल होगे। क्या तुम पढ़ना चाहते हो ? हाँ, नहीं। तुम अन्यत्र जाकर रहो। व्यर्थ विवाद न करो। पाठ बार-बार याद करो। तुम यहाँ एकबार आना, बारबार नहीं। आप बार-बार यहाँ दर्शन दें। सहसा कार्य न करो। वह कल यहाँ आया था, आज रहेगा (वस्, वत्स्यति), कल चला जाएगा (गम्)। विद्या यश को फैलाती है। विद्या तुम्हारी कीर्ति फैलावे। नीलकमल शोभित हो रहा है।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो —

मल्लः मल्लाय किम् अस्ति ? त्वं कियत् धनम् इच्छसि ? त्वं कियत् कार्यं कर्तुं शक्नोषि ? किं त्वं लेखितुं शक्नोषि ? वृथा किं न कुरु ? सः अत्र कदा आगतः, कदा च गमिष्यति ? विद्या किं वितनोति ? सहसा किं न विदधीत ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो —(अव्यय शब्द)

त्वं मह्यम्……धनं देहि।
पठसि…पठ,……गृहं गच्छ।
यत् दत्तं तत्……अस्ति।
भवान्……दर्शनं ददातु।
क्रियां……न विदधीत।
मल्लः मल्लाय……।

(घ) तन् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(ङ) इनके विग्रह वाक्य लिखो—

महात्मा, मुखकमलम्, सुपुरुषः, त्रिलोकम्, सप्तर्षयः घनश्यामः।

अभ्यास ५२

शब्दावली—मधुरम् = मीठा, प्रियम् = प्रिय, शोभनम् = ठीक, सुन्दरम् = सुन्दर समीचीनम् = अच्छा, पटुः = चतुर, गुरुः = भारी, कुशलः = चतुर, दक्षः = निपुण, त्वदीयः = तेरा, मदीयः = मेरा, भवदीयः = आपका, श्वेतः = सफेद, हरितः = हरा, नीलः = नीला, पीतः = पीला, कृष्णः = काला, रक्तः = लाल, उचितम् = उचित, ज्येष्ठः = सबसे बड़ा, कनिष्ठः = सबसे छोटा। क्री = खरीदना, वि + क्री = बेचना।

नियम ८९—(बहुव्रीहि समास) बहुव्रीहि समास में अन्य पद का अर्थ मुख्य होता है। समस्त पद विशेषण के रूप में आता है। इसमें शब्दार्थ करने पर जिसको, जिसने, जिसका, जिसमें आदि अर्थ निकलते हैं। दस हैं मुख जिसके वह, दश आननानि यस्य सः-दशाननः, दशमुखः (रावणः)। हतः शत्रुः येन सः–हतशत्रुः (राजा)। पीतम् अम्बरं यस्य सः-पीताम्बरः (कृष्ण)। सह (साथ) अर्थ में, पुत्रेण सहितः–सपुत्रः। इसी प्रकार सविनयम्, सादरम्, साग्रहम्। व्यधिकरण में (भिन्न विभक्ति होने पर)—धनुः पाणौ यस्य सः–धनुष्पाणि, जिसके हाथ में धनुष है।

सूचना—क्री धातु (५७) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—मधुरं प्रियं शोभनं समीचीनं च वचनं वद। रामः शास्त्रेषु पटुः कुशलः निपुणः दक्षः च वर्तते। इदं पुष्पं सुन्दरम् अस्ति। स मदीयः त्वदीयः च सखा अस्ति। अहं भवदीयः शिष्यः अस्मि। रामः ज्येष्ठः, शत्रुघ्नः च कनिष्ठः भ्राता अस्ति। इदं वस्त्रं श्वेतं वर्तते। इमानि पुष्पाणि च हरितानि नीलानि पीतानि रक्तानि कृष्णानि च सन्ति। कृष्णा गौः अधिकं दुग्धं ददाति। ब्रूहि मम वचनम् उचितम् अनुचितं वा अस्ति? वणिक् वस्तूनि क्रीणाति विक्रीणीते च। त्वं पुस्तकं क्रीणीथाः। स वस्त्रं क्रेष्यति।

(क) संस्कृत बनाओ—

मधुर वचन बोलो। मुझे प्रिय वचन अच्छा लगता है। आपका कथन ठीक है। सुन्दर वस्तु सबका मन हर लेती है। यह लोहा (अय) भारी है। राम कक्षा में निपुण और चतुर है। वह मेरा प्रिय मित्र है। वह मेरी प्रियतमा है। मैं आपका सेवक हूँ। तुम्हारा कौन मित्र है? उचित और अनुचित को विचार कर (विचार्य) वचन कहो। सहसा काम न करो। वह मेरा बड़ा भाई है। श्याम मेरा सबसे छोटा भाई है। यह वस्त्र सफेद है। यह साड़ी काली है। ये फूल हरे, नीले, पीले, लाल, काले और सफेद हैं। वणिक् वस्तुएँ खरीदता है और बेचता है। क्या तुम वस्त्र खरीदोगे?

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

कीदृशं वचनं वद? रामः शास्त्रेषु कीदृशः अस्ति? इमानि पुष्पाणि कीदृशानि सन्ति? तव कः प्रियः? रामस्य का प्रियतमा आसीत्? पाण्डवेषु कः ज्येष्ठः आसीत्, कः च कनिष्ठः? वणिक् किं करोति?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

त्वं मधुरं वचनानि वद। सा मम प्रियतमः। सः तव प्रियतमा। इदं वस्त्रः श्वेतः वर्तते। इमानि पुष्पाणि पीतं वर्तते। वणिक् वस्तूनि विक्रीणाति। त्वं पुस्तकं क्रीणीयात्। कृष्णः गौः अधिकं दुग्धं ददति।

(घ) क्री धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(ङ) इनके विग्रह वाक्य लिखो—

दशाननः, हतशत्रुः, सपुत्रः, सविनयम्, दशमुखः, पीताम्बरः, धनुष्पाणिः।

अभ्यास ५३

शब्दावली—वीणा = सितार, मुरली = बाँसुरी, सारङ्गी = सारंगी, वायोलिन, तानपूरः = तानपूरा, तन्त्रीकवाद्यम् = पियानो, मुरजः = तबला, ढौलकः = ढोलक, दुन्दुभिः = नगाड़ा, तूर्यम् = तुरही, शहनाई, संगीतम् = संगीत, गीतम् = गाना, गायकः = गाने वाला गायिका = गाने वाली, गै (गाय) = गाना, वादय = बजाना, तारम् = तीव्र स्वर से, ग्रह = लेना, पकड़ना ।

नियम ९०—(द्वन्द्व समास) दो या अधिक शब्दों का 'च' (और) अर्थ में समास होता है। विग्रह करने पर 'और' अर्थ निकलता है। इसे द्वन्द्व समास कहते हैं। दोनों पदों का अर्थ मुख्य होता है। संख्या के अनुसार अन्त में वचन होता है, दो हों तो द्विवचन, बहुत हों तो बहुवचन। जैसे—रामः च कृष्णः च-रामकृष्णौ। सीतारामौ, उमाशंकरौ, भीमार्जुनौ, रामलक्ष्मणौ। समाहार (समूह अर्थ) में नपुं० एक०। हस्तौ च पादौ च-हस्तपादम्। गोमहिषम्, व्रीहियवम्, शीतोष्णम्। एकशेष में द्विवचन या बहु० अर्थानुसार। माता च पिता च-पितरौ।

सूचना—ग्रह धातु (५८) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य नृत्यं गीतं वाद्यं च मिलित्वा संगीतं भवति। गायिकाः नृत्यन्ति गायन्ति च। वाद्यं लोकानां मनांसि हरति। संगीतं श्रुतिमधुरं भवति। संगीतं हृदये आनन्दं जनयति। बहूनि वाद्ययन्त्राणि सन्ति, यथा—वीणा, मुरली, सारङ्गी, तानपूरः, मुरजः, दुन्दुभिः तूर्यादिकं च। कस्मैचित् गायकाय वीणा रोचते, अन्यस्मै च तूर्यं तन्त्रीकवाद्यं वा। गायकः वीणां वादयति। स तारं गायति। अहं पुस्तकं गृह्णामि। त्वं शिशुं गृहाण। स दण्डम् अगृह्णात्।

(क) संस्कृत बनाओ—

संगीत सबका हृदय हर लेता है। नृत्य गीत और वाद्य मिलकर संगीत कहा जाता है। गायक गीत गाते हैं। नायिकाएँ नृत्य करती हैं। प्रत्येक वाद्य की पृथक् ध्वनि होती है। नृत्य उत्तम व्यायाम है। इससे प्रत्येक अंग में स्फूर्ति आती है। संगीत से कण्ठ में मधुरता आती है। वाद्य अनेक हैं। किसी गायक को सितार या बाँसुरी अच्छी लगती है, किसी को तानपूरा या वायोलिन। प्राचीन काल में ढोल और नगाड़े का प्रचलन था। गायक तानपूरा बजाता है। तुम गाओ और नाचो। मैं डंडा लेता हूँ। वह पुस्तक लेता है। माता ने बच्चे का हाथ पकड़ा। वह फूल लेगा। तुम क्या लोगे? मैं चाय लूंगा, वह दूध लेगा।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

संगीतं केषां हृदयं हरति? संगीते किं किं समन्वितम् अस्ति? गायकाः किं कुर्वन्ति? गायिकाः किं कुर्वन्ति। नृत्यस्य कः लाभः अस्ति? कानि वाद्ययन्त्राणि सन्ति? त्वं किं वादयसि? त्वं किं ग्रहीष्यसि? माता कस्य हस्तं गृह्णाति?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

मह्यं ······ रोचते।
तुभ्यं ······ वाद्यं रोचते।
नृत्यम् उत्तमः ······ अस्ति।
नृत्येन शरीरे ······ जायते।
त्वम् इदं पुस्तकं ······।

(घ) ग्रह धातु के लट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् के रूप लिखो।

(ङ) इनके विग्रह वाक्य लिखो—

रामकृष्णौ, भीमार्जुनौ, रामलक्ष्मणौ, पितरौ, हस्तपादम्।

अभ्यास ५४

शब्दावली—दर्पणः = शीशा, सिन्दूरम् = सिन्दूर, चूर्णकम् = पाउडर, बिन्दुः = बिन्दी, तिलकम् = तिलक, गन्धतैलम् = इत्र, शरः = क्रीम, प्रसाधनी = कंघी, दन्तधावनम् = दातून, दांत का ब्रश; दन्तचूर्णम् = मंजन, टूथ पाउडर; दन्तपिष्टकम् = टूथ पेस्ट, प्रसाधनम् = सजाना। प्रसाधय = सजाना, योजय = लगाना, लिम्प् = लीपना, लगाना, शोधय = साफ करना।

नियम ९१—(नञ् समास) 'नहीं' अर्थ में नञ् समास होता है। बाद में व्यंजन होगा तो 'अ' शेष रहेगा, यदि स्वर होगा तो अन्' रहेगा। न ब्राह्मणः-अब्राह्मणः। इसी प्रकार अन्यायः, अप्रियः, असुन्दरः, अस्वस्थः। न उपस्थितः-अनुपस्थितः। इसी प्रकार अनुचितः, अनादरः, अनास्था, अनुदारः, अनादिः।

नियम ९२—(अलक् समास) कुछ स्थानों पर बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता है, उसे अलुक् समास कहते हैं। जैसे—सरसिजम्, मनसिजः (कामदेव), युधिष्ठिरः, परस्मैपदम्, आत्मनेपदम्।

सूचना—ज्ञा धातु (५९) के रूप स्मरण करो।

उदाहरण वाक्य—सा दर्पणे मुखं पश्यति। युवतिः शिरसि सिन्दूरम्, भाले बिन्दुम्, कपोले चूर्णकं शरं च योजयति। सा शरीरे गन्धतैलम् अपि लिम्पति। बालिका प्रसाधन्या केशान् प्रसाधयति। त्वं दन्तधावनेन, दन्तचूर्णेन, दन्तपिष्टकेन वा दन्तान् शोधय। गुरुः शास्त्रं जानाति। अहं किमपि न जानामि। त्वं धर्मं जानीहि। स महता श्रमेण वेदम् अजानात्। त्वं शास्त्रं पठित्वा ज्ञास्यसि कः धर्मः, कः अधर्मः, किं पुण्यम्, किं पापम्?

(क) संस्कृत बनाओ—

रमा शीशे में मुँह देखती है। वह स्त्री शिर में सिन्दूर और माथे पर बिन्दी लगाती है। श्यामा गाल पर पाउडर और क्रीम लगाती है। उमा कंघी से बाल सँवारती है। हेमा देह पर इत्र लगाती है। वह दातून से दाँत साफ करता है। वह मंजन से या टूथपेस्ट से मुँह धोता है। तुम प्रतिदिन दाँत साफ करो। तुम क्या जानते हो? मैं कुछ नहीं जानता। तुम अपने कर्तव्य को जानो। उसने शास्त्रों को जाना। तुम विद्या पढ़कर जानोगे कि पाप और पुण्य क्या है? विद्वान् का अनादर अनुचित है। अन्याय को न सहो। अनुदार न हो। अप्रिय न बोलो।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

रमा कस्मिन् मुखं पश्यति? युवतिः कपोले किं योजयति? केशान् कथं प्रसाधय? दन्तधावनेन किं कुरु? गुरुः किं जानाति? त्वं पठित्वा किं ज्ञास्यसि? किं न सहस्व?

(ग) इनको यथास्थान भरो—(विधेहि, सहस्व, ब्रूहि, जानीहि, लिम्पति, शोधय)

त्वं धर्म······।
सा मुखे शरं······।
त्वं प्रतिदिनं दन्तान्······।
कदापि अन्यायं न······।
विदुषः अनादरं न······।
अप्रियम् असत्यं च न······।

(घ) ज्ञा धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो।

(ङ) इनके विग्रह वाक्य लिखो—

अब्राह्मणः, अनुचितः, अनुपस्थितः, अप्रियम्, अनास्था।

अभ्यास ५५

शब्दावली—रत्नम् = रत्न, मणिः = रत्न, मुक्ता = मोती, मौक्तिकम् = मोती, इन्द्रनीलः = नीलम, हीरकः = हीरा, प्रवालम् = मंगा, पुष्परागः = पुखराज, मरकतम् = पन्ना, वैदूर्यम् = लहसुनिया, काञ्चनम् = सोना, धारय = पहनना, भूषय = सजाना।

नियम ९३—(अपत्यार्थक प्रत्यय) पुत्र अर्थ में शब्द से अण् (अ) प्रत्यय होता है। प्रथम स्वर को वृद्धि होती है। जैसे—वसुदेव का पुत्र-वासुदेवः। पुत्र का पुत्र-पौत्रः। कुरु>कौरवः। पाण्डु>पाण्डवः। पृथा>पार्थः।

नियम ९४—(अपत्यार्थक) कुछ शब्दों से पुत्र अर्थ में इञ् (इ) प्रत्यय होता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। दशरथ का पुत्र–दाशरथिः। सुमित्रा>सौमित्रिः (लक्ष्मण)। द्रोण<द्रौणिः (अश्वत्थामा)।

नियम ९५—(अपत्यार्थक) कुछ शब्दों से पुत्र अर्थ में 'य' प्रत्यय लगता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। दिति के पुत्र-दैत्याः। अदिति> आदित्यः। गर्ग>गार्ग्यः। स्त्रीलिंग शब्दों से पुत्र अर्थ में 'एय' लगता है। कुन्ती के पुत्र–कौन्तेयाः। द्रौपदी>द्रौपदेयः, राधा>राधेयः (कर्ण)।

उदाहरण वाक्य—रत्नानि धारय। रत्नानि बहुमूल्यानि भवन्ति। रत्नानि शरीरं भूषयन्ति। समुद्रे मणयः भवन्ति। मौक्तिकं हीरकं प्रवालं पुष्परागं वैदूर्यम् इन्द्रनीलं च धनिनः धारयन्ति। रत्नजटितानि आभरणानि शोभन्ते। वासुदेवाय नमः। दाशरथिं भज। कौरवाः पाण्डवाः च अयुध्यन्त। श्रीकृष्णः पार्थाय गीताम् उपादिशत्। दितेः पुत्राः दैत्याः सन्ति अदितेः च आदित्याः। सौमित्रिः दाशरथिना सह वनम् अगच्छत्। राधेयः कर्णः महादानी महाशूरः च आसीत्।

(क) संस्कृत बनाओ—

सभी रत्न बहुमूल्य होते हैं। रत्नों को धारण करो। रत्नों से शरीर की शोभा बढ़ती है। कुछ रत्न शरीर के लिए लाभकर हैं। समुद्र में रत्न होते हैं। विद्या सर्वोत्तम रत्न है। धनी लोग मोती, नीलम, हीरा, मूंगा, पुखराज और पन्ना पहनते हैं। रत्नजटित आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते हैं (वर्धयन्ति)। श्रीकृष्ण ने पृथा के पुत्र अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। श्रीकृष्ण वसुदेव के पुत्र थे। वासुदेव को नमस्कार। दशरथ के पुत्र राम सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण के साथ वन गए। कौरव और पाण्डवों का युद्ध हुआ। दिति के पुत्रों को दैत्य कहते हैं और अदिति के पुत्रों को आदित्य।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

रत्नानां के लाभाः सन्ति ? रत्नानि किं भूषयन्ति ? के रत्नानि धारयन्ति ? वसुदेवस्य पुत्रः कः अस्ति ? दाशरथिना सह कः वनम् अगच्छत् ? दितेः पुत्राः के सन्ति ? राधेयः कीदृशः आसीत् ? के अयुध्यन्त ? आदित्याः कस्याः पुत्राः सन्ति ? कर्णः कस्याः पुत्रः ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

रत्नानि बहुमूल्यं भवन्ति। मणयः शरीरं भूषयति। रत्नानि शरीरस्य कृते लाभकराः सन्ति। वासुदेवं नमः। रत्नानि शरीरं भूषयति। कौरवाः पाण्डवाः च अयुध्यत। स गीतायाः उपदिशति।

(घ) इनके अपत्यार्थक शब्द बनाओ—

दशरथ, वसुदेव, कुरु, पाण्डु, सुमित्रा, दिति, अदिति, पृथा, कुन्ती, राधा, द्रोण, पुत्र।

अभ्यास ५६

शब्दावली—ज्वरः = ज्वर, कासः = खांसी, विषमज्वरः = मलेरिया, शीतज्वरः = इंफ्लूएन्जा, फ्लू; संनिपातज्वरः = टाइफाइड, राजयक्ष्मन् = तपेदिक, अतिसारः = दस्त, प्रवाहिका = पेचिश, वमथुः (वमनम्) = कै (उल्टी), प्रतिश्यायः = जुकाम, विषूचिका = हैजा, मधुमेहः = डाएबिटीज, पाण्डुः = पीलिया, पक्षाघातः = लकवा, रक्तचापः = ब्लडप्रेसर, अजीर्णम् = अपच, बद्धकोष्ठः = कब्ज।

नियम ९६—(मतुप् प्रत्यय) युक्त या 'वाला' अर्थ में मतुप् (मत्) प्रत्यय होता है। शब्द के अन्त में अ या आ होगा तो मत् को वत् हो जाएगा। धन वाला—धनवत्—धनवान्। इसी प्रकार ज्ञानवान्, विद्यावान्, गुणवान्। श्रीमान्, धीमान्, बुद्धिमान्। स्त्रीलिंग में—श्रीमती, बुद्धिमती, गुणवती।

नियम ९७—(इन् और इक प्रत्यय) 'वाला' अर्थ में ही इन् और इक प्रत्यय भी होते हैं। धन वाला—धनिन्, धनिकः। इसी प्रकार दण्ड-दण्डिन्, गुण-गुणिन्, ज्ञान-ज्ञानिन्। माया-मायिकः।

नियम ९८—(इत प्रत्यय) कुछ शब्दों से युक्त अर्थ में इतच् (इत) प्रत्यय होता है। तारों से युक्त, तारका—तारकितः। पुष्प—पुष्पितः, दुःख-दुःखितः, क्षुधा—क्षुधितः, तृषा—तृषितः, अङ्कुर—अङ्कुरितः।

उदाहरण वाक्य—रोगाः दुःखदाः। ज्वरेण नरः म्रियते। रोगाः शरीरस्य स्वास्थ्यं नाशयन्ति। विषमज्वरः शीतज्वरः संनिपातज्वरः च भयंकराः प्राणनाशकाः ज्वराः सन्ति। राजयक्ष्मा शरीरं शोषयति। अजीर्णं सर्वेषां रोगाणां मूलम्। विषूचिका, मधुमेहः, पक्षाघातः च प्राणान् हरन्ति। आरोग्यं महत् धनम् अस्ति। नीरोगः स्वस्थः सबलः च भव। रुग्णाय औषधम्, क्षुधिताय भोजनम्, तृषिताय च जलं देहि। मूत्रस्य पुरीषस्य च वेगं न धारयेत्। सदा पथ्यं भुञ्जीत।

(क) संस्कृत बनाओ—

शरीर रोगों का घर है। रोग दुःख देते हैं। रोगनिवारणार्थ ओषधि का सेवन करो। ज्वर शरीर के ताप को बढ़ाता है। मलेरिया, फ्लू, टाइफाइड प्राणघातक रोग हैं। हैजा, तपेदिक, पीलिया और लकवा मृत्यु के कारण हैं। कब्ज सब रोगों का मुख्य कारण है। आहार और विहार के असंयम से रोग होते हैं। मूत्र और शौच के वेग को न रोको। इनके रोकने से (रोधनेन) बहुत से रोग होते हैं। आरोग्य के लिए प्रतिदिन भ्रमण व्यायाम और योगासन बहुत उपयोगी हैं। प्रतिदिन कुछ आसन करो। सदा पथ्य खावे। अपथ्य के भक्षण से रोग होते हैं।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

रोगा कीदृशाः सन्ति ? सर्वेषां रोगाणां किं मूलम् ? मधुमेहः किं करोति ? कस्य वेगं न धारयेत् ? किं महत् धनम् अस्ति ? रुग्णाय किं दद्यात् ? क्षुधिताय किं देहि ? तृषिताय किं देहि ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

आरोग्यं महत्……अस्ति।
मूत्र वेगं न……।
सदा पथ्यं…… ।
रुग्णाय ···देहि।
ज्वरेण नरा·· ···।
रोगाः स्वास्थ्यं……।

(घ) इन शब्दों से 'युक्त' अर्थ वाले शब्द बनाओ—

धन, गुण, बुद्धि, धी, श्री, विद्या, दण्ड, माया, क्षुधा, तृषा, अङ्कुर, पुष्प, दुःख, तारका, ज्ञान, बल।

अभ्यास ५७

शब्दावली—जलपानम् = जलपान, चायम् = चाय, चायपात्रम् = टी-पाट, कफघ्नी = काफी, कन्दुः = केतली, अभ्यूषः = डबल रोटी, भृष्टापूपः = टोस्ट, मिष्टान्नम् = पेस्ट्री, पिष्टकः = बिस्किट, गुल्यः = टाफी, लवणान्नम् = नमकीन, समोषः = समोसा, पक्ववटिका = पकौड़ी, दधिवटकः = दहीबड़ा, पक्वालुः = आलू की टिकिया, पुलाकः = पुलाव।

नियम ९९—(त्व और ता प्रत्यय) भाव अर्थ (हिन्दी 'पन') में शब्द से त्व और ता प्रत्यय होते हैं। त्व-प्रत्ययान्त नपुं० और ता-प्रत्ययान्त स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—बचपन-शिशुत्वम्, शिशुता। इसी प्रकार लघुत्वम्, लघुता (हलका या छोटापन), गुरुत्वम्, गुरुता विद्वत्त्वम्, विद्वत्ता, पटुता, दीनता।

नियम १००—(ष्यञ् प्रत्यय) कुछ शब्दों से भाव अर्थ में ष्यञ्(य) प्रत्यय होता है प्रथम स्वर को वृद्धि। जैसे—शूर-शौर्यम् (शूरता)। इसी प्रकार धीर-धैर्यम्, सुख-सौख्यम्, कवि-काव्यम्। कुछ शब्दों से स्वार्थ (उसी अर्थ) में ष्यञ् (य) और अण् (अ) होते हैं। सेना-सैन्यम्, करुणा-कारुण्यम्। प्रज्ञ-प्राज्ञः, रक्षस्-राक्षसः।

नियम १०१—(इमन् प्रत्यय) कुछ शब्दों से भाव अर्थ में इमन् प्रत्यय होता है। अन्तिम अक्षर का लोप होता है। लघु-लघिमा, गुरु-गरिमा, अणु-अणिमा, महत्-महिमा। आत्मन् के तुल्य रूप होंगे।

उदाहरण वाक्य—अहं जलपाने चायं कफघ्नीं वा पिबामि। मह्यं भृष्टापूपः पिस्टान्नं, पिष्टकः, लवणान्नं, समोषाः, पक्वालुः, पक्ववटिकाः च रोचन्ते। प्रातराशे (सुबह के नाश्ते में) अभ्यूषः प्रायः प्रयुज्यते। कन्दौ चायं परिवेष्यते (परोसना)। पक्वान्नं गुरु भवति। न नक्तं (रात्रि में) दधि भुञ्जीत। तक्रं लघु हितकरं च भवति।

(क) संस्कृत बनाओ—

मैं नाश्ते में डबलरोटी, पकौड़ी, आलू की टिकिया, बिस्किट और चाय लेता हूँ। वह पेस्ट्री, टोस्ट और काफी लेता है। बच्चों को टाफी अच्छी लगती है। स्त्रियों को नमकीन, दही बड़ा, आलू की टिकिया और पकौड़ी अच्छी लगती हैं। तू नाश्ते में दूध और जलेबी लेता है। आजकल (अद्यत्वे) डबलरोटी का बहुत प्रचलन है। अधिक मिठाई खाने से मधुमेह होता है। अधिक खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। पकवान भारी होता है। चाय केतली में परोसी जाती है। रात में दही न खावें। मट्ठा हलका और हितकारी होता है। तुम आज भोजन में पुलाव खाना। शूर का शौर्य, धीर का धैर्य और विद्वान् का वैदुष्य प्रशंसनीय होता है।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

त्वं प्रातराशे किं गृह्णासि ? स जलपाने किं भक्षयति ? पक्वान्नं कीदृशं भवति ? तक्रं कीदृशम् अस्ति ? कन्दौ किं परिवेष्यते ? मिष्टान्नं केभ्यः रोचते ? लवणान्नं केभ्यः रोचते ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

वयं प्रातराशे चायं गृह्णामि। ते पक्वालुं भक्षयति। मां पिष्टान्नं रोचते। पक्वान्नं गुरुः भवति। तक्रं हितकरः अस्ति। कन्दौ चायं परिवेष्यन्ते। प्रातराशे अद्यत्वे अभ्यूषः प्रयुज्यन्ते।

(घ) इन शब्दों के ये प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—

(१) त्व, ता—शिशु, गुरु, पटु, दीन, हीन, विद्वस्, लघु।

(२) ष्यञ् (य)—विद्वस्, करुणा, सेना, सुख, कवि, धीर, शूर।

(३) इमन्—लघु, गुरु, महत्, अणु।

अभ्यास ५८

शब्दावली—पात्रम् = बरतन, कंसः = गिलास, काचकंसः = कांच का गिलास, घटः = घड़ा, स्थालिका = थाली, कटोरम् = कटोरा, कटोरिका = कटोरी, चमसः = चम्मच, ऋजीषम् = तवा, कटाही = कड़ाही, चषकः = प्याला, कप; शरावः = प्लेट, तश्तरी; हसन्ती = अंगीठी, उद्ध्मानम् = स्टोव, उदञ्चनम् = बालटी।

नियम १०२—(वत् प्रत्यय) तुल्य या सदृश अर्थ में 'वत्' प्रत्यय होता है। यह अव्यय होता है। जैसे—राम के तुल्य-रामवत्। इसी प्रकार कृष्णवत्, शिशुवत्, क्षत्रियवत्, वैश्यवत्, शूद्रवत्, स्त्रीवत्, पशुवत्।

नियम १०३—(तर प्रत्यय) दो की तुलना में जिस गुण की विशेषता बताई जाती है, उस गुणवाचक शब्द में तरप् (तर) प्रत्यय लगता है। जैसे—राम श्याम से पटु है—रामः श्यामात् पटुतरः। इसी प्रकार लघुतरः, गुरुतरः, महत्तरः, प्रियतरः, प्राज्ञतरः, विद्वस्-विद्वत्तरः, भद्रतरः।

नियम १०४—(तम प्रत्यय) बहुतों में से एक की विशेषता बताने पर तमप् (तम) प्रत्यय होता है। छात्रों में कृष्ण सबसे चतुर है—छात्राणां छात्रेषु वा कृष्णः पटुतमः। इसी प्रकार लघुतमः, प्रियतमः, विद्वत्तमः।

उदाहरण वाक्य—पानार्थं भोजनार्थं च पात्राणां प्रयोगः भवति। कंसे काचकंसे वा जलं पीयते। घटे उदञ्चने वा जलं निधीयते। स्थालिकायां कटोरिकायां च भोजनं भुज्यते। हसन्त्याम् उद्ध्माने वा कटाह्यां शाकं पच्यते। ऋजीषे रोटिका पच्यते। चमसेन खाद्यं भुज्यते। चषके चायं जलं वा पीयते। शरावे पुलाकं स्थापय। कवीनां कविषु वा कालिदासः पटुतमः। नराणां नरेषु वा विद्वान् पूज्यतमः।

(क) संस्कृत बनाओ —

खाने और पीने के लिए बरतनों का उपयोग होता है। बरतन मिट्टी के, काँच के या धातु के होते हैं। गिलास या कांच के गिलास से पानी पीया जाता है। चम्मच से खाना खाया जाता है। अंगीठी या स्टोव पर खाना पकाया जाता है। प्लेट में खाने का सामान रखकर (निधाय) खाया जाता है। गिलास, कटोरी, चम्मच प्रतिदिन काम में आते हैं। बरतनों को धोकर (प्रक्षाल्य) रखो। बालटी या घड़े में पानी रखा जाता है। तवे पर रोटी पकाते हैं। कड़ाही में साग पकाओ (पच)। तश्तरी में पुलाव रखकर खाओ। छात्रों में श्याम सबसे चतुर है। कवियों में कालिदास सबसे पटु है।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

पात्राणि किमर्थं प्रयुज्यन्ते ? घटेन किं कार्यं भवति ? हसन्त्यां किं क्रियते ? शरावे किं निधीयते ? कंसेन किं पीयते ? कटाह्यां किं पच्यते ? चषके किं पीयते ? उदञ्चने किं निधीयते ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

कवीनां कालिदासः······ ।
रामात् श्यामः······ ।
नराणां······प्रशस्यतमः ।
चषके चायं—··· ।
उदञ्चने जलं······ ।
कटाह्यां शाकं······ ।

(घ) इन प्रत्ययों को लगाकर रूप बनाओ—

(१) वत् शिशु, राम, कृष्ण, शूद्र, स्त्री, ब्राह्मण, क्षत्रिय।

(२) तर—गुरु लघु, पटु, विद्वस्, प्रिय, मृदु, महत्।

(३) तम—प्रिय, विद्वस्, महत्, पूज्य, पटु, गुरु, मृदु।

अभ्यास ५९

शब्दावली—रसवती = रसोई, भोज्यम् = खाने का सामान, दर्वी = करछी, चमचा; पक्वान्नम् = पकवान, सूत्रिका = सेवई, पूलिका = पूरी, शष्कुली = खस्ता पूरी, पिष्टिका = कचौड़ी, पूपक: = परांठा, अपूप: = पूआ, राज्यक्तम् = रायता, तक्रम् = मट्ठा, कृशरा = खिचड़ी, शर्करा = शक्कर, सन्धितम् = अचार अवलेह: = चटनी, सिता = चीनी, मरीचम् = मिर्च ।

नियम १०५—(ईयस् प्रत्यय) दो की तुलना में गुणवाचक शब्द से ईयसुन् (ईयस्) प्रत्यय होता है। शब्द के अन्तिम स्वर का लोप होता है। पुंलिंग में—ईयान् ईयांसौ. ईयांस: आदि रूप होंगे। स्त्रीलिंग में ई लगाकर नदीवत्। रामात् श्याम: पटीयान्। रमा श्यामाया: पटीयसी।

नियम १०६—(इष्ठ प्रत्यय) बहुतों में से एक को छांटने में इष्ठन् (इष्ठ) प्रत्यय होता है। शब्द के अन्तिम स्वर का लोप। छात्रेषु कृष्ण: श्रेष्ठ:। भ्रातॄणां राम: ज्येष्ठ:, शत्रुघ्न: च कनिष्ठ:।

सूचना—कुछ शब्दों के ईयस्, इष्ठ वाले रूप ये हैं—प्रशस्य-श्रेयान् श्रेष्ठ:। गुरु-गरीयान् गरिष्ठ:। प्रिय-प्रेयान्, प्रेष्ठ:। वृद्ध-ज्यायान्, ज्येष्ठ:। युवन्-कनीयान्, कनिष्ठ:। उरु-वरीयान्, वरिष्ठ:। पटु-पटीयान्, पटिष्ठ:। मृदु-म्रदीयान्, म्रदिष्ठ:। बलिन्-बलीयान्, बलिष्ठ:।

उदाहरण वाक्य—जननी जन्मभूमि: च स्वर्गाद् अपि गरीयसी। भ्रातॄणां युधिष्ठिर: ज्येष्ठ:, सहदेव: च कनिष्ठ:। सीता रामस्य प्रियतमा प्रेष्ठा वा आसीत्। धर्मकार्येषु यज्ञ: श्रेष्ठ:। रसवत्यां भोज्यं पच्यते। मह्यं पक्वान्नं, शष्कुली, पिष्टिका, पूपक: अपूप: च रोचते। तुभ्यं किं भोज्यं रोचते, पक्वान्नं लवणान्नं वा? बालकाय मिष्टान्नं रोचते। राज्यक्ते तक्रे कृशरायां च लवणं क्षिप। दुग्धे शर्करां सितां वा क्षिप।

(क) संस्कृत बनाओ—

माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं। पांडवों में युधिष्ठिर ज्येष्ठ और सहदेव कनिष्ठ हैं। भाइयों में राम सबसे बड़े और शत्रुघ्न सबसे छोटे हैं। पकवान गरिष्ठ भोजन है। रसोई में रसोइया खाना बनाता है। रसोइया पूरी, कचौड़ी, पराँठा, हलुआ, खीर, पूआ और सेवई बनाता है। रायता, मट्ठा और खिचड़ी में नमक डालो। दूध और खीर में चीनी डालो। चटनी और अचार में नमक और मिर्च डालो। मल्ल बलिष्ठ होता है। विद्या से बुद्धि बढ़कर है (गरीयसी)। पद्मपत्र मृदुतम होता है। श्यामा से कृष्णा अधिक चतुर है। धर्मकार्यों में यज्ञ श्रेष्ठ है।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

का स्वर्गाद् अपि गरीयसी ? पाण्डवानां कः ज्येष्ठः कः च कनिष्ठः ? रामः ज्येष्ठः कनिष्ठो वा भ्राता ? का विद्यायाः गरीयसी ? किं म्रदिष्ठम् ? कः बलिष्ठः ? राज्यक्ते किं क्षिप ? दुग्धे किं क्षिप ?

(ग) इन वाक्यों को शुद्ध करो—

रामात् श्यामः पटुतमः। विद्यायाः बुद्धिः गरिष्ठा। रामः ज्यायान् भ्राता अस्ति। सहदेवः पाण्डवानां ज्येष्ठः। सीता रामस्य प्रियतरा आसीत्। रसवत्यां भोजनः पच्यते।

(घ) इन प्रत्ययों को लगाकर रूप बनाओ--

(१) ईयस्—वृद्ध, प्रिय, प्रशस्य, बलिन्, गुरु, उरु, युवन्।

(२) इष्ठ—प्रिय, पटु, मृदु, बलिन्, गुरु, युवन्, प्रशस्य।

———

अभ्यास ६०

शब्दावली—मिष्टान्नम् = मिठाई, कान्दविकः = हलवाई, मोदकः = लड्डू, अमृती = इमरती, कुण्डली = जलेबी, रसगोलः = रसगुल्ला, हैमी = बर्फी, दुग्धपूपिका = गुलाबजामुन, संयावः = गुझिया, कूर्चिका = रबड़ी, घृतपूरः = घेवर, वाताशः = बतासा, मिष्टपाकः = मुरब्बा, मोहनभोगः = मोहनभोग। निष्पादय = बनाना, अध्यापय = पढ़ाना।

नियम १०७—(स्त्रीप्रत्यय) अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंग में टाप् (आ) लगता है। बाल-बाला, शिष्य-शिष्या, छात्र-छात्रा, अज-अजा, कोकिल-कोकिला, श्याम-श्यामा, क्षत्रिय-क्षत्रिया, वैश्य-वैश्या। गायक-गायिका, बालिका अध्यापिका।

नियम १०८—(स्त्रीप्रत्यय) कुछ जातिवाचक शब्दों से पत्नी (स्त्री) अर्थ में ई लगता है। जैसे—ब्राह्मण की स्त्री-ब्राह्मणी। इसी प्रकार गोपी, मृगी, सिंही, हरिणी, मार्जारी, हंसी आदि।

नियम १०९—(स्त्रीप्रत्यय) कुछ शब्दों से स्त्रीलिंग में ई लगता है। गौर-गौरी, नर्तकी, मातामही, पितामही, कुमारी, किशोरी, सुन्दरी, कर्तृ-कर्त्री, हर्त्री, धर्त्री, कवयित्री। दण्डिन्-दण्डिनी, मनोहारिणी। हलन्त शब्दों से। जैसे—श्रीमत्-श्रीमती, बुद्धिमती, विद्यावती, गच्छत्-गच्छन्ती, पठन्ती। गतवत्-गतवती। श्रेयस्-श्रेयसी, प्रेयसी, गरीयसी।

नियम ११०—(स्त्रीप्रत्यय) कुछ शब्दों के स्त्रीलिंग में ये रूप बनते हैं—आनी प्रत्यय-रुद्र-रुद्राणी, भवानी, इन्द्राणी, आचार्याणी, (आचार्या जी)। पति-पत्नी युवन्-युवतिः, विद्वस्-विदुषी, श्वशुर-श्वश्रूः, राजन्-राज्ञी।

उदाहरण वाक्य—कान्दविकः मिष्टान्नं मोदकं कुण्डलीम् अमृतीं रसगोलं च निष्पादयति। मह्यं हैमी, दुग्धपूपिका, संयावः, कूर्चिका च रोचन्ते। तुभ्यं मोहनभोगः, वाताशः, घृतपूरः च रोचन्ते।

(क) संस्कृत बनाओ—

मिष्टान्न सबको अच्छा लगता है। बच्चों को लड्डू अच्छा लगता है। हलवाई मिठाई, जलेबी, इमरती, रसगुल्ला बनाता है। मुझे बर्फी, गुलाबजामुन, गुझिया और रबड़ी अच्छे लगते हैं। तुझे मोहनभोग, मुरब्बा, घेवर और बताशा अच्छा लगता है। अधिक मिष्टान्न हानिकारक है। छात्राएँ पढ़ती हैं। कोकिला गाती है। बकरी दूध देती है। आचार्या पढ़ाती है। आचार्याणी आचार्य की सेवा करती है। वधू श्वश्रू की सेवा करती है। पत्नी ने पति से कहा। इन्द्राणी, भवानी, वरुणानी, रुद्राणी, ये देवियाँ हैं। युवती ने रानी से पूछा। कवयित्री कविता करती है। बुद्धिमती शास्त्रार्थ करती है। विदुषी के पास जाओ।

(ख) संस्कृत में उत्तर दो—

आचार्या किं करोति ? आचार्याणी का भवति ? इन्द्रस्य का पत्नी अस्ति ? राज्ञः स्त्री का भवति ? बुद्धिमती किं करोति ? कान्दविकः किं निष्पादयति ? तुभ्यं किं मिष्टान्नं रोचते ? बालकाय किं रोचते ?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो—

कान्दविकः मिष्टान्नं……।
तुभ्यं किं मिष्टान्नं……।
बालकेभ्यः……रोचते ।
आचार्या शिष्यान्……।
राज्ञी राजानं……।
इन्द्रस्य पत्नी……अस्ति ।

(घ) इन शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द बनाओ—

राजन्, गोप, श्वशुर, बुद्धिमत्, विद्वस्, पति, अज, अध्यापक, गायक, नायक, बालक, पितामह, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, युवन्, कवयितृ, कर्तृ, भर्तृ, मनोहारिन्, प्रेयस्, गरीयस्, श्रीमत् ।

परिशिष्ट

व्याकरण

आवश्यक निर्देश

१—आगे कतिपय शब्दों और धातुओं के रूप दिए गए हैं। तदनुसार कुछ अन्य शब्दों और धातुओं के रूप चलते हैं, उनका अभ्यासों में निर्देश है। तदनुसार उन शब्दों और धातुओं के रूप चलावें।

२—संक्षेप के लिए निम्नलिखित संकेतों का उपयोग किया गया है—

(क) शब्दरूपों में प्रथमा आदि के लिए उनके प्रथम अक्षर रखे गये हैं। जैसे प्र० = प्रथमा, द्वि० = द्वितीया, तृ० = तृतीया, च० = चतुर्थी, पं० = पञ्चमी, ष० = षष्ठी, स० = सप्तमी, सं० = संबोधन।

(ख) पुं = पुंलिंग, स्त्री० = स्त्रीलिंग, नपुं० = नपुंसकलिंग। एक० = एकवचन, द्वि० = द्विवचन, बहु० = बहुवचन। प्रत्येक शब्द और धातु के रूप में ऊपर से नीचे प्रथम पंक्ति एकवचन है, दूसरी द्विवचन और तीसरी बहुवचन की। जो शब्द किसी विशेष वचन में ही चलते हैं, उनमें उसी वचन के रूप हैं।

(ग) धातुरूपों में प्र० पु० या प्र० = प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), म० पु० या म० = मध्यम पुरुष, उ० पु० या उ० = उत्तम पुरुष। प० = परस्मैपद, आ० = आत्मनेपद, उ० = उभयपद।

३—सर्वनाम शब्दों का संबोधन नहीं होता, अतः उनके रूप संबोधन में नहीं होते।

४—र् या ष् के बाद न को ण होता है, यदि बीच में कोई स्वर, ह य व र, कवर्ग, पवर्ग और न् हो तो भी न को ण होगा।

५—शब्दों के अन्त में लगने वाले स् औ अ आदि को सुप् प्रत्यय कहते हैं। इनसे बनने वाले रामः रामौ आदि शब्दरूपों को सुबन्त पद कहते हैं।

शब्दरूप-संग्रह

(१) बालक (बालक) अकारान्त पुं

प्र०	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वि०	बालकम्	,,	बालकान्
तृ०	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
च०	बालकाय	,,	बालकेभ्यः
पं०	बालकात्	,,	,,
ष०	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
स०	बालके	,,	बालकेषु
सं०	हे बालक !	हे बालकौ !	हे बालकाः !

(२) हरि (विष्णु) इकारान्त पुं०

प्र०	हरिः	हरी	हरयः
द्वि०	हरिम्	,,	हरीन्
तृ०	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
च०	हरये	,,	हरिभ्यः
पं०	हरेः	,,	,,
ष०	,,	हर्योः	हरीणाम्
स०	हरौ	,,	हरिषु
सं०	हे हरे !	हे हरी !	हे हरयः !

(३) सखि (मित्र) इकारान्त पुं०

प्र०	सखा	सखायौ	सखायः
द्वि०	सखायम्	,,	सखीन्
तृ०	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
च०	सख्ये	,,	सखिभ्यः
पं०	सख्युः	,,	,,
ष०	,,	सख्योः	सखीनाम्
स०	सख्यौ	,,	सखिषु
सं०	हे सखे !	हे सखायौ !	हे सखायः !

(४) गुरु (गुरु) उकारान्त पुं०

प्र०	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वि०	गुरुम्	,,	गुरून्
तृ०	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
च०	गुरवे	,,	गुरुभ्यः
पं०	गुरोः	,,	,,
ष०	,,	गुर्वोः	गुरूणाम्
स०	गुरौ	,,	गुरुषु
सं०	हे गुरो !	हे गुरू !	हे गुरवः !

(५) कर्तृ (करनेवाला) ऋकारान्त पुं०

प्र०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
द्वि०	कर्तारम्	,,	कर्तॄन्
तृ०	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
च०	कर्त्रे	,,	कर्तृभ्यः
पं०	कर्तुः	,,	,,
ष०	,,	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्
स०	कर्तरि	,,	कर्तृषु
सं०	हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः

(६) पितृ (पिता) ऋकारान्त पुं०

प्र०	पिता	पितरौ	पितरः
द्वि०	पितरम्	,,	पितॄन्
तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
च०	पित्रे	,,	पितृभ्यः
पं०	पितुः	,,	,,
ष०	,,	पित्रोः	पितॄणाम्
स०	पितरि	,,	पितृषु
सं०	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

(७) भगवत् (भगवान्) तकारान्त पुं०

प्र०	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वि०	भगवन्तम्	,,	भगवतः
तृ०	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
च०	भगवते	,,	भगवद्भ्यः
पं०	भगवतः	,,	,,
ष०	,,	भगवतोः	भगवताम्
स०	भगवति	,,	भगवत्सु
सं०	हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः

(८) गच्छत् (जाता हुआ) तकारान्त पुं०

प्र०	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वि०	गच्छन्तम्	,,	गच्छतः
तृ०	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
च०	गच्छते	,,	गच्छद्भ्यः
पं०	गच्छतः	,,	,,
ष०	,,	गच्छतोः	गच्छताम्
स०	गच्छति	,,	गच्छत्सु
सं०	हे गच्छन्	हे गच्छन्तौ	हे गच्छन्तः

(९) आत्मन् (आत्मा) अन्नन्त पुं०

प्र०	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वि०	आत्मानम्	,,	आत्मनः
तृ०	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
च०	आत्मने	,,	आत्मभ्यः
पं०	आत्मनः	,,	,,
ष०	,,	आत्मनोः	आत्मनाम्
स०	आत्मनि	,,	आत्मसु
सं०	हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः

(१०) करिन् (हाथी) इन्नन्त पुं०

प्र०	करी	करिणौ	करिणः
द्वि०	करिणम्	,,	,,
तृ०	करिणा	करिभ्याम्	करिभिः
च०	करिणे	,,	करिभ्यः
पं०	करिणः	,,	,,
ष०	,,	करिणोः	करिणाम्
स०	करिणि	,,	करिषु
सं०	हे करिन्	हे करिणौ	हे करिणः

(११) बालिका (बालिका) आकारान्त स्त्री०

प्र०	बालिका	बालिके	बालिकाः
द्वि०	बालिकाम्	,,	,,
तृ०	बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभिः
च०	बालिकायै	,,	बालिकाभ्यः
पं०	बालिकायाः	,,	,,
ष०	,,	बालिकयोः	बालिकानाम्
स०	बालिकायाम्	,,	बालिकासु
सं०	हे बालिके	हे बालिके	हे बालिकाः

(१२) मति (बुद्धि) इकारान्त स्त्री०

प्र०	मतिः	मती	मतयः
द्वि०	मतिम्	,,	मतीः
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
च०	मत्यै, मतये	,,	मतिभ्यः
पं०	मत्याः, मतेः	,,	,,
ष०	,, ,,	मत्योः	मतीनाम्
स०	मत्याम्, मतौ	,,	मतिषु
सं०	हे मते	हे मती	हे मतयः

(१३) नदी (नदी) ईकारान्त स्त्री०

प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि०	नदीम्	,,	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	,,	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	,,	,,
ष०	,,	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	,,	नदीषु
सं०	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

(१४) धेनु (गाय) उकारान्त स्त्री०

प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	,,	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च०	धेन्वै, धेनवे	,,	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः, धेनोः	,,	,,
ष०	,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम्, धेनौ	,,	धेनुषु
सं०	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

(१५) वधू (बहू) ऊकारान्त स्त्री०

प्र०	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वि०	वधूम्	,,	वधूः
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
च०	वध्वै	,,	वधूभ्यः
पं०	वध्वाः	,,	,,
ष०	,,	वध्वोः	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	,,	वधूषु
सं०	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः

(१६) मातृ (माता) ऋकारान्त स्त्री०

प्र०	माता	मातरौ	मातरः
द्वि०	मातरम्	,,	मातॄः
तृ०	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
च०	मात्रे	,,	मातृभ्यः
पं०	मातुः	,,	,,
ष०	,,	मात्रोः	मातॄणाम्
स०	मातरि	,,	मातृषु
सं०	हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः

(१७) वाच् (वाणी) चकारान्त स्त्री०

प्र०	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वि०	वाचम्	,,	,,
तृ०	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च०	वाचे	,,	वाग्भ्यः
पं०	वाचः	,,	,,
ष०	,,	वाचोः	वाचाम्
स०	वाचि	,,	वाक्षु
सं०	हे वाक्, वाग्	हे वाचौ	हे वाचः

(१८) फल (फल) अकारान्त नपुं०

प्र०	फलम्	फले	फलानि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
च०	फलाय	,,	फलेभ्यः
पं०	फलात्	,,	,,
ष०	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
स०	फले	,,	फलेषु
सं०	हे फल	हे फले	हे फलानि

(१९) वारि (जल) इकारान्त नपुं०

प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
च०	वारिणे	,,	वारिभ्यः
पं०	वारिणः	,,	,,
ष०	,,	वारिणोः	वारीणाम्
स०	वारिणि	,,	वारिषु
सं०	हे वारि, वारे	हे वारिणी	हे वारीणि

(२०) मधु (शहद) उकारान्त नपुं०

प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
च०	मधुने	,,	मधुभ्यः
पं०	मधुनः	,,	,,
ष०	,,	मधुनोः	मधूनाम्
स०	मधुनि	,,	मधुषु
सं०	हे मधु, मधो	हे मधुनी	हे मधूनि

(२१) जगत् (संसार) तकारान्त नपुं०

प्र०	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
च०	जगते	,,	जगद्भ्यः
पं०	जगतः	,,	,,
ष०	,,	जगतोः	जगताम्
स०	जगति	,,	जगत्सु
सं०	हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति

(२२) नामन् (नाम) अन्नन्त नपुं०

प्र०	नाम	नामनी	नामानि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
च०	नाम्ने	,,	नामभ्यः
पं०	नाम्नः	,,	,,
ष०	,,	नाम्नोः	नाम्नाम्
स०	नाम्नि, नामनि	,,	नामसु
सं०	हे नाम, नामन्	हे नामनी	हे नामानि

(२३) पयस् (दूध, जल) असन्त नपुं०

प्र०	पयः	पयसी	पयांसि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
च०	पयसे	,,	पयोभ्यः
पं०	पयसः	,,	,,
ष०	,,	पयसोः	पयसाम्
स०	पयसि	,,	पयःसु
सं०	हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि

(२४) मनस् (मन) असन्त नपुं०

प्र०	मनः	मनसी	मनांसि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
च०	मनसे	,,	मनोभ्यः
पं०	मनसः	,,	,,
ष०	,,	मनसोः	मनसाम्
स०	मनसि	,,	मनःसु
सं०	हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि

(२५) युष्मद् (तू)

प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम्	,,	युष्मान्
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
च०	तुभ्यम्	,,	युष्मभ्यम्
पं०	त्वत्	,,	युष्मत्
ष०	तव	युवयोः	युष्माकम्
स०	त्वयि	,,	युष्मासु

(२६) अस्मद् (मैं)

प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम्	,,	अस्मान्
तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	मह्यम्	,,	अस्मभ्यम्
पं०	मत्	,,	अस्मत्
ष०	मम	आवयोः	अस्माकम्
स०	मयि	,,	अस्मासु

(२७) (क) सर्व (सब) सर्वनाम पुं०

प्र०	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वि०	सर्वम्	,,	सर्वान्
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
च०	सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः
पं०	सर्वस्मात्	,,	,,
ष०	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
स०	सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु

(२७) (ख) सर्व (सब) नपुं०

प्र०	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
च०	सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः
पं०	सर्वस्मात्	,,	,,
ष०	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
स०	सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु

(२७) (ग) सर्व (सब) स्त्रीलिंग

प्र०	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वि०	सर्वाम्	,,	,,
तृ०	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
च०	सर्वस्यै	,,	सर्वाभ्यः
पं०	सर्वस्याः	,,	,,
ष०	,,	सर्वयोः	सर्वासाम्
स०	सर्वस्याम्	,,	सर्वासु

(२८) (क) कम् (कौन) पुं०

प्र०	कः	कौ	के
द्वि०	कम्	,,	कान्
तृ०	केन	काभ्याम्	कैः
च०	कस्मै	,,	केभ्यः
पं०	कस्मात्	,,	,,
ष०	कस्य	कयोः	केषाम्
स०	कस्मिन्	,,	केषु

(२८) (ख) किम् (कौन) नपुं०

प्र०	किम्	के	कानि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	केन	काभ्याम्	कैः
च०	कस्मै	,,	केभ्यः
पं०	कस्मात्	,,	,,
ष०	कस्य	कयोः	केषाम्
स०	कस्मिन्	,,	केषु

(२८) (ग) किम् (कौन) स्त्रीलिंग

प्र०	का	के	काः
द्वि०	काम्	,,	,,
तृ०	कया	काभ्याम्	काभिः
च०	कस्यै	,,	काभ्यः
पं०	कस्याः	,,	,,
ष०	,,	कयोः	कासाम्
स०	कस्याम्	,,	कासु

(२९) (क) यद् (जो) पुंलिंग

प्र०	यः	यौ	ये
द्वि०	यम्	,,	यान्
तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
च०	यस्मै	,,	येभ्यः
पं०	यस्मात्	,,	,,
ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
स०	यस्मिन्	,,	येषु

(२९) (ख) यद् (जो) नपुं०

प्र०	यत्	ये	यानि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
च०	यस्मै	,,	येभ्यः
पं०	यस्मात्	,,	,,
ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
स०	यस्मिन्	,,	येषु

(२९) (ग) यद् (जो) स्त्रीलिंग

प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	,,	,,
तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
च०	यस्यै	,,	याभ्यः
पं०	यस्याः	,,	,,
ष०	,,	ययोः	यासाम्
स०	यस्याम्	,,	यासु

(३०) (क) तद् (वह) पुं०

प्र०	सः	तौ	ते
द्वि०	तम्	,,	तान्
तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः
च०	तस्मै	,,	तेभ्यः
पं०	तस्मात्	,,	,,
ष०	तस्य	तयोः	तेषाम्
स०	तस्मिन्	,,	तेषु

(३०) (ख) तद् (वह) नपुं०

प्र०	तत्	ते	तानि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः
च०	तस्मै	,,	तेभ्यः
पं०	तस्मात्	,,	,,
ष०	तस्य	तयोः	तेषाम्
स०	तस्मिन्	,,	तेषु

(३०) (ग) तद् (वह) स्त्रीलिंग

प्र०	सा	ते	ताः
द्वि०	ताम्	,,	,,
तृ०	तया	ताभ्याम्	ताभिः
च०	तस्यै	,,	ताभ्यः
पं०	तस्याः	,,	,,
ष०	,,	तयोः	तासाम्
स०	तस्याम्	,,	तासु

(३१) (क) एतद् (यह) पुं०

प्र०	एषः	एतौ	एते
द्वि०	एतम्	,,	एतान्
तृ०	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
च०	एतस्मै	,,	एतेभ्यः
पं०	एतस्मात्	,,	,,
ष०	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
स०	एतस्मिन्	,,	एतेषु

(३१) (ख) एतद् (यह) नपुं०

प्र०	एतत्	एते	एतानि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
च०	एतस्मै	,,	एतेभ्यः
पं०	एतस्मात्	,,	,,
ष०	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
स०	एतस्मिन्	,,	एतेषु

(३१) (ग) एतद् (यह) स्त्रीलिंग

प्र०	एषा	एते	एताः
द्वि०	एताम्	,,	,,
तृ०	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
च०	एतस्यै	,,	एताभ्यः
पं०	एतस्याः	,,	,,
ष०	,,	एतयोः	एतासाम्
स०	एतस्याम्	,,	एतासु

(३२) (क) इदम् (यह) पुंलिंग

प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम्	,,	इमान्
तृ०	अनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	,,	एभ्यः
पं०	अस्मात्	,,	,,
ष०	अस्य	अनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	,,	एषु

(३२) (ख) इदम् (यह) नपुं०

प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	"	"	"
तृ०	अनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	"	एभ्यः
पं०	अस्मात्	"	"
ष०	अस्य	अनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	"	एषु

(३२) (ग) इदम् (यह) स्त्री०

प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमाम्	"	"
तृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः
च०	अस्यै	"	आभ्यः
पं०	अस्याः	"	"
ष०	"	अनयोः	आसाम्
स०	अस्याम्	"	आसु

(३३) कति (कितने) (केवल बहुवचन में रूप चलेंगे)

कति, कति, कतिभिः, कतिभ्यः, कतिभ्यः, कतीनाम्, कतिषु

(३४) एक (एक) (एकवचन में ही रूप चलेंगे)

	पुंलिंग	नपुं०	स्त्रीलिंग
प्र०	एकः	एकम्	एका
द्वि०	एकम्	,,	एकाम्
तृ०	एकेन	एकेन	एकया
च०	एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
पं०	एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्याः
ष०	एकस्य	एकस्य	,,
स०	एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

(३५) द्वि (दो) (द्विवचन में रूप चलेंगे)

	पुंलिग	नपुं०	स्त्री०
प्र०	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च०	,,	,,	,,
पं०	,,	,,	,,
ष०	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
स०	,,	,,	,,

(३६) त्रि (तीन) (बहु० में ही रूप चलेंगे)

	पुं०	नपुं०	स्त्री०
प्र०	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वि०	त्रीन्	"	"
तृ०	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
च०	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पं०	"	"	"
ष०	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
स०	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

(३७) चतुर् (चार) (बहु० ही होगा)

	पुं०	नपुं०	स्त्री०
प्र०	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वि०	चतुरः	"	"
तृ०	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
च०	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पं०	"	"	"
ष०	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
स०	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

	(३८) पञ्चन् (पांच)	(३९) षष् (छः)	(४०) सप्तन् (सात)
प्र०	पञ्च	षट्, षड्	सप्त
द्वि०	"	" "	"
तृ०	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः
च०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
पं०	"	"	"
ष०	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्
स०	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु

	(४१) अष्टन् (आठ)	(४२) नवन् (नौ)	(४३) दशन् (दस)
प्र०	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
द्वि०	" "	"	"
तृ०	अष्टभिः, अष्टाभिः	नवभिः	दशभिः
च०	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पं०	" "	"	"
ष०	अष्टानाम्, अष्टामाम्	नवानाम्	दशानाम्
स०	अष्टसु, अष्टासु	नवसु	दशसु

सूचना—त्रि से दशन् तक के रूप बहुवचन में ही चलेंगे।

(२) संख्याएं

१ एकः, एकम्, एका
२ द्वौ, द्वे, द्वे
३ त्रयः, त्रीणि, तिस्त्रः
४ चत्वारः, चत्वारि, चतस्त्रः
५ पञ्च
६ षट्
७ सप्त
८ अष्ट, अष्टौ
९ नव
१० दश
११ एकादश
१२ द्वादश
१३ त्रयोदश
१४ चतुर्दश
१५ पञ्चदश
१६ षोडश
१७ सप्तदश
१८ अष्टादश
१९ एकोनविंशतिः
२० विंशतिः
२१ एकविंशतिः
२२ द्वाविंशतिः
२३ त्रयोविंशतिः
२४ चतुर्विंशतिः
२५ पञ्चविंशतिः
२६ षड् विंशतिः
२७ सप्तविंशतिः
२८ अष्टाविंशति
२९ एकोनत्रिंशत्
३० त्रिंशत्
३१ एकत्रिंशत्
३२ द्वात्रिंशत्
३३ त्रयस्त्रिंशत्
३४ चतुस्त्रिंशत्
३५ पञ्चत्रिंशत्
३६ षट्त्रिंशत्
३७ सप्तत्रिंशत्
३८ अष्टात्रिंशत्
३९ एकोनचत्वारिंशत्
४० चत्वारिंशत्
४१ एकचत्वारिंशत्
४२ द्विचत्वारिंशत्
४३ त्रिचत्वारिंशत्
४४ चतुश्चत्वारिंशत्
४५ पञ्चचत्वारिंशत्
४६ षट्चत्वारिंशत्
४७ सप्तचत्वारिंशत्
४८ अष्टचत्वारिंशत्

४९ एकोनपञ्चाशत्	७५ पञ्चसप्ततिः
५० पञ्चाशत्	७६ षट्सप्ततिः
५१ एकपञ्चाशत्	७७ सप्तसप्ततिः
५२ द्विपञ्चाशत्	७८ अष्टसप्ततिः
५३ त्रिपञ्चाशत्	७९ एकोनाशीतिः
५४ चतुःपञ्चाशत्	८० अशीतिः
५५ पञ्चपञ्चाशत्	८१ एकाशीतिः
५६ षट्पञ्चाशत्	८२ द्व्यशीतिः
५७ सप्तपञ्चाशत्	८३ त्र्यशीतिः
५८ अष्टपञ्चाशत्	८४ चतुरशीतिः
५९ एकोनषष्टिः	८५ पञ्चाशीतिः
६० षष्टिः	८६ षडशीतिः
६१ एकषष्टिः	८७ सप्ताशीतिः
६२ द्विषष्टिः	८८ अष्टाशीतिः
६३ त्रिषष्टिः	८९ एकोननवतिः
६४ चतुःषष्टिः	९० नवतिः
६५ पञ्चषष्टिः	९१ एकनवतिः
६६ षट्षष्टिः	९२ द्विनवतिः
६७ सप्तषष्टिः	९३ त्रिनवतिः
६८ अष्टषष्टिः	९४ चतुर्नवतिः
६९ एकोनसप्ततिः	९५ पञ्चनवतिः
७० सप्ततिः	९६ षण्णवतिः
७१ एकसप्ततिः	९७ सप्तनवतिः
७२ द्विसप्ततिः	९८ अष्टनवतिः
७३ त्रिसप्ततिः	९९ एकोनशतम्
७४ चतुःसप्ततिः	१०० शतम्

१ हजार-सहस्रम् । १० हजार-अयुतम् । १ लाख-लक्षम् ।

१० लाख–नियुतम्। १ करोड़–कोटिः। १० करोड़–दशकोटिः। १ अरब–अर्बुदम्। १० अरब–दशार्बुदम्। १ खरब–खर्वम्। १० खरब–दशखर्वम्। १ नील–नीलम्। १० नील–दशनीलम्। १ पद्म–पद्मम्। १० पद्म–दशपद्मम्। १ शंख–शंखम्। १० शंख–दशशंखम्। महाशंख–महाशंखम्।

सूचना—(१) १०१ आदि संख्याओं के लिए अधिक शब्द लगाकर संख्या-शब्द बनावें। जैसे—१०१ एकाधिकंशतम्। १०२ द्वयधिकंशतम् आदि। २०० आदि के लिए दो आदि संख्यावाचक शब्द पहले रखकर द्वयम्, त्रयम् आदि रखें। जैसे—२०० द्विशती, शतद्वयम्। ३०० त्रिशती, शतत्रयम्। ४०० चतुःशती, ५०० पञ्चशती, ६०० षट्शती, ७०० सप्तशती (हिन्दी में-सतसई) आदि।

(२) त्रि (३) से अष्टादशन् (१८) तक सारे शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं। दशन् से अष्टादशन् तक के रूप दशन् के तुल्य चलावें।

(३) एकोनविंशति (१९) से अष्टाविंशति (२८) तक सारे शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिंग हैं। इनके रूप मति के तुल्य एकवचन में ही चलते हैं। इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति तथा जिसके अन्त में ये हों, उनके रूप मति के तुल्य चलेंगे। तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् के रूप स्त्रीलिंग एकवचन में चलेंगे।

(४) शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम् आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसक हैं। फल के तुल्य एकवचन में रूप चलेंगे। कोटि के रूप मति के तुल्य चलेंगे।

(५) संख्येय शब्द (क्रमवाचक विशेषण) बनाने के लिए ये नियम हैं—(क) १ से १० तक क्रमवाचक शब्द हैं—प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम। (ख) ११ से १८ तक के संख्येय शब्दों में 'अ' लग जाता है। जैसे—एकादशः (११ वाँ), द्वादशः (१२ वाँ)। (ग) १९ से आगे संख्येय शब्दों के अन्त में 'तम' लगता है। जैसे—विंशतितमः (२० वाँ), त्रिंशत्तमः (३० वाँ), शततमः (१०० वाँ)।

(३) धातुरूप-संग्रह

आवश्यक निर्देश

(१) संस्कृत की सारी धातुओं को १० भागों में बाँटा गया है। इन्हें 'गण' कहते हैं। ये १० गण हैं, भ्वादिगण आदि। इन गणों में धातु के अन्त में ति तः आदि प्रत्यय लगते हैं, इन्हें तिङ् कहते हैं। इनसे बने हुए पठति, पठतः आदि को तिङन्त पद कहते हैं। धातु और तिङ् (ति तःअन्ति आदि) प्रत्यय के बीच में होने वाले अ, उ, न आदि को 'विकरण' कहते हैं। इनके आधार पर ही गणों के रूपों में भेद होता है। ये विकरण लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में ही होते हैं। लृट् आदि अन्य लकारों में नहीं। अतः गण के कारण अन्तर भी लट् आदि चार लकारों में ही होते हैं।

(२) धातुएँ तीन प्रकार की होती हैं। इनके नाम और पहचान ये हैं—

(क) परस्मैपदी (ति तः अन्ति आदि), (ख) आत्मनेपदी (ते एते अन्ते आदि), (ग) उभयपदी (दोनों प्रकार के रूप होंगे)।

(३) कुछ धातुओं में 'स्य' आदि प्रत्ययों से पहले 'इ' लगता है, उन्हें 'सेट्' धातु कहते हैं। जिनमें इ नहीं लगता, उन्हें 'अनिट्' धातु कहते हैं।

(४) संस्कृत में सभी धातुओं के लट् आदि १० लकारो में रूप चलते हैं। यहाँ केवल पाँच लकारों के ही रूप दिए गए हैं। इनके नाम और अर्थ ये हैं—१. लट् (वर्तमान काल), २. लोट् (आज्ञा अर्थ) ३. लङ् (भूतकाल), ४. विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ) ५. लृट् (भविष्यत् काल)।

१० गणों की मुख्य विशेषताएँ

सूचना—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् इन चार लकारों में ही विकरण लगते हैं। धातु और तिङ् प्रत्यय के बीच में लगने वाले अ आदि को विकरण कहते हैं।

संख्या	गण-नाम	विकरण	विशेष
१	भ्वादिगण	शप् (अ)	धातु के अन्तिम स्वर को गुण होगा। बाद में अयादि संधि।
२	अदादिगण	शप् का लोप	धातु और तिङ् प्रत्यय के बीच में कोई विकरण नहीं लगेगा।
३	जुहोत्यादिगण	विकरण नहींलगेगा	धातु को लट् आदि में द्वित्व होगा।
४	दिवादिगण	श्यन् (य)	धातु को लट् आदि में गुण नहीं होता।
५	स्वादिगण	श्नु (नु)	धातु को लट् आदि में गुण नहीं होता।
६	तुदादिगण	श (अ)	धातु को लट् आदि में गुण नहीं होता।
७	रुधादिगण	श्नम् (न)	लट् आदि में धातु के प्रथम स्वर के बाद यह 'न' लगता है। धातु को लट् आदि में गुण नहीं होता।
८	तनादिगण	उ	लट् आदि में धातु के अन्तिम स्वर को गुण होता है।
९	क्र्यादिगण	श्ना (ना)	लट् आदि में धातु को गुण नहीं होता। ना को कभी 'नी' और 'न्' हो जाता है।
१०	चुरादिगण	णिच् अय्)	सभी लकारों में धातु के बाद 'अय्' लगता है। धातु के अन्तिम स्वर को वृद्धि होती है और उपधा के इ उ ऋ को गुण होता है।

(३) धातुरूप-संग्रह

(१) भ्वादिगण (परस्मैपदी धातुएँ)

(१) भू (होना)

लट् (वर्तमान काल)

प्र० पु०	भवति	भवतः	भवन्ति
म० पु०	भवसि	भवथः	भवथ
उ० पु०	भवामि	भवावः	भवामः

लोट् (आज्ञा अर्थ)

प्र० पु०	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म० पु०	भव	भवतम्	भवत
उ० पु०	भवानि	भवाव	भवाम

लङ् (भूतकाल)

प्र० पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म० पु०	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ० पु०	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

प्र० पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म० पु०	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ० पु०	भवेयम्	भवेव	भवेम

लृट् (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

(२) पठ् (पढ़ना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	पठति	पठतः	पठन्ति
म० पु०	पठसि	पठथः	पठथ
उ० पु०	पठामि	पठावः	पठामः

लोट्

प्र० पु०	पठतु	पठताम्	पठन्तु
म० पु०	पठ	पठतम्	पठत
उ० पु०	पठानि	पठाव	पठाम

लङ्

प्र० पु०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म० पु०	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० पु०	अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म० पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ० पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम

लृट्

प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म० पु०	पठिष्यति	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

(३) हस् (हँसना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	हसति	हसतः	हसन्ति
म० पु०	हससि	हसथः	हसथ
उ० पु०	हसामि	हसावः	हसामः

लोट्

प्र० पु०	हसतु	हसताम्	हसन्तु
म० पु०	हस	हसतम्	हसत
उ० पु०	हसानि	हसाव	हसाम

लङ्

प्र० पु०	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
म० पु०	अहसः	अहसतम्	अहसत
उ० पु०	अहसम्	अहसाव	अहसाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
म० पु०	हसेः	हसेतम्	हसेत
उ० पु०	हसेयम्	हसेव	हसेम

लृट्

प्र० पु०	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
म० पु०	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उ० पु०	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

(४) वद् (बोलना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	वदति	वदतः	वदन्ति
म० पु०	वदसि	वदथः	वदथ
उ० पु०	वदामि	वदावः	वदामः

लोट्

प्र० पु०	वदतु	वदताम्	वदन्तु
म० पु०	वद	वदतम्	वदत
उ० पु०	वदानि	वदाव	वदाम

लङ्

प्र० पु०	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
म० पु०	अवदः	अवदतम्	अवदत
उ० पु०	अवदम्	अवदाव	अवदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
म० पु०	वदेः	वदेतम्	वदेत
उ० पु०	वदेयम्	वदेव	वदेम

लृट्

प्र० पु०	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
म० पु०	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उ० पु०	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्याम

(५) पच् (पकाना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	पचति	पचतः	पचन्ति
म० पु०	पचसि	पचथः	पचथ
उ० पु०	पचामि	पचावः	पचामः

लोट्

प्र० पु०	पचतु	पचताम्	पचन्तु
म० पु०	पच	पचतम्	पचत
उ० पु०	पचानि	पचाव	पचाम

लङ्

प्र० पु०	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
म० पु०	अपचः	अपचतम्	अपचत
उ० पु०	अपचम्	अपचाव	अपचाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
म० पु०	पचेः	पचेतम्	पचेत
उ० पु०	पचेयम्	पचेव	पचेम

लृट्

प्र० पु०	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
म० पु०	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उ० पु०	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

(६) नम् (प्रणाम करना, झुकना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	नमति	नमतः	नमन्ति
म० पु०	नमसि	नमथः	नमथ
उ० पु०	नमामि	नमावः	नमामः

लोट्

प्र० पु०	नमतु	नमताम्	नमन्तु
म० पु०	नम	नमतम्	नमत
उ० पु०	नमानि	नमाव	नमाम

लङ्

प्र० पु०	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
म० पु०	अनमः	अनमतम्	अनमत
उ० पु०	अनमम्	अनमाव	अनमाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
म० पु०	नमेः	नमेतम्	नमेत
उ० पु०	नमेयम्	नमेव	नमेम

लृट्

प्र० पु०	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
म० पु०	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उ० पु०	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

(७) गम् (जाना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

सूचना—गम् को लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में गच्छ् होता है।

लट्

प्र० पु०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ० पु०	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लोट्

प्र० पु०	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उ० पु०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लङ्

प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० पु०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० पु०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म० पु०	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० पु०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

लृट्

प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
म० पु०	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

(८) दृश् (देखना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

सूचना—दृश् को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में पश्य् हो जाता है।

लट्

प्र० पु०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म० पु०	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ० पु०	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लोट्

प्र० पु०	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
म० पु०	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उ० पु०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ्

प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म० पु०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ० पु०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म० पु०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ० पु०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

लृट्

प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
म० पु०	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उ० पु०	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

(९) सद् (बैठना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

सूचना—सद् को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में सीद् होता है।

लट्

प्र० पु०	सीदति	सीदतः	सीदन्ति
म० पु०	सीदसि	सीदथः	सीदथ
उ० पु०	सीदामि	सीदावः	सीदामः

लोट्

प्र० पु०	सीदतु	सीदताम्	सीदन्तु
म० पु०	सीद	सीदतम्	सीदत
उ० पु०	सीदानि	सीदाव	सीदाम

लङ्

प्र० पु०	असीतः	असीदताम्	असीदन्
म० पु०	असीदत	असीदतम्	असीदत
उ० पु०	असीदम्	असीदाव	असीदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः
म० पु०	सीदेः	सीदेतम्	सीदेत
उ० पु०	सीदेयम्	सीदेव	सीदेम

लृट्

प्र० पु०	सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति
म० पु०	सत्स्यसि	सत्स्यथः	सत्स्यथ
उ० पु०	सत्स्यामि	सत्स्यावः	सत्स्यामः

(१०) स्था (रुकना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

सूचना—स्था को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में तिष्ठ् होता है।

लट्

प्र० पु०	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
म० पु०	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उ० पु०	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लोट

प्र० पु०	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
म० पु०	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उ० पु०	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ्

प्र० पु०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
म० पु०	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उ० पु०	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
म० पु०	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उ० पु०	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

लृट्

प्र० पु०	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
म० पु०	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उ० पु०	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

(११) पा (पीना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

सूचना — पा को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में पिब् हो जाता है।

लट्

प्र० पु०	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
म० पु०	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उ० पु०	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लोट्

प्र० पु०	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
म० पु०	पिब	पिबतम्	पिबत
उ० पु०	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लङ्

प्र० पु०	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
म० पु०	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उ० पु०	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
म० पु०	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उ० पु०	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

लृट्

प्र० पु०	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
म० पु०	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उ० पु०	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

(१२) जि (जीतना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	जयति	जयतः	जयन्ति
म० पु०	जयसि	जयथः	जयथ
उ० पु०	जयामि	जयावः	जयामः

लोट्

प्र० पु०	जयतु	जयताम्	जयन्तु
म० पु०	जय	जयतम्	जयत
उ० पु०	जयानि	जयाव	जयाम

लङ्

प्र० पु०	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
म० पु०	अजयः	अजयतम्	अजयत
उ० पु०	अजयम्	अजयाव	अजयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
म० पु०	जयेः	जयेतम्	जयेत
उ० पु०	जयेयम्	जयेव	जयेम

लृट्

प्र० पु०	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
म० पु०	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
उ० पु०	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

(१२) स्मृ (स्मरण करना) (भू के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म० पु०	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उ० पु०	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

लोट्

प्र० पु०	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
म० पु०	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
उ० पु०	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

लङ्

प्र० पु०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
म० पु०	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उ० पु०	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
म० पु०	स्मरे	स्मरेतम्	स्मरेत
उ० पु०	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम

लृट्

प्र० पु०	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
म० पु०	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उ० पु०	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

(१४) श्रु (सुनना) भ्वादि० परस्मैपद

सूचना—श्रु धातु को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में शृ हो जाता है और 'नु' विकरण लगता है।

लट्

प्र० पु०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
म० पु०	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उ० पु०	शृणोमि	शृणुवः	शृणुमः

लोट्

प्र० पु०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म० पु०	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उ० पु०	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

लङ्

प्र० पु०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म० पु०	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उ० पु०	अशृणवम्	अशृणुव	अशृणुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
म० पु०	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उ० पु०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

लृट्

प्र० पु०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
म० पु०	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उ० पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

भ्वादिगण (आत्मनेपदी धातुएँ)

(१५) सेव् (सेवा करना)

लट् (वर्तमान काल)

प्र० पु०	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
म० पु०	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उ० पु०	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लोट् (आज्ञा अर्थ)

प्र० पु०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
म० पु०	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ० पु०	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ् (भूतकाल)

प्र० पु०	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
म० पु०	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उ० पु०	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

प्र० पु०	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
म० पु०	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उ० पु०	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

लृट् (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
म० पु०	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ० पु०	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

(१६) लभ् (पाना) (सेव् के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० पु०	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० पु०	लभे	लभावहे	लभामहे

लोट्

प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० पु०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० पु०	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ्

प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० पु०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० पु०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० पु०	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० पु०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लृट्

प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० पु०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० पु०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

(१७) वृध् (बढ़ना) (सेव् के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
म० पु०	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
उ० पु०	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे

लोट्

प्र० पु०	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
म० पु०	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
उ० पु०	वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै

लङ्

प्र० पु०	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
म० पु०	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
उ० पु०	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
म० पु०	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
उ० पु०	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि

लृट्

प्र० पु०	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
म० पु०	वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे
उ० पु०	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

(१८) मुद् (प्रसन्न होना) (सेव् के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
म० पु०	मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे
उ० पु०	मोदे	मोदावहे	मोदामहे

लोट्

प्र० पु०	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
म० पु०	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
उ० पु०	मोदै	मोदावहै	मोदामहै

लङ्

प्र० पु०	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
म० पु०	अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्
उ० पु०	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
म० पु०	मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्।
उ० पु०	मोदेये	मोदेवहि	मोदेमहि

लृट्

प्र० पु०	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
म० पु०	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उ० पु०	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

(१९) सह् (सहना) (सेव् के तुल्य रूप चलेंगे)

लट्

प्र० पु०	सहते	सहेते	सहन्ते
म० पु०	सहसे	सहेथे	सहध्वे
उ० पु०	सहे	सहावहे	सहामहे

लोट्

प्र० पु०	सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
म० पु०	सहस्व	सहेथाम्	सहध्वम्
उ० पु०	सहै	सहावहै	सहामहै

लङ्

प्र० पु०	असहत	असहेताम्	असहन्त
म० पु०	असहथाः	असहेथाम्	असहध्वम्
उ० पु०	असहे	असहावहि	असहामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	सहेत	सहेयाताम्	सहेरन्
म० पु०	सहेथाः	सहेयाथाम्	सहेध्वम्
उ० पु०	सहेय	सहेवहि	सहेमहि

लृट्

प्र० पु०	सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते
म० पु०	सहिष्यसे	सहिष्येथे	सहिष्यध्वे
उ० पु०	सहिष्ये	सहिष्यावहे	सहिष्यामहे

(२०) याच् (माँगना) (सेव् के तुल्य रूप चलेंगे)

सूचना।—उभयपदी धातु है। केवल आत्मनेपद के रूप दिए हैं।

लट्

प्र० पु०	याचते	याचेते	याचन्ते
म० पु०	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उ० पु०	याचे	याचावहे	याचामहे

लोट्

प्र० पु०	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
म० पु०	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उ० पु०	याचै	याचावहै	याचामहै

लङ्

प्र० पु०	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
म० पु०	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उ० पु०	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
म० पु०	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उ० पु०	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

लृट्

प्र० पु०	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
म० पु०	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उ० पु०	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

भ्वादिगण (उभयपदी धातुएँ)

(२१) नी (लेजाना) परस्मैपद (भू के तुल्य)

लट्

प्र० पु०	नयति	नयतः	नयन्ति
म० पु०	नयसि	नयथः	नयथ
उ० पु०	नयामि	नयावः	नयामः

लोट्

प्र० पु०	नयतु	नयताम्	नयन्तु
म० पु०	नय	नयतम्	नयत
उ० पु०	नयानि	नयाव	नयाम

लङ्

प्र० पु०	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
म० पु०	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ० पु०	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म० पु०	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ० पु०	नयेयम्	नयेव	नयेम

लृट्

प्र० पु०	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
म० पु०	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उ० पु०	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

(२१) नी (ले जाना), आत्मनेपद (सेव् के तुल्य)

लट्

प्र० पु०	नयते	नयेते	नयन्ते
म० पु०	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ० पु०	नये	नयावहे	नयामहे

लोट्

प्र० पु०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म० पु०	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ० पु०	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ्

प्र० पु०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म० पु०	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ० पु०	अनये	अनयावहि	अनयामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म० पु०	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ० पु०	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

लृट्

प्र० पु०	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म० पु०	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ० पु०	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

भ्वादिगण. उभयपदी धातु

(२२) हृ (लेजाना, चुराना) परस्मैपद (भू के तुल्य)

लट्

प्र० पु०	हरति	हरतः	हरन्ति
म० पु०	हरसि	हरथः	हरथ
उ० पु०	हरामि	हरावः	हरामः

लोट्

प्र० प०	हरतु	हरताम्	हरन्तु
म० पु०	हर	हरतम्	हरत
उ० पु०	हराणि	हराव	हराम

लङ्

प्र० पु०	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
म० पु०	अहरः	अहरतम्	अहरत
उ० पु०	अहरम्	अहराव	अहराम

विधिलिङ्

प्र० प०	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
म० पु०	हरेः	हरेतम्	हरेत
उ० पु०	हरेयम्	हरेव	हरेम

लृट्

प्र० पु०	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
म० पु०	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
उ० पु०	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

(२२) हृ (ले जाना, चुराना) आत्मनेपद (सेव् के तुल्य)

लट्

प्र० पु०	हरते	हरेते	हरन्ते
म० पु०	हरसे	हरेथे	हरध्वे
उ० पु०	हरे	हरावहे	हरामहे

लोट्

प्र० पु०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
म० पु०	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
उ० पु०	हरै	हरावहै	हरामहै

लङ्

प्र० पु०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
म० पु०	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
उ० पु०	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
म० पु०	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
उ० पु०	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

लृट्

प्र० पु०	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
म० पु०	हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
उ० पु०	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

(२) अदादिगण (परस्मैपदी धातुएँ)

(२३) अद् (खाना)

लट्

प्र० पु०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
म० पु०	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उ० पु०	अद्मि	अद्वः	अद्मः

लोट्

प्र० पु०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
म० पु०	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उ० पु०	अदानि	अदाव	अदाम

लङ्

प्र० पु०	आदत्	आत्ताम्	आदन्
म० पु०	आदः	आत्तम्	आत्त
उ० पु०	आदम्	आद्व	आद्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
म० पु०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उ० पु०	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

लृट्

प्र० पु०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
म० पु०	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उ० पु०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

(२४) अस् (होना) अदादि० (परस्मैपद)

सूचना—अस् को लृट् में भू हो जाता है।

लट्

प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
म० पु०	असि	स्थः	स्थ
उ० पु०	अस्मि	स्वः	स्मः

लोट्

प्र० पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
म० पु०	एधि	स्तम्	स्त
उ० पु०	असानि	असाव	असाम

लङ्

प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० पु०	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ० पु०	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म० पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम

लृट्

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

(२५) हन् (मारना) अदादि० (परस्मैपद)

लट्

प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० पु०	हन्सि	हथः	हथ
उ० पु०	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लोट्

प्र० पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म० पु०	जहि	हतम्	हत
उ० पु०	हनानि	हनाव	हनाम

लङ्

प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० पु०	अहः	अहतम्	अहत
उ० पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म० पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ० पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

लृट्

प्र० पु०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
म० पु०	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ० पु०	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

(२६) इ(जाना) अदादि० (परस्मैपद)

लट्

प्र० पु०	एति	इतः	यन्ति
म० पु०	एषि	इथः	इथ
उ० पु०	एमि	इवः	इमः

लोट्

प्र० पु०	एतु	इताम्	यन्तु
म० पु०	इहि	इतम्	इत
उ० पु०	अयानि	अयाव	अयाम

लङ्

प्र० पु०	ऐत्	ऐताम्	आयन्
म० पु०	ऐः	ऐतम्	ऐत
उ० पु०	आयम्	ऐव	ऐम

विधिलिङ्

प्र० पु०	इयात्	इयाताम्	इयुः
म० पु०	इयाः	इयातम्	इयात
उ० पु०	इयाम्	इयाव	इयाम

लृट्

प्र० पु०	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
म० पु०	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ
उ० पु०	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः

(२७) ब्रू (कहना, बोलना) अदादि०, परस्मैपद

सूचना—ब्रू धातु उभयपदी है। यहाँ केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। ब्रू को लृट् में वच् हो जाता है।

लट्

प्र० पु०	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति
म० पु०	ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ
उ० पु०	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

लोट्

प्र० पु०	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
म० पु०	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उ० पु०	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

लङ्

प्र० पु०	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
म० पु०	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उ० पु०	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

विधिलिङ्

प्र० पु०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म० पु०	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ० पु०	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

लृट्

प्र० पु०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
म० पु०	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उ० पु०	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

(२८) दुह् (दुहना) अदादि० परस्मैपद

सूचना – दुह् उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं।

लट्

प्र० पु०	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
म० पु०	धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
उ० पु०	दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः

लोट्

प्र० पु०	दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु
म० पु०	दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध
उ० पु०	दोहानि	दोहाव	दोहाम

लङ्

प्र० पु०	अधोक्	अदुग्धाम्	अदुहन्
म० पु०	अधोक्	अदुग्धम्	अदुग्ध
उ० पु०	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
म० पु०	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उ० पु०	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम

लृट्

प्र० पु०	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
म० पु०	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
उ० पु०	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः

(२९) स्वप् (सोना) अदादि० परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
म० पु०	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
उ० पु०	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः

लोट्

प्र० पु०	स्वपितु	स्वपिताम्	स्वपन्तु
म० पु०	स्वपिहि	स्वपितम्	स्वपित
उ० पु०	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

लङ्

प्र० पु०	अस्वपीत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
म० पु०	अस्वपीः	अस्वपितम्	अस्वपित
उ० पु०	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
म० पु०	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उ० पु०	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

लृट्

प्र० पु०	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
म० पु०	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
उ० पु०	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः

(३०) रुद् (रोना) अदादि० परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
म० पु०	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
उ० पु०	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

लोट्

प्र० पु०	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु
म० पु०	रुदिहि	रुदितम्	रुदित
उ० पु०	रोदानि	रोदाव	रोदाम

लङ्

प्र० पु०	अरोदीत्	अरुदिताम्	अरुदन्
म० पु०	अरोदीः	अरुदितम्	अरुदित
उ० पु०	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम

विधिलिङ्

प्र० पु०	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
म० पु०	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
उ० पु०	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

लृट्

प्र० पु०	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
म० पु०	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
उ० पु०	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः	रोदिष्यामः

अदादिगण-आत्मनेपदी धातुएँ

(३१) आस् (बैठना)

लट्

प्र० पु०	आस्ते	आसाते	आसते
म० पु०	आस्से	आसाथे	आध्वे
उ० पु०	आसे	आस्वहे	आस्महे

लोट्

प्र० पु०	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
म० पु०	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
उ० पु०	आसै	आसावहै	आसामहै

लङ्

प्र० पु०	आस्त	आसाताम्	आसत
म० पु०	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
उ० पु०	आसि	आस्वहि	आस्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
म० पु०	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
उ० पु०	आसीय	आसीवहि	आसीमहि

लृट्

प्र० पु०	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
म० पु०	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
उ० पु०	आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे

(३२) शी (सोना) अदादिगण-आत्मनेपदी धातु

लट्

प्र० पु०	शेते	शयाते	शेरते
म० पु०	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ० पु०	शये	शेवहे	शेमहे

लोट्

प्र० पु०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म० पु०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ० पु०	शयै	शयावहै	शयामहै

लङ्

प्र० पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
म० पु०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उ० पु०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म० पु०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ० पु०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

लृट्

प्र० पु०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म० पु०	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ० पु०	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

(३) जुहोत्यादिगण

(परस्मैपदी धातुएँ)

(३३) हु (हवन करना)

सूचना—धातु को लट् आदि चार लकारों में द्वित्व होता है।

लट्

प्र० पु०	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
म० पु०	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उ० पु०	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

लोट्

प्र० पु०	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु
म० पु०	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत
उ० पु०	जुह्वानि	जुह्वाव	जुह्वाम

लङ्

प्र० पु०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः
म० पु०	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उ० पु०	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
म० पु०	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
उ० पु०	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

लृट्

प्र० पु०	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
म० पु०	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उ० पु०	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

(३४) भी (डरना) जुहोत्यादि॰ परस्मैपद

सूचना—धातु को लट् आदि चार लकारों में द्वित्व होता है।

लट्

प्र० पु०	बिभेति	बिभीतः	बिभ्यति
म० पु०	बिभेषि	बिभीथः	बिभीथ
उ० पु०	बिभेमि	बिभीव	बिभीम

लोट्

प्र० पु०	बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु
म० पु०	बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत
उ० पु०	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

लङ्

प्र० पु०	अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः
म० पु०	अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत
उ० पु०	अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः
म० पु०	बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात
उ० पु०	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम

लृट्

प्र० पु०	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
म० पु०	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उ० पु०	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

(३५) दा (देना) जुहोत्यादि० परस्मैपद

सूचना—दा धातु उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि चार लकारों में द्वित्व होगा।

लट्

प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति
म० पु०	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ० पु०	ददामि	दद्वः	दद्मः

लोट्

प्र० पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म० पु०	देहि	दत्तम्	दत्त
उ० पु०	ददानि	ददाव	ददाम

लङ्

प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म० पु०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ० पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म० पु०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ० पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लृट्

प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० पु०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ० पु०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

(३६) धा (धारण करना) जुहोत्यादि० परस्मैपद
सूचना—धा धातु उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं।
धातु को लट् आदि चार लकारों में द्वित्व होगा।

लट्

प्र० पु०	दधाति	धत्तः	दधति
म० पु०	दधासि	धत्थः	धत्थ
उ० पु०	दधामि	दध्वः	दध्मः

लोट्

प्र० पु०	दधातु	धत्ताम्	दधतु:
म० पु०	धेहि	धत्तम्	धत्त
उ० पु०	दधानि	दधाव	दधाम

लङ्

प्र० पु०	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः
म० पु०	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त
उ० पु०	अदधाम्	अदध्व	अदध्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः
म० पु०	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात
उ० पु०	दध्याम्	दध्याव	दध्याम

लृट्

प्र० पु०	धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति
म० पु०	धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ
उ० पु०	धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः

(४) दिवादिगण (परस्मैपदी धातुएँ)

(३७) दिव् (चमकना, जुआ खेलना आदि)

सूचना—लट् आदि चार लकारों में दिव् को दीव् होगा। य विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
म० पु०	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उ० पु०	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लोट्

प्र० पु०	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
म० पु०	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उ० पु०	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

लङ्

प्र० पु०	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
म० पु०	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ० पु०	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
म० पु०	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उ० पु०	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

लृट्

प्र० पु०	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
म० पु०	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उ० पु०	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

(३८) नृत् (नाचना) दिवादि० परस्मैपद

सूचना—लट् आदि में य विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
म० पु०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उ० पु०	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लोट्

प्र० पु०	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
म० पु०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उ० पु०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

लङ्

प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म० पु०	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उ० पु०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
म० पु०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उ० पु०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

लृट्

प्र० पु०	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
म० पु०	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उ० पु०	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

(३९) नश् (नष्ट होना) दिवादि० परस्मैपद

सूचना—लट् आदि में य विकरण लगेगा ।

लट्

प्र० पु०	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
म० पु०	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उ० पु०	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लोट्

प्र० पु०	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
म० पु०	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उ० पु०	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

लङ्

प्र० पु०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
म० पु०	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उ० पु०	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
म० पु०	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उ० पु०	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

लृट्

प्र० पु०	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
म० पु०	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उ० पु०	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

(४०) भ्रम (घूमना) दिवादि० परस्मैपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में भ्रम् को भ्राम् होता है। य विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
म० पु०	भ्राम्यसि	भ्राम्यथः	भ्राम्यथ
उ० पु०	भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः

लोट्

प्र० पु०	भ्राम्यतु	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
म० पु०	भ्राम्य	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
उ० पु०	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम

लङ्

प्र० पु०	अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
म० पु०	अभ्राम्यः	अभ्राम्यतम्	अभ्राम्यत
उ० पु०	अभ्राम्यम्	अभ्राम्याव	अभ्राम्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः
म० पु०	भ्राम्येः	भ्राम्येतम्	भ्राम्येत
उ० पु०	भ्राम्येयम्	भ्राम्येव	भ्राम्येम

लृट्

प्र० पु०	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
म० पु०	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
उ० पु०	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः

(४१) युध् (लड़ना) दिवादि० आत्मनेपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में य विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते
म० पु०	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे
उ० पु०	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे

लोट्

प्र० पु०	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्
म० पु०	युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्
उ० पु०	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै

लङ्

प्र० पु०	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
म० पु०	अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
उ० पु०	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्
म० पु०	युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्
उ० पु०	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि

लृट्

प्र० पु०	योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते
म० पु०	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
उ० पु०	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे

(४२) जन् (उत्पन्न होना) दिवादि० आत्मनेपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में जन् को जा होगा और य विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	जायते	जायेते	जायन्ते
म० पु०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ० पु०	जाये	जायावहे	जायामहे

लोट्

प्र० पु०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
म० पु०	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उ० पु०	जायै	जायावहै	जायामहै

लङ्

प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० पु०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० पु०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
म० पु०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उ० पु०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

लृट्

प्र० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
म० पु०	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उ० पु०	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

(५) स्वादिगण

(४३) सु (रस निकालना) (उभयपदी धातु)

सूचना—सु उभयपदी धातु है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि चार लकारों में नु विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
म० पु०	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उ० पु०	सुनोमि	सुनुवः	सुनुमः

लोट्

प्र० पु०	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु
म० पु०	सुनु	सुनुतम्	सुनुत
उ० पु०	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

लङ्

प्र० पु०	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
म० पु०	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उ० पु०	असुनवम्	असुनुव	असुनुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
म० पु०	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उ० पु०	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

लृट्

प्र० पु०	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
म० पु०	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
उ० पु०	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

(४४) आप् (पाना) स्वादि० परस्मैपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में नु विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
म० पु०	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उ० पु०	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लोट्

प्र० पु०	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
म० पु०	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उ० पु०	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

लङ्

प्र० पु०	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
म० पु०	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उ० पु०	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
म० पु०	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उ० पु०	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

लृट्

प्र० पु०	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
म० पु०	आत्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उ० पु०	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

(४५) शक् (सकना) स्वादि० परस्मैपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में नु विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
म० पु०	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उ० पु०	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लोट्

प्र० पु०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म० पु०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उ० पु०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

लङ्

प्र० पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म० पु०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ० पु०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
म० पु०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ० पु०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

लृट्

प्र० पु०	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
म० पु०	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उ० पु०	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

६. तुदादिगण

(४६) तुद् (दुःख देना) परस्मैपद

सूचना—तुद् उभयपदी है। यहाँ केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि चार लकारों में 'अ' विकरण लगेगा। धातु को गुण नहीं होगा।

लट्

प्र० पु०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
म० पु०	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उ० पु०	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लोट्

प्र० पु०	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
म० पु०	तुद	तुदतम्	तुदत
उ० पु०	तुदानि	तुदाव	तुदाम

लङ्

प्र० पु०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
म० पु०	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उ० पु०	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
म० पु०	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उ० पु०	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

लृट्

प्र० पु०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
म० पु०	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उ० पु०	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

(४७) इष् (चाहना) तुदादि० परस्मैपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में इष् को इच्छ् होगा और अ विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
म० पु०	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उ० पु०	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लोट्

प्र० पु०	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
म० पु०	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उ० पु०	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

लङ्

प्र० पु०	ऐच्छत	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
म० पु०	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उ० पु०	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
म० पु०	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उ० पु०	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

लृट्

प्र० पु०	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
म० पु०	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उ० पु०	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

(४८) स्पृश् (छूना) तुदादि० परस्मैपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में अ विकरण लगेगा और धातु को गुण नहीं होगा।

लट्

प्र० पु०	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
म० पु०	स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ।
उ० पु०	स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः

लोट्

प्र० पु०	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
म० पु०	स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
उ० पु०	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

लङ्

प्र० पु०	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
म० पु०	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उ० पु०	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
म० पु०	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
उ० पु०	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

लृट्

प्र० पु०	स्प्रक्ष्यति	स्प्रक्ष्यतः	स्प्रक्ष्यन्ति
म० पु०	स्प्रक्ष्यसि	स्प्रक्ष्यथः	स्प्रक्ष्यथ
उ० पु०	स्प्रक्ष्यामि	स्प्रक्ष्यावः	स्प्रक्ष्यामः

विशेष—लृट् लकार में स्पर्क्ष्यति स्पर्क्ष्यतः स्पर्क्ष्यन्ति आदि रूप भी बनते हैं।

(४९) प्रच्छ्(पूछना) तुदादि० परस्मैपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में प्रच्छ् को पृच्छ होगा और अ विकरण लगेगा। धातु को गुण नहीं होगा।

लट्

प्र० पु०	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
म० पु०	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उ० पु०	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लोट्

प्र० पु०	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
म० पु०	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उ० पु०	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

लङ्

प्र० पु०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म० पु०	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उ० पु०	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
म० पु०	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उ० पु०	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

लृट्

प्र० पु०	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
म० पु०	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उ० पु०	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

(५०) लिख् (लिखना) तुदादि० परस्मैपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में अ विकरण होगा और धातु को गुण नहीं होगा।

लट्

प्र० पु०	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
म० पु०	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उ० पु०	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लोट्

प्र० पु०	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
म० पु०	लिख	लिखतम्	लिखत
उ० पु०	लिखानि	लिखाव	लिखाम

लङ्

प्र० पु०	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
म० पु०	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उ० पु०	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
म० पु०	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उ० पु०	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

लृट्

प्र० पु०	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
म० पु०	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उ० पु०	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

(५१) मृ (मरना) तुदादि० आत्मनेपद

सूचना—मृ को लट् आदि चार लकारों में म्रिय होता है। यह आत्मनेपदी है। ऌट् में परस्मैपदी है।

लट्

प्र० पु०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
म० पु०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
उ० पु०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

लोट्

प्र० पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
म० पु०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
उ० पु०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै

लङ्

प्र० पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
म० पु०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
उ० पु०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
म० पु०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
उ० पु०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि

ऌट्

प्र० पु०	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
म० पु०	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
उ० पु०	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः

(५२) मुच् (छोड़ना) तुदादि० परस्मैपद

सूचना—मुच् उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि चार लकारों में मुच् को मुञ्च् होता है।

लट्

प्र० पु०	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
म० पु०	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
उ० पु०	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः

लोट्

प्र० पु०	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु
म० पु०	मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत
उ० पु०	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम

लङ्

प्र० पु०	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
म० पु०	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
उ० पु०	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः
म० पु०	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
उ० पु०	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम

लृट्

प्र० पु०	मोक्ष्यति	मोक्ष्यतः	मोक्ष्यन्ति
म० पु०	मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथः	मोक्ष्यथ
उ० पु०	मोक्ष्यामि	मोक्ष्यावः	मोक्ष्यामः

७. रुधादिगण

(५३) रुध् (रोकना) परस्मैपद

सूचना—रुध् उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि चार लकारों में धातु के बीच में 'न' विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति
म० पु०	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध
उ० पु०	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

लोट्

प्र० पु०	रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु
म० पु०	रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध
उ० पु०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

लङ्

प्र० पु०	अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
म० पु०	अरुणः	अरुन्धम्	अरुन्ध
उ० पु०	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
म० पु०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उ० पु०	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

लृट्

प्र० पु०	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
म० पु०	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
उ० पु०	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

(५४) भुज् (भोजन करना) रुधादि० आत्मनेपद

सूचना—भुज् धातु उभयपदी है। 'पालन करना' अर्थ में परस्मैपदी है। 'भोजन करना' अर्थ में आत्मनेपदी है। आत्मनेपद के रूप दिए हैं।

लट्

प्र० पु०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म० पु०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
उ० पु०	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे

लोट्

प्र० पु०	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
म० पु०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
उ० पु०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

लङ्

प्र० पु०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
म० पु०	अभुङ्क्था:	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
उ० पु०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
म० पु०	भुञ्जीथा:	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
उ० पु०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

लृट्

प्र० पु०	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
म० पु०	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे
उ० पु०	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

८. तनादिगण

(५५) तन् (फैलाना) परस्मैपद

सूचना—तन् धातु उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि चार लकारों में 'उ' विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
म० पु०	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उ० पु०	तनोमि	तनुवः	तनुमः

लोट्

प्र० पु०	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
म० पु०	तनु	तनुतम्	तनुत
उ० पु०	तनवानि	तनवाव	तनवाम

लङ्

प्र० पु०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
म० पु०	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उ० पु०	अतनवम्	अतनुव	अतनुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
म० पु०	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उ० पु०	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

लृट्

प्र० पु०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
म० पु०	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उ० पु०	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

(५६) कृ (करना) तनादि० परस्मैपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में 'उ' विकरण लगेगा। कृ धातु उभयपदी है।

लट्

प्र० पु०	करोति	कुरुत:	कुर्वन्ति
म० पु०	करोषि	कुरुथ:	कुरुथ
उ० पु०	करोमि	कुर्व:	कुर्म:

लोट्

प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० पु०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम

लङ्

प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० पु०	अकरो:	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यु:
म० पु०	कुर्या:	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लृट्

प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यत:	करिष्यन्ति
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथ:	करिष्यथ
उ० पु०	करिष्यामि	करिष्याव:	करिष्याम:

(५६) कृ (करना) तनादि० आत्मनेपद

सूचना—लट् आदि चार लकारों में 'उ' विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म० पु०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० पु०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लोट्

प्र० पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म० पु०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ० पु०	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ्

प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म० पु०	अकुरुथा	अकुर्वाथम्	अकुरुध्वम्
उ० पु०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म० पु०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ० पु०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

लृट्

प्र० पु०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० पु०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ० पु०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

९. क्र्यादिगण

(५७) क्री (मोल लेना, खरीदना) परस्मैपद

सूचना—क्री धातु उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि चार लकारों में 'ना' विकरण लगेगा।

लट्

प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म० पु०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ० पु०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लोट्

प्र० पु०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
म० पु०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ० पु०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

लङ्

प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म० पु०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ० पु०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म० पु०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ० पु०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

लृट्

प्र० पु०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
म० पु०	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उ० पु०	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

(५८) ग्रह् (लेना, पकड़ना) क्र्यादि० परस्मैपद

सूचना—ग्रह् उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि चार लकारों में 'ना' विकरण लगेगा और ग्रह् को गृह् होगा।

लट्

प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० पु०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० पु०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लोट्

प्र० पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ० पु०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

लङ्

प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म० पु०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
म० पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ० पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

लृट्

प्र० पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
म० पु०	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उ० पु०	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्याव	ग्रहीष्यामः

(५९) ज्ञा (जानना) क्रयादि० परस्मैपद

सूचना—ज्ञा उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि चार लकारों में 'ना' विकरण लगेगा और ज्ञा को जा होगा।

लट्

प्र० पु०	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म० पु०	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ० पु०	जानामि	जानीवः	जानीमः

लोट्

प्र० पु०	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
म० पु०	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उ० पु०	जानानि	जानाव	जानाम

लङ्

प्र० पु०	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
म० पु०	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उ० पु०	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
म० पु०	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उ० पु०	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

लृट्

प्र० पु०	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
म० पु०	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उ० पु०	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

१०. चुरादिगण

(६०) चुर् (चुराना) परस्मैपद

सूचना—चुर् उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि सभी लकारों में 'अय्' विकरण लगेगा। धातु को गुण होगा।

लट्

प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म० पु०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ० पु०	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लोट्

प्र० पु०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
म० पु०	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उ० पु०	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लङ्

प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म० पु०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ० पु०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म० पु०	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ० पु०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

लृट्

प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
म० पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उ० पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

(६१) चिन्त् (सोचना) चुरादि० परस्मैपद

सूचना–चिन्त् उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि सभी लकारों में 'अय्' विकरण लगेगा। रूप चुर् के तुल्य।

लट्

प्र० पु०	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
म० पु०	चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ
उ० पु०	चिन्तयामि	चिन्तयावः	चिन्तयामः

लोट्

प्र० पु०	चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
म० पु०	चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत
उ० पु०	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम

लङ्

प्र० पु०	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
म० पु०	अचिन्तयः	अचिन्तयम्	अचिन्तयत
उ० पु०	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः
म० पु०	चिन्तयेः	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत
उ० पु०	चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम

लट्

प्र० पु०	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति
म० पु०	चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथः	चिन्तयिष्यथ
उ० पु०	चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्यावः	चिन्तयिष्यामः

(१२) कथ् (कहना) चुरादि० परस्मैपद

सूचना—कथ् उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। सभी लकारों में 'अय्' विकरण लगेगा। रूप चर् के तुल्य।

लट्

प्र० पु०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म० पु०	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ० पु०	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लोट्

प्र० पु०	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
म० पु०	कथय	कथयतम्	कथयत
उ० पु०	कथयानि	कथयाव	कथयाम

लङ्

प्र० पु०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
म० पु०	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उ० पु०	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
म० पु०	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उ० पु०	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

लृट्

प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
म० पु०	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उ० पु०	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

(६३) भक्ष् (खाना) चुरादि० परस्मैपद

सूचना—भक्ष् उभयपदी है। केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं। लट् आदि सभी लकारों में 'अय्' विकरण लगेगा। रूप चुर् के तुल्य।

लट्

प्र० पु०	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
म० पु०	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उ० पु०	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

लोट्

प्र० पु०	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
म० पु०	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उ० पु०	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम

लङ्

प्र० पु०	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
म० पु०	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उ० पु०	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
म० पु०	भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उ० पु०	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

लृट्

प्र० पु०	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
म० पु०	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
उ० पु०	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

(४) सन्धि-विचार

(१) यण् सन्धि (स्वर-संधि)

(इको यणचि) इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ ॠ को र्, ऌ को ल् हो जाता है, बाद में कोई स्वर हो तो। समान स्वर होगा तो नहीं। जैसे—

(१) प्रति + एकः = प्रत्येकः
इति + अत्र = इत्यत्र
यदि + अपि = यद्यपि

(२) अनु + अयः = अन्वयः
मधु + अरिः = मध्वरिः
गुरु + आज्ञा = गुर्वाज्ञा

(३) भ्रातृ + आ = भ्रात्रा
पितृ + ए = पित्रे

(४) ऌ + आकृतिः = लाकृतिः

(२) अयादि-संधि

(एचोऽयवायावः) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् होता है, बाद में कोई स्वर हो तो। (पदान्त ए या ओ के बाद अ होगा तो नहीं)।

(१) कवे + ए = कवये
जे + अः = जय
शे + अनम् = शयनम्
ने + अति = नयति

(२) भो + अति = भवति
गुरो + ए = गुरवे
पो + अनः = पवनः
भो + अनम् = भवनम्

(३) गै + अकः = गायकः
नै + अकः = नायक

(४) पौ + अकः = पावकः
द्वौ + एतौ = द्वावेतौ

(३) गुण-संधि

(आद्गुणः) (१) अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनों को 'ए' होगा। (२) अ या आ के बाद उ या ऊ हो तो दोनों का 'ओ' होगा।

(३) अ या आ के बाद ऋ या ॠ हो तो दोनों का अर्' होगा। (४) अ या आ के बाद ऌ हो तो दोनों को अल् होगा।

(१) गण+ईशः=गणेशः
तथा+इति=तथेति
रमा+ईशः=रमेशः
न+इदम=नेदम्

(२) महा+उदयः=महोदयः
पर+उपकारः=परोपकारः
महा+उत्सवः=महोत्सवः
सूर्य+उदयः=सूर्योदयः

(३) महा+ऋषिः=महर्षिः
सप्त+ऋषिः=सप्तर्षिः
वर्षा+ऋतुः=वर्षर्तुः

(४) तव+ऌकारः=तवल्कारः

(४) वृद्धि संधि

(वृद्धिरेचि) (१) अ या आ के बाद ए या ऐ होगा तो दोनों को 'ऐ' होगा। (२) अ या आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनों को 'औ' होगा।

अत्र+एकः=अत्रैकः
न+एतत्=नैतत्
छात्र+ऐक्यम्=छात्रैक्यम्

जन+ओघः=जनौघः
वन+ओषधिः=वनौषधिः
कार्य+औचित्यम्=कार्यौचित्यम्

(५) दीर्घ संधि

(**अकः सवर्णे दीर्घः**) अ इ उ ऋ के बाद कोई सवर्ण (सदृश) अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर उसी का दीर्घ अक्षर हो जाता है। अर्थात्—अ या आ+अ या आ=आ। (२) इ या ई+इ या ई=ई। (३) उ या ऊ+उ या ऊ=ऊ। (४) ऋ+ऋ=ॠ।

दया+आनन्दः=दयानन्दः
राम+आयणम्=रामायणम्
हरि+ईशः=हरीशः
सती+ईशः=सतीशः

भानु+उदयः=भानूदयः
गुरु+उपदेशः=गुरूपदेशः
लघु+ऊर्मिः=लघूर्मिः
होतृ+ऋकारः=होतॄकारः

(६) (पूर्वरूप) संधि

(एङः पदान्तादति) पद (शब्दरूप या धातुरूप) के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो वह हट जाता है। (अ हटा है, इसके संकेत के लिए अवग्रह चिह्न ऽ लगा दिया जाता है)

हरे + अव = हरेऽव	बालको + अयम् = बालकोऽयम्
के + अत्र = केऽत्र	सो + अपि = सोऽपि

(७) श्चुत्व संधि

(स्तोः श्चुना श्चुः) स् या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् को श् और तवर्ग को चवर्ग हो जाता है। अर्थात् त् को च्, द् को ज्, न् को ञ्।

कृष्णस् + च = कृष्णश्च	सद् + जनः = सज्जनः
रामस् + शेते = रामश्शेते	उद् + ज्वलः = उज्ज्वलः
सत् + चित् = सच्चित्	याच् + ना = याच्ञा
अन्यत् + च = अन्यच्च	शार्ङ्गिन् + जयः = शार्ङ्गिञ्जयः

(८) ष्टुत्व संधि

(ष्टुना ष्टुः) स् या तवर्ग से पहले या बाद में ष या ट वर्ग कोई भी हो तो स् को ष् और तवर्ग को टवर्ग होता है। अर्थात् त् को ट्, द् को ड्, न् को ण्।

दुष् + तः = दुष्टः	उद् + डयते = उड्डयते
पुष् + तः = पुष्टः	उष् + त्रः = उष्ट्रः
रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः	कृष् + नः = कृष्णः

(९) जश्त्व संधि (क)

(झलां जशोऽन्ते) वर्ग के १, २, ३, ४ (अर्थात् पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण) को उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है, यदि वह पद (शब्द) का अन्तिम अक्षर हो तो।

सत् + आचारः = सदाचारः	उत् + आहरणम् = उदाहरणम्
अच् + अन्तः = अजन्तः	सुप् + अन्तः = सुबन्तः

(१०) जश्त्व संधि (ख)

(झलां जश् झशि) वर्ग के १, २, ३, ४ (पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण) को अपने वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है, बाद में वर्ग के ३, ४ (तीसरा या चौथा वर्ण) हों तो। (यह नियम पद के बीच में लगता है और नियम ९ पद के अन्त में लगता है)

शुध् + धिः = शुद्धिः	दुघ् + धम् = दुग्धम्
बुध् + धिः = बुद्धिः	दघ् + धः = दग्धः
युध् + धः = युद्धः	क्षुभ् + धः = क्षुब्धः

(११) चर्त्व संधि

(खरि च) वर्ग के १, २, ३, ४ को उसी वर्ग का प्रथम अक्षर हो जाता है, बाद में वर्ग के १, २, श ष स कोई हो तो।

उद् + साहः = उत्साह	सद् + कारः = सत्कारः
तद् + परः = तत्परः	उद् + पन्नः = उत्पन्नः

(१२) अनुस्वार संधि

(मोऽनुस्वारः) पद (शब्दरूप या धातुरूप) के अन्तिम म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है, बाद में कोई व्यंजन हो तो। बाद में कोई स्वर होगा तो नहीं।

चिरम् + जीव = चिरंजीव	भोजनम् + खाद = भोजनं खाद
सत्यम् + वद = सत्यं वद	पुस्तकम् + पठ = पुस्तकं पठ
कार्यम् + कुरु = कार्यं कुरु	गुरुम् + नमति = गुरुं नमति

(१३) विसर्ग संधि

(विसर्जनीयस्य सः) विसर्ग (:) के बाद वर्ग के १, २, श ष स कोई हों तो विसर्ग को स् हो जाता है। (श् या चवर्ग बाद में हो तो संधिनियम ७ से स् को श् हो जायगा)।

कः + चित् = कश्चित्	पशुः + चरति = पशुश्चरति
रामः + तिष्ठति = रामस्तिष्ठति	पुत्रः + च = पुत्रश्च
हरिः + तरति = हरिस्तरति	हरिः + शेते = हरिश्शेते

(१४) रुत्व संधि

(ससजुषो रुः) शब्द के अन्तिम स् को रु (र्) हो जाता है। (सूचना —प्रथमा के एकवचन में इसी र् का विसर्ग रहता है। संधि में अ और आ के अतिरिक्त अन्य स्वरों के बाद यह र् रहता है।)

गुरुः + अवदत् = गुरुरवदत्	हरेः + एव = हरेरेव
मुनिः + अस्ति = मुनिरस्ति	भानोः + अयम् = भानोरयम्
मातुः + इच्छा = मातुरिच्छा	वधूः + इयम् = वधूरियम्

(१५) उत्व संधि (क)

(**अतो रोरप्लुतादप्लुते**) अः को ओ हो जाता है, बाद में अ हो तो। बाद के अ को पूर्वरूप होने से ऽ (अवग्रह) हो जाता है। अर्थात् अः+अ = ओऽ। ऽ को अवग्रह चिह्न कहते हैं। इसका उच्चारण नहीं होता है।

रामः + अपि = रामोऽपि	कृष्णः + अवदत् = कृष्णोऽवदत्
सः + अयम् = सोऽयम्	अन्यतः + अपि = अन्यतोऽपि
सः + अपठत् = सोऽपठत्	जनः + अयम् = जनोऽयम्

(१६) उत्व संधि (ख)

(**हशि च**) अः को ओ हो जाता है, बाद में वर्ग के ३, ४, ५ (तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण), ह् य व र ल कोई हों तो।

बालः + गच्छति = बालो गच्छति	देवः + हसति = देवो हसति
पुत्रः + लिखति = पुत्रो लिखति	नृपः + मोदते = नृपो मोदते
नृपः + जयति = नृपो जयति	रामः + वन्द्यः = रामो वन्द्यः

(१७) यत्व संधि

(**भोभगो अघो अपूर्वस्य योऽशि**) भोः, भगोः, अघोः शब्द और अ या आ के बाद रु (र् या :) को य् होता है। बाद में कोई स्वर या

व्यंजन होगा तो इस य् का लोप हो जाता है। य् का लोप होने पर गुण या वृद्धि आदि कार्य नहीं होंगे।

रामः + इच्छति = राम इच्छति　पुत्राः + लिखन्ति = पुत्रा लिखन्ति
जनाः + हसन्ति = जना हसन्ति　देवाः + एते = देवा एते
नराः + इमे = नरा इमे　शोभनाः + वृक्षाः = शोभना वृक्षाः

(१८) सुलोप संधि

(एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि) सः और एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है, बाद में कोई व्यंजन हो तो।

सः + पठति = स पठति　एषः + वदति = एष वदति
सः + लिखति = स लिखति　एषः + हसति = एष हसति
सः + गच्छति = स गच्छति　एषः + करोति = एष करोति

(५) समास-परिचय

समास—दो या अधिक शब्दों को मिलाने या जोड़ने को समास कहते हैं। समास करने पर समास हुए शब्दों के बीच की विभक्ति (कारक) नहीं रहती। समस्त (समासयुक्त) शब्द एक हो जाता है, अतः उससे ही विभक्ति होती है। समास के ये भेद हैं:—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, नञ्, बहुव्रीहि, द्वन्द्व।

(१) अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव समास की पहचान यह है कि उसका पहला शब्द अव्यय (उपसर्ग या निपात) होता है। बाद का शब्द कोई संज्ञा शब्द होगा। अव्ययीभाव समास वाले शब्द अव्यय होते हैं या नपुंसकलिंग एकवचन। इनके रूप प्रायः नहीं चलते हैं। किसी विशेष अर्थ में अव्यय का प्रयोग होता है। जैसे—१. समीप अर्थ में उप। गङ्गायाः समीपम्—उपगङ्गम् (गंगा के समीप)। २. अभाव अर्थ में निर्। विघ्नानाम् अभावः-निर्विघ्नम् (विघ्नों का अभाव)। ३. पीछे अर्थ में अनु। अनुहरि (हरि के पीछे)। ४. प्रत्येक अर्थ में प्रति। प्रतिगृहम् (प्रत्येक घर में)। ५. अनुसार अर्थ में यथा। यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)।

(२) तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास उसे कहते हैं, जहाँ दो या अधिक शब्दों के बीच में द्वितीया आदि विभक्ति का लोप होता है। जिस विभक्ति का लोप होगा, उसी विभक्ति के नाम से वह तत्पुरुष कहा जाता है। जैसे—(१) द्वितीया तत्पुरुष—कृष्णं श्रितः-कृष्णश्रितः। (२) तृतीया—विद्यया हीनः-विद्याहीनः। (३) चतुर्थी—यूपाय दारु-यूपदारु।

स्नानाय अर्थम्-स्नानार्थम्। (४) पंचमी—चोराद् भयम्-चोरभयम्। (५) षष्ठी—राज्ञः पुरुषः-राजपुरुषः। विद्यायाः आलयः-विद्यालयः। (६) सप्तमी—शास्त्रे निपुणः-शास्त्रनिपुणः।

(३) कर्मधारय समास

विशेषण और विशेष्य के समास को कर्मधारय समास कहते हैं। विशेषण शब्द पहले रहता है, विशेष्य बाद में। इसमें दोनों पदों में एक ही विभक्ति रहती है। नीलम् उत्पलम्—नीलोत्पलम् (नीला कमल)। महान् आत्मा-महात्मा। इन अर्थों में भी कर्मधारय होता है—(१) एव (ही) अर्थ में—मुखम् एव कमलम्—मुखकमलम्। पादपद्मम्। (२) सुन्दर अर्थ में सु, बुरे अर्थ में कु। सुन्दरः पुरुषः—सुपुरुषः (भद्र पुरुष)। कुपुरुषः (नीच आदमी), कुपुत्रः, कुशिष्यः। (३) इव (सदृश) अर्थ में—घन इव श्यामः—घनश्यामः (बादल के तुल्य सांवला)। नरसिंहः, चन्द्रमुखम्।

(४) द्विगु समास

कर्मधारय का ही भेद द्विगु है। कर्मधारय में पहला शब्द संख्या वाचक होगा तो उसे द्विगु कहेंगे। यह समास प्रायः समाहार (समूह) अर्थ में होता है। त्रयाणां लोकानां समाहारः—त्रिलोकम्, त्रिलोकी (तीन लोक)। समाहार में प्रायः नपुंसक लिंग एक वचन होता है। अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग भी हो जाते हैं। चतुर्युगम्-चतुर्युगी, शताब्दम्—शताब्दी।

(५) नञ् समास

'नहीं' अर्थ वाले नञ् का अन्य शब्द के साथ समास होने पर नञ् समास होता है। बाद में व्यंजन होगा तो नञ् का अ शेष रहता है। बाद में कोई स्वर होगा तो तो नञ् का अन् शेष रहेगा। न प्रियः-अप्रियः। अस्वस्थः, अविद्या, अज्ञानम्, अब्राह्मणः। न उपस्थितः—अनुपस्थितः (अनुपस्थित)। अनुचितः, अनादरः, अनुदारः, अनीश्वरवादी।

(६) बहुव्रीहि समास

बहुव्रीहि में अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है, जैसे—जिसको, जिसने, जिसका आदि अर्थ। बहुव्रीहि समास होने पर समस्त पद किसी अन्य पद के विशेषण के रूप में काम करता है। समस्त पद का अर्थ करने पर जिसको, जिसका आदि अर्थ निकलता है। प्राप्तम् उदकं यं सः—प्राप्तोदकः (जिसको जल मिल गया है)। हताः शत्रवः येन सः—हतशत्रुः (जिसने शत्रुओं को मारा है) पतितं पर्णं यस्मात् सः—पतितपर्णः (जिसके पत्ते गिर गए हैं, ऐसा वृक्ष। दश आननानि यस्य सः—दशाननः (दस मुँह वाला, रावण)। इन अर्थों में भी बहुव्रीहि होता है—(क) सह (साथ) अर्थ में—सविनयम् (विनय के साथ)। सादरम्, सपुत्रः, सभार्यः। (ख) व्यधिकरण अर्थात् दोनों पदों में भिन्न विभक्तियाँ हों। धनुः पाणौ यस्य सः—धनुष्पाणिः (धनुर्धर)।

(७) द्वन्द्व समास

द्वन्द्व समास में दोनों पदों का अर्थ मुख्य होता है। द्वन्द्व समास की पहचान है कि जहाँ अर्थ करने पर च (और) अर्थ निकले। इसके साधारणतया तीन भेद हैं। (१) इतरेतर—जहाँ बीच में 'और' अर्थ होता है। इसमें शब्दों की संख्या के अनुसार वचन होता है। रामः च कृष्णः च: रामकृष्णौ (राम और कृष्ण)। पत्रं च पुष्पं च फलं च—पत्रपुष्पफलानि। रामलक्ष्मणौ, हरिहरौ। (२) समाहार या समूह अर्थ में। इसमें प्रायः नपुंसलिंग एकवचन अन्त में रहता है। हस्तौ च पादौ च—हस्तपादम् (हाथ-पैर)। शीतोष्णम् (ठंडा-गर्म। (३) एक-शेष—समान आकार वाले शब्दों में से एक शब्द शेष रहता है और अर्थ के अनुसार द्विवचन या बहुवचन होगा। वृक्षश्च वृक्षश्च—वृक्षौ (दो पेड़)।

(६) सुभाषित-संग्रह

१. सत्यं वद—सत्य बोलो।

२. धर्मं चर—धर्म के अनुसार आचरण करो।

३. स्वाध्यायात् मा प्रमद—स्वाध्याय में प्रमाद न करो।

४. सत्यात् न प्रमदितव्यम्—सत्य बोलने में प्रमाद न करना।

५. मातृदेवो भव—माता को देवता के तुल्य समझो।

६. पितृदेवो भव—पिता को देवता के तुल्य समझो।

७. आचार्यदेवो भव—गुरु को देवता के तुल्य समझो।

८. अतिथिदेवो भव—अतिथि को देवता के तुल्य समझो।

९. श्रद्धया देयम्—श्रद्धापूर्वक दान करो।

१०. श्रिया देयम्—धन पास में होने पर दान करो।

११. अन्नं ब्रह्म—अन्न को ब्रह्म समझो।

१२. अन्नं न निन्द्यात्—अन्न की निन्दा न करो।

१३. अन्नं न परिचक्षीत—अन्न का अपमान न करो।

१४. अन्नं बहु कुर्वीत—अन्न की सदा वृद्धि करो।

१५. ईशावास्यमिदं सर्वम्—सारे संसार में परमात्मा व्याप्त है।

१६. कुर्वन् एवेह कर्माणि जिजीविषेत्—संसार में कर्म करते हुए ही जीवित रहने की इच्छा करे।

१७. विद्ययाऽमृतमश्नुते—विद्या से अमरत्व की प्राप्ति होती है।

१८. विद्याविहीनः पशुः—विद्याहीन मनुष्य पशुतुल्य होता है।

१९. सत्यमेव जयते नानृतम्—सत्य की जय होती है, असत्य की नहीं।

२०. नहि सत्यात् परो धर्मः—सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है।

२१. अहिंसा परमो धर्मः— -अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है।

२२. परोपकाराय सतां विभूतयः—सज्जनों की संपत्ति परोपकार के लिए होती है।

२३. उद्योगिनं पुरुषसिंहम् उपैति लक्ष्मीः—पुरुषार्थी शूरवीर को ही लक्ष्मी प्राप्त होती है।

२४. आचारः परमो धर्मः—सदाचार सर्वोत्तम धर्म है।

२५. धर्मार्थकाममोक्षाणाम् आरोग्यं मूलमुत्तमम्—धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष का सर्वोत्तम आधार नीरोगता है।

२६. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी—माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर है।

२७. सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्—सत्संगति मनुष्य को सभी प्रकार के लाभ देती है।

२८. संघे शक्तिः कलौ युगे—कलियुग में संगठन में ही शक्ति है।

२९. सर्वे गुणाः काञ्चनम् आश्रयन्ते—धन में सारे गुणों का निवास है।

३०. सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्—सन्तोष ही मनुष्य के लिए सर्वोत्तम निधि है।

३१. विद्वान् सर्वत्र पूज्यते—विद्वान् की सर्वत्र पूजा होती है।

३२. माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः—पृथिवी मेरी माता है और मैं पृथिवी का पुत्र हूँ।

३३. अकर्मा दस्युः—अकर्मण्य मनुष्य निकृष्ट होता है।

३४. श्रद्धया सत्यमाप्यते—श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।

३५. विद्या ददाति विनयम्—विद्या विनय देती है।

३६. कर्मण्येवाधिकारस्ते—मनुष्य का कर्म करने में ही अधिकार है।

३७. **उद्धरेदात्मनात्मानम्**—अपना उद्धार स्वयं करो।

३८. **नियतं कुरु कर्माणि**—तुम कर्म अवश्य करते रहो।

३९. **पण्डिताः समदर्शिनः**—विद्वान् सबको समदृष्टि से देखता है।

४० **साहित्यसंगीतकलाविहीनः, साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः**—साहित्य, संगीत और कला से रहित मनुष्य बिना सींग-पूँछ का पशु है।

४१. **बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा**—परमात्मा की इच्छा ही प्रबल है।

४२. **नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण**—चक्र की धुरी के तुल्य मनुष्य की दशा कभी ऊपर और कभी नीचे जाती है।

४३. **नाधर्मः चिरमृद्धये**—अधर्म से अधिक दिन सुख नहीं मिलता।

४४. **न च धर्मो दयापरः**—दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

४५. **स्वधर्मे निधनं श्रेयः**—अपने धर्म के लिए मर जाना भी श्रेयस्कर है।

४६. **धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति**—जहाँ सत्य नहीं, वह धर्म नहीं है।

४७. **क्षमया किं न सिध्यति**—क्षमाशीलता से क्या सिद्ध नहीं होता ?

४८ **विनाशकाले विपरीतबुद्धिः**—विनाश के समय बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

४९. **अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धुः**—संसार में पैसा ही मनुष्य का साथी है।

५०. **निर्धनस्य कुतः सुखम्**—निर्धन को सुख नहीं मिलता।

५१. **क्षणविध्वंसिनः कायाः**—शरीर क्षणभंगुर है।

५२. **मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम्**—मरना मनुष्य का स्वभाव है।

५३. **अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्**—मनुष्य अजर और अमर की तरह विद्या और धन एकत्र करें।

५४. सर्वः स्वार्थं समीहते—सब अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते है।

५५. भिन्नरुचिर्हि लोकः—सबकी पसन्द भिन्न होती है।

५६. मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना, तुण्डे तुण्डे सरस्वती—प्रत्येक की विचार-धारा और विद्या-बुद्धि भिन्न होती है।

५७. समय एव करोति बलाबलम्—समय ही मनुष्य को बलवान् और निर्बल बनाता है।

५८. ब्राह्मणा मधुरप्रियाः—ब्राह्मण को मिष्टान्न अच्छा लगता है।

५९ अजीर्णे भोजनं विषम्—अपच में भोजन करना विषतुल्य है।

६०. न नक्तं दधि भुञ्जीत—रात में दही न खावे।

६१. शरीरं व्याधिमन्दिरम्—शरीर रोगों का घर है।

६२. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्—शरीर ही धर्म का प्रमुख साधन है।

६३. न च व्याधिसमो रिपुः—रोग सबसे बड़ा शत्रु है।

६४. प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति—उत्तम कोटि के मनुष्य कार्य को प्रारम्भ करके निष्फल नहीं छोड़ते हैं।

६५. सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता—महान् व्यक्ति सुख और दुःख में समान रहते हैं।

६६. राजा राष्ट्रकृतं पापम् - राजा राष्ट्र के पाप का भागी होता है।

६७ अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्—मनुष्य को अपने अच्छे और बुरे कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है।

६८. सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु—निरर्थक को छोड़कर केवल सार भाग ले लेना चाहिए।

६९. काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्—विद्वानों का समय काव्यशास्त्र से मनोरंजन में बीतता है।

७० यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः—जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का निवास होता है।

७१. पितॄणां शतं माता—माता, पिता से सौ गुना आदरणीय है।

७२. यद्भविष्यो विनश्यति—भाग्यवादी का नाश हो जाता है।

७३. मायाचारो मायया वर्तितव्यः, साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः—कपटी से कपट और सज्जन से सज्जनता बरते।

७४. विषस्य विषम् औषधम्—विष की चिकित्सा विष है।

७५. सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः—संपूर्ण का नाश हो रहा हो तो आधा छोड़ दे।

७६. कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न धार्मिकः—अविद्वान् और अधार्मिक पुत्र का जन्म लेना व्यर्थ है।

७७. पुत्रः शत्रुरपण्डितः—अविद्वान् पुत्र शत्रु तुल्य है।

७८ कालो हि दुरतिक्रमः—काल दुर्जेय है अथवा समय को कोई लाँघ नहीं सकता।

७९. न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति—अपने आपको खतरे में डाले बिना बड़ी उन्नति नहीं होती।

८०. क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे—महान् व्यक्तियों की सफलता उनके पुरुषार्थ पर होती है, साधनों पर नहीं।

८१. उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते, तत्र साहाय्यकृद् विभुः॥
उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्तिऔर पराक्रम, ये ६ गुण जहाँ होते हैं, वहाँ पर परमात्मा सहायता देता है।

८२. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः—प्रयत्न से ही कार्य सिद्ध होते हैं, मात्र सोचने से नहीं।

८३. अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्—अधजल गगरी छलकत जाए।

८४. **कस्यचित् किमपि नो हरणीयं, मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम्**—किसी की कोई वस्तु न चुरावे और कटु वचन न बोले।

८५. **नये च शौर्ये च वसन्ति सम्पदः**—नीतिज्ञता और शूरवीरता में संपत्ति का निवास है।

८६. **अविवेकः परमापदां पदम्**—अज्ञान बड़ी विपत्तियों का कारण है।

८७. **चिन्ता जरा मनुष्याणाम्**—चिन्ता से मनुष्य को बुढ़ापा आता है।

८८. **क्रोधो मूलमनर्थानाम्**—क्रोध अनर्थों का कारण है।

८९. **नास्ति क्रोधसमो वह्निः**—क्रोध से बढ़कर जलानेवाली आग नहीं है।

९०. **नहि कल्याणकृत् कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति**—शुभ कर्म करने वाला कभी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता।

९१. **स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्**—थोड़ा किया हुआ भी धर्म, बड़े संकटों से बचाता है।

९२. **अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः**—कड़वी किन्तु हितकर बात कहने और सुनने वाले दुर्लभ हैं।

९३. **इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं, न स्वप्नाय स्पृहयन्ति**—देवता पुरुषार्थी को चाहते हैं, आलसी को नहीं।

९४. **त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले**—संकट के समय भी धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए।

९५. **वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्**—अपने चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करे।

९६. **बालादपि सुभाषितम्**—बच्चे की भी ठीक बात माननी चाहिए।

९७. **नात्मानम् अवसादयेत्**—अपने अन्दर हीनता की भावना न लावे।

९८. **मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्**—महापुरुषों के मन, वचन और कर्म में एकरूपता होती है।

९९. भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः, भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः—हम कान से शुभ वचन सुनें और आंख से अच्छी वस्तुओं को ही देखें।

१००. शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकिर—सौ हाथ से कमाओ और हजार हाथ से दान करो।


संस्कृत भवन
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु नूतने वत्सरे शुभे।।